

॥ नवग्रह स्तोत्रम् ॥

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिरांखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकलिकारयामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥
नसनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषां मारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥

ज्योतिषीय विवरण

जन्म वार :	18 December 1973 (Tuesday)	सांपातिक काल :	07:14:11 hrs
जन्म वेळ :	01:45:00AM	सूर्योदय :	06:42:20AM
जन्म स्थळ :	Hyderabad , INDIA	सूर्यास्त :	05:42:47PM
रेखांश :	078:29:00E	अयनांश :	N.C.Lahiri (023:29:36)
अक्षांश :	017:23:00N	विक्रम संवत-	2030
समयक्षेत्र :	-05:30:00 hrs	शक संवत-	1895
वेळ संस्कार:	00:00:00 hrs	संवत्सर-	प्रमादी
जी.एम.टी. वेळ :	20:15:00 hrs	संवत्सर स्वामी:	इंद्राब्जि
स्थानिक वेळ संस्कार :	-00:16:04 hrs		
स्थानिक वेळ :	01:28:56 hrs		

अवकहडा चक्र

लब्ध :	कन्या
लब्धस्वामी :	बुध
चंद्रराशी :	कन्या
राशीस्वामी :	बुध
नक्षत्र :	हस्त
नक्षत्रस्वामी :	चंद्र
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	सुवर्ण
ऋतु :	हेमंत
मास :	पौष
पक्ष :	कृष्ण
तिथी :	नवमी
तिथी प्रकार :	रिक्ता
तिथी स्वामी :	रवि
करण :	गरज
करण प्रकार :	चर
करण स्वामी :	वासुदेव
गण :	देव
वर्ण :	वैश्य
योनी :	मृहस(स्त्री)
सूर्य सिद्धांत योग :	सौभाग्य
रज्जु :	कंट
वश्य :	द्विपाद
तत्त्व :	अब्जी
तत्त्वस्वामी :	मंगळ
विहग :	वायस
नाडी :	आद्य
नाडी पाद :	मध्य
वेध :	शततारका
नामाक्षर :	Shaa

घात चक्र

राशी :	मिथुन
मास :	भाद्र
तिथी :	5,10,15
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	श्रावण
प्रहर :	1
लब्ध :	मीन
सूर्य सिद्धांत योग :	सुकर्मा
करण :	कौलव
शासक ग्रह (कृष्णमूर्ती पद्धतीनुसार)	
वारेण :	मंगळ
लब्धेश :	बुध
लब्ध नक्षत्र स्वामी :	मंगळ
लब्ध उपनक्षत्र स्वामी :	शुक्र
चंद्र राशी स्वामी :	बुध
चंद्र नक्षत्र स्वामी :	चंद्र
चंद्र उपनक्षत्र स्वामी :	शुक्र
फॉरट्युना (कृ.प.) :	097:57:31
अयनांश (कृष्णमूर्ती) :	023:23:49

सायन ज्योतिषीय विवरण

सूर्य राशी :	धनु
देकानेट :	3
फेस :	VI
चंद्र राशी (सायन) :	तुळा
लब्ध (सायन) :	तुळा
सूर्याचा अवधीपती :	मंगळ
चंद्राचा अवधीपती :	शुक्र
अवधी बदल :	(मं., श.), (बु., शु.), (शु., बु.), (श., मं.)

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशी	रा.स्वामी	अंश	नक्षत्र चरण	न.स्वामी	कारक	विशेष	विशेष
लब्ध	कन्या	बुध	24:14:37	चित्रा-१	मंगल	---	---	---
रवि	धनु	गुरु	02:15:49	मूल-१	केतु	दारा	मित्रगृही	ब्रसित
चंद्र	कन्या	बुध	16:00:58	हस्त-२	चंद्र	भ्रातृ	स्वनक्षत्री	---
मंगल	मेष	मंगल	04:42:18	अश्विनी-२	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोण	---
बुध	वृश्चिक	मंगल	19:51:24	ज्येष्ठा-१	बुध	आत्म	स्वनक्षत्री	---
गुरु	मकर	शनि	17:56:39	श्रवण-३	चंद्र	अमात्य	सम्गृही	शुभ ग्रहा सोबत
शुक्र	मकर	शनि	13:00:16	श्रवण-१	चंद्र	मातृ	मित्रगृही	शुभ ग्रहा सोबत
शनि व	मिथुन	बुध	08:12:34	आर्द्रा-१	राहु	अपत्य	सम्गृही	ब्रसित
राहु व	धनु	गुरु	05:06:53	मूल-२	केतु	---	मित्रगृही	पाप ग्रहा सोबत
केतु व	मिथुन	बुध	05:06:53	मृग-४	मंगल	---	सम्गृही	पाप ग्रहा सोबत
इंद्र	तुला	शुक्र	03:20:59	चित्रा-४	मंगल	---	---	---
वरुण	वृश्चिक	मंगल	14:20:41	अनुराधा-४	शनि	---	---	शुभ ग्रहा सोबत
रुद्र	कन्या	बुध	13:11:14	हस्त-१	चंद्र	---	---	पाप ग्रहा सोबत

नवमांश कुंडली

लब्ध (जन्म) कुंडली

	मंग 04:42		शनि 08:12 केतु 05:06
गुरु 17:56 शुक्र 13:00			
राहु 05:06 सूर्य 02:15	बुध 19:51		चंद्र 16:00

	सूर्य शुक्र	चंद्र राहु	गुरु मंग
बुध शनि	केतु		

चंद्र कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र सूर्य राहु	बुध		चंद्र

ग्रहापासून ग्रह आणि ग्रहापासून लब्धाचे अंतर

	ल.	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	इंद्र	वरुण	रुद्र
ल.	---	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
रवि	292	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चंद्र	8	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	170	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	304	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरु	246	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	251	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	106	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	289	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	109	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
इंद्र	351	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
वरुण	310	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
रुद्र	11	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,359	युतीयोग	59,60,61,299,300,301	लाभयोग	89,90,91,269,270,271	केंद्रयोग
119,120,121,239,240,241	नवपंचमयोग	149,150,151,209,210,211	षडष्टकयोग	179,180,181	प्रतियोग

भाव स्फुट आणि कुंडली

भाव क्रमांक	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरंभ ---- अंत)			
I	कन्या	24:14:37	कन्या	09:08:19	तुळा	09:08:19
II	तुळा	24:02:01	तुळा	09:08:19	वृश्चिक	08:55:43
III	वृश्चिक	23:49:26	वृश्चिक	08:55:43	धनु	08:43:08
IV	धनु	23:36:50	धनु	08:43:08	मकर	08:43:08
V	मकर	23:49:26	मकर	08:43:08	कुंभ	08:55:43
VI	कुंभ	24:02:01	कुंभ	08:55:43	मीन	09:08:19
VII	मीन	24:14:37	मीन	09:08:19	मेष	09:08:19
VIII	मेष	24:02:01	मेष	09:08:19	वृषभ	08:55:43
IX	वृषभ	23:49:26	वृषभ	08:55:43	मिथुन	08:43:08
X	मिथुन	23:36:50	मिथुन	08:43:08	कर्क	08:43:08
XI	कर्क	23:49:26	कर्क	08:43:08	सिंह	08:55:43
XII	सिंह	24:02:01	सिंह	08:55:43	कन्या	09:08:19

लव्हा (जन्म) कुंडली

	मंग 04:42		शनि 08:12 केतु 05:06
गुरु 17:56 शुक्र 13:00			
राहु 05:06 सूर्य 02:15	बुध 19:51		चंद्र 16:00

भाव कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

भाव चलित कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
	सूर्य बुध	राहु	चंद्र

ग्रहापासून भावा (भाव मध्य) पर्यंतचे अंतर

	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	इंद्र	वरुण	रुद्र
Asc dt	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
H-II	38	322	161	26	84	79	224	41	221	339	20	319
H-III	8	292	131	356	54	49	194	11	191	310	351	289
Nadir	339	262	101	326	24	19	165	342	162	280	321	260
H-V	308	232	71	296	354	349	134	311	131	250	291	229
H-VI	278	202	41	266	324	319	104	281	101	219	260	199
Desc dt	248	172	10	236	294	289	74	251	71	189	230	169
H-VIII	218	142	341	206	264	259	44	221	41	159	200	139
H-IX	188	112	311	176	234	229	14	191	11	130	171	109
M.C.	159	82	281	146	204	199	345	162	342	100	141	80
H-XI	128	52	251	116	174	169	314	131	311	70	111	49
H-XII	98	22	221	86	144	139	284	101	281	39	80	19

0,1,359	युतीयोग	59,60,61,299,300,301	लाभयोग	89,90,91,269,270,271	केंद्रयोग
119,120,121,239,240,241	नवपंचमयोग	149,150,151,209,210,211	षडाष्टकयोग	179,180,181	प्रतियोग

षोडश वर्ग

लब्ध (जन्म) कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

होरा कुंडली

			शुक्र
			चंद्र मंग गुरु सूर्य बुध शनि

द्रेष्काण कुंडली

बुध	मंग	गुरु शुक्र	शनि केतु
चंद्र			
सूर्य राहु			

चतुर्थांश कुंडली

चंद्र	मंग शुक्र	बुध	केतु
			गुरु
सूर्य राहु			शनि

सप्तमांश कुंडली

	मंग		चंद्र
			शनि केतु
राहु			
सूर्य	गुरु	शुक्र	बुध

नवमांश कुंडली

	सूर्य शुक्र	चंद्र राहु	मंग गुरु
बुध शनि	केतु		

दशमांश कुंडली

		मंग	
गुरु			केतु
बुध शुक्र राहु			शनि
सूर्य		चंद्र	

द्वादशांश कुंडली

चंद्र		मंग	बुध शुक्र
राहु			
			केतु गुरु
सूर्य			शनि

षोडशांश कुंडली

	शनि		मंग बुध
राहु केतु सूर्य गुरु			
			चंद्र
		शुक्र	

- D1** मुख्य कुंडली, सर्व बाबीसाठी
D2 धन संपत्ती करिता
D3 सहोदरांचे जीवन आणि स्वास्थ्य
D4 भाग्य आणि राहते घर
D7 संतति आणि नातवंडे
D9 जीवनसाथी आणि त्यांचे स्वास्थ्य
D10 कार्यक्षेत्र आणि कोणत्याही कामात यश
D12 आईवडिलांचे जीवन आणि स्वास्थ्य
D16 वाहनविषयक गोष्टी
D20 आध्यात्मिक कल
D24 शिक्षण, ज्ञान, आकलनता
D27 शक्ती आणि दुर्बलता
D30 दारिद्र्य, अडथळे आणि दुर्दशा
D40 शुभाशुभ घडामोडी
D45 सर्व बाबीसाठी
D60 सर्व बाबीसाठी

विशांश कुंडली

गुरु			चंद्र
			मंग
बुध शनि			
शुक्र	राहु केतु		सूर्य

चतुर्विंशांश कुंडली

		शुक्र	
शनि			चंद्र
राहु केतु	मंग	बुध	सूर्य गुरु

सप्तविंशांश कुंडली

		शनि	सूर्य बुध शुक्र
केतु			
			राहु मंग
	गुरु		चंद्र

त्रिंशांश कुंडली

चंद्र शुक्र गुरु	सूर्य मंग		
बुध शनि केतु राहु			

अष्टांश कुंडली

शुक्र			
शनि			सूर्य चंद्र
बुध		राहु मंग	केतु गुरु

अक्षवेदांश कुंडली

सूर्य			गुरु
			राहु केतु
बुध			
चंद्र शनि	मंग शुक्र		

षष्ठांश कुंडली

शुक्र	सूर्य केतु	चंद्र	
बुध			
मंग			
गुरु		राहु शनि	

जैमिनी लग्न कुण्डली

लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

कारकांश कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

आरुढ लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

होरा लब्ध (वर्द्धीकारक) कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

आयूर लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

दिव्य लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

नवमांश कुंडली

	सूर्य शुक्र	चंद्र राहु	मंग	गुरु
बुध शनि	केतु			

द्रेष्काण (प्रत्रा) कुंडली

	सूर्य राहु मंग		
बुध			
			गुरु शुक्र चंद्र
		केतु शनि	

नवमांश कुंडली (कृष्ण मिश्रा)

	सूर्य	मंग	राहु
बुध			
			गुरु
शनि	केतु	शुक्र	चंद्र

द्रेष्काण (सोमनाथ) कुंडली

	सूर्य राहु मंग	बुध	
गुरु शुक्र			शनि केतु
			चंद्र

उप-पद लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

होरा लब्ध (सवाया) कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

इंद्र लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

पका लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

तारा लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

त्रिप्रवण लब्ध कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरु शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

ग्रहांची अवस्था

ग्रह	स्वप्नादी ३	बालादी ५	लज्जितादी ९	दिमादी ९	दिमादी १०
रवि	स्वप्न	बाल	क्षुधित	प्रमुदित	मुदित
चंद्र	सुप्त	युवा	क्षुधित	दुःखित	-----
मंगळ	जागृत	बाल	गर्वित	स्वस्थ	स्वस्थ
बुध	सुप्त	कुमार	क्षुधित	दुःखित	दीन
गुरु	जागृत	युवा	गर्वित	दीन	दीन
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	शांत	-----
शनि	स्वप्न	कुमार	क्षुधित	दीन	वक्र
राहु	स्वप्न	मृत	क्षुधित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	शांत

सन्नडि

कर्म : श्रवण	संघातिक : अश्विनी
जन्म : हस्त	मानस : मघा
समुद्य : कृत्तिका	विनाश : पुष्य

स्थुन	कंटक स्थुन	मूळ	जाति :	मघा	देश :	पूर्व फाल्गुनी
कुज स्थुन :	मघा	रक्त स्थुन :	पूर्वाषाढा	प्रतिष्ठा :	उत्तर फाल्गुनी	त्रि-नाडी

नव-तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यर	साधक	नैधन	मित्र	अधिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूळ	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शततारक	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्व फाल्गुनी	उत्तर फाल्गुनी

अर्कचतुष्टय आणि नवशुभ अर्क

जन्मवा : हस्त	कर्मवा : अभिजीत	आधान : कृत्तिका	नैधव : पुनर्वसु
---------------	-----------------	-----------------	-----------------

आर्कचतुष्टयाची गणना चंद्रनक्षत्रापासून केली जाते (२८ नक्षत्राधारे).

	दग्ध : मूळ	क्षय : धनिष्ठा
शूल : उत्तराभाद्रपदा	सन्निपात : मृग	ध्वज : आश्लेषा
उल्का : उत्तर फाल्गुनी	भुक्प : हस्त	वज्रक : चित्रा
		निर्घात : स्वाती

नवशुभ अर्काची गणना चंद्रनक्षत्रापासून केली जाते (२७ नक्षत्राधारे).

मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	रवि	----	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☾	चंद्र	मित्र	----	सम	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	----	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
♃	बुध	मित्र	शत्रु	सम	----	सम	मित्र	सम	सम
♅	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	----	शत्रु	सम	मित्र
♁	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	----	मित्र	मित्र
♄	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	----	मित्र
♆	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	----	सम
♇	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम

तात्कालिक मैत्री चक्र

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	रवि	----	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
☾	चंद्र	मित्र	----	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	----	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	----	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♅	गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	----	शत्रु	शत्रु	मित्र
♁	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	----	शत्रु	मित्र
♄	शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	----	शत्रु	शत्रु
♆	राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	----	शत्रु
♇	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	----

पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	रवि	----	अधिमित्र	सम	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☾	चंद्र	अधिमित्र	----	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
♂	मंगल	सम	सम	----	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु
♃	बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	----	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र
♅	गुरु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	----	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र
♁	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	----	सम	अधिमित्र
♄	शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	----	सम
♆	राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	----
♇	केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110

1/13/25/37/49/61/73/85/97/109

12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

	गुरु		रवि		बुध
	शुक्र		राहु		
			चंद्र		
	बुध	7	6	5	
	8		लब्ध	4	
		बुध	चंद्र		
	रवि	9		केतु	शनि
	राहु	राहु रवि		3	चंद्र
				शनि	केतु
	गुरु	शुक्र गुरु	12		
मंगळ	शुक्र	10		2	
		11		मंगळ	1
				मंगळ	
			शनि		
			केतु		

6/18/30/42/54/66/78/90/102/114

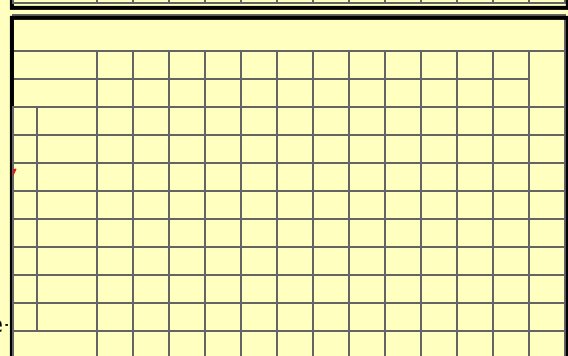
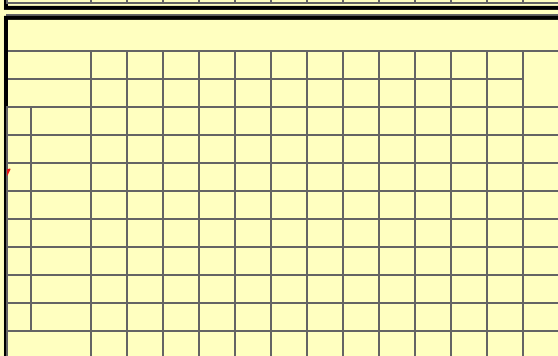
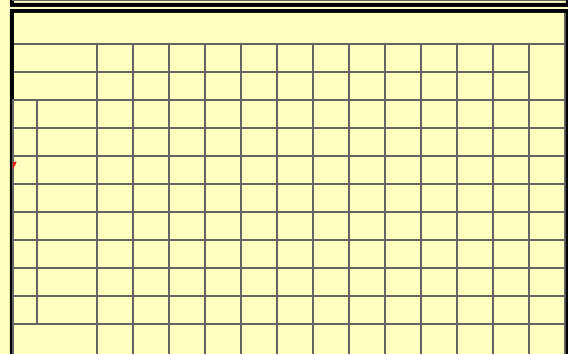
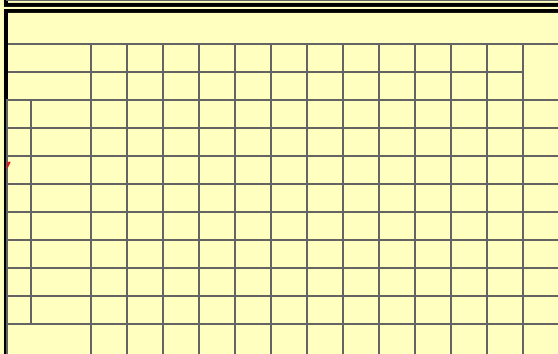
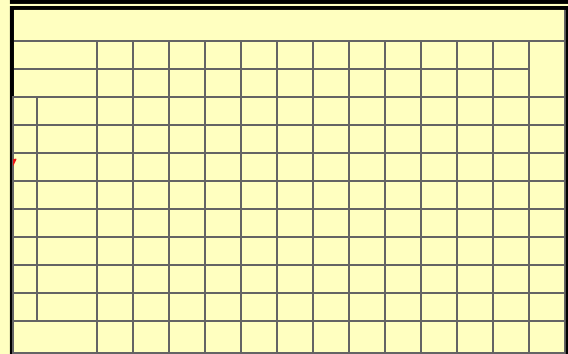
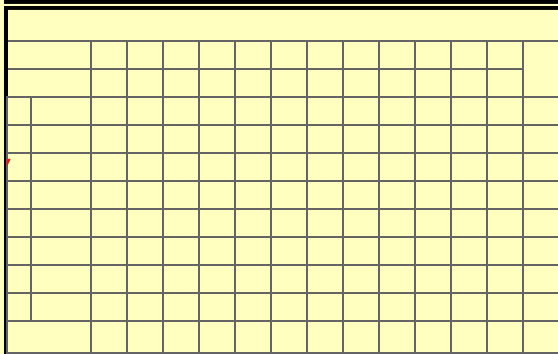
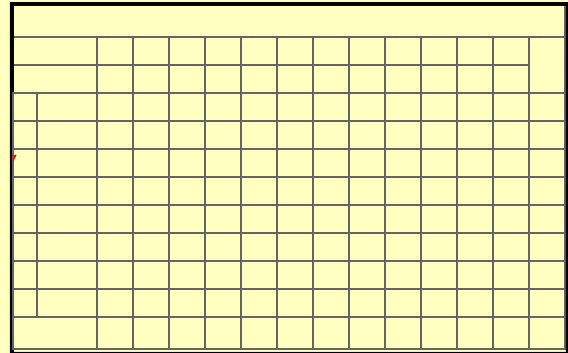
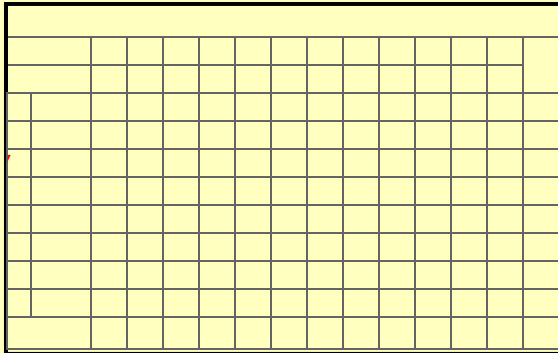
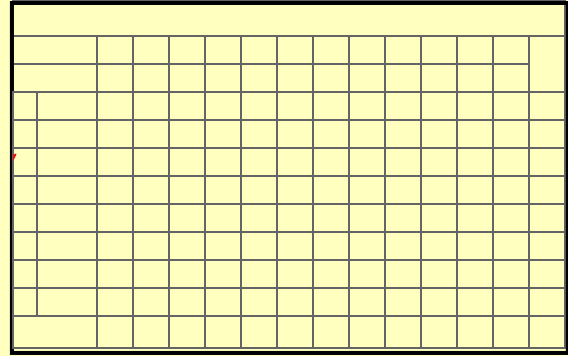
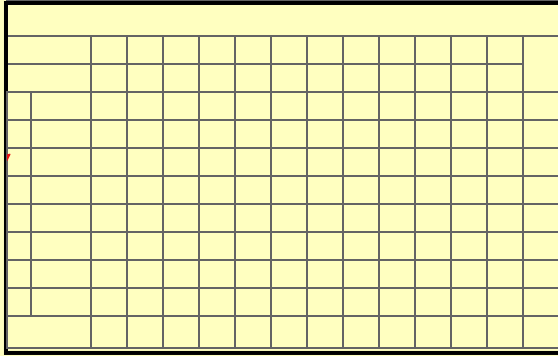
7/19/31/43/55/67/79/91/103/115

8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ आणि अशुभ ग'हांचा प्रभाव दर्शविते. हे (१) लब्ध, (२) चंद्र आणि (३) सूर्य यांच्या स्थितीचा प्रभाव दर्शविते. या आधारे जात वय तसेच हा प्रभाव जातकावर केव्हा पडणार हे देखील दर्शविते.

जर फक्त शुभ ग'हांचा (गुरु, शुक्र, बुध, चंद्र) प्रभाव असेल तर संपूर्ण वर्ष आनंदमय जाईल आणि मंगल कार्य होतील. जर फक्त अशुभ ग'हांचा असेल तर हे वर्ष अमंगल असेल.

भिन्नाष्टक वर्गकुंडली



Page-

सर्वाष्टक वर्गाचा निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशी	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
गुरू	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
मंगळ	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
रवि	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
चंद्र	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337
लब्ध	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
राहु	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

तत्त्व चक्र

स.व. बिंदू	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नी त्रिकोण	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोण	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोण	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोण	84.25	91	उत्तर

(विशेष - सर्वाधिक बिंदू सर्वाधिक शुभ दिशेचा संकेत देतो (पू, द, प, आणि उ). जर दोन्ही भागांच्या बिंदूंची संख्या एकसारखी किंवा जवळपास असेल तर, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प आणि द प) असेल.)

भुवन चक्र

स.व. बिंदू	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केंद्र भाव राशी	112.33	108	मेहनत आणि एकाग्रता
पणफर भाव राशी	112.33	118	अर्थिक स्थिती
अपोक्लिम भाव राशी	112.33	111	वित्त हानी

दिशा चक्र

भग	स.व. बिंदू	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बंधक	भाग्य त्रिकोण	84.25	79	भावंडा कडून मदत
सेवक	कर्म त्रिकोण	84.25	91	नोकरीतून धनार्जन
पोषक	लाभ त्रिकोण	84.25	91	लाभ आणि धन
घातक	व्यय त्रिकोण	84.25	76	दुर्भाग्य व हानी

विंशोत्तरी दशा

जन्मवेळी विंशोत्तरी भोग्य दशा (चंद्र : ५ व.५ म.२६ दि.)

क.स.	ग्रह दशा	अवधी	पासून -----पर्यंत
१	☾ चंद्र दशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
२	♂ मंगळ दशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
३	♃ राहु दशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
४	♁ गुरु दशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
५	♄ शनि दशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
६	♃ बुध दशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
७	♆ केतु दशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
८	♃ शुक्र दशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
९	♃ रवि दशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अंतरदशा

चंद्र दशा		मंगळ दशा		राहु दशा	
अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत
चंद्र		मंगळ	14:06:1979 - 10:11:1979	राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
मंगळ		राहु	10:11:1979 - 28:11:1980	गुरु	24:02:1989 - 20:07:1991
राहु		गुरु	28:11:1980 - 04:11:1981	शनि	20:07:1991 - 26:05:1994
गुरु		शनि	04:11:1981 - 13:12:1982	बुध	26:05:1994 - 13:12:1996
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975	बुध	13:12:1982 - 10:12:1983	केतु	13:12:1996 - 31:12:1997
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976	केतु	10:12:1983 - 08:05:1984	शुक्र	31:12:1997 - 31:12:2000
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977	शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985	रवि	31:12:2000 - 25:11:2001
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978	रवि	08:07:1985 - 13:11:1985	चंद्र	25:11:2001 - 26:05:2003
रवि	13:12:1978 - 14:06:1979	चंद्र	13:11:1985 - 14:06:1986	मंगळ	26:05:2003 - 13:06:2004
गुरु दशा		शनि दशा		बुध दशा	
अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत
गुरु	13:06:2004 - 01:08:2006	शनि	13:06:2020 - 17:06:2023	बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009	बुध	17:06:2023 - 24:02:2026	केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011	केतु	24:02:2026 - 05:04:2027	शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012	शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030	रवि	07:09:2045 - 14:07:2046
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014	रवि	05:06:2030 - 17:05:2031	चंद्र	14:07:2046 - 13:12:2047
रवि	25:12:2014 - 13:10:2015	चंद्र	17:05:2031 - 16:12:2032	मंगळ	13:12:2047 - 10:12:2048
चंद्र	13:10:2015 - 12:02:2017	मंगळ	16:12:2032 - 25:01:2034	राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
मंगळ	12:02:2017 - 19:01:2018	राहु	25:01:2034 - 01:12:2036	गुरु	29:06:2051 - 04:10:2053
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020	गुरु	01:12:2036 - 14:06:2039	शनि	04:10:2053 - 13:06:2056
केतु दशा		शुक्र दशा		रवि दशा	
अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत	अंतरदशा	पासून----पर्यंत
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056	शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066	रवि	14:06:2083 - 01:10:2083
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058	रवि	13:10:2066 - 13:10:2067	चंद्र	01:10:2083 - 01:04:2084
रवि	10:01:2058 - 17:05:2058	चंद्र	13:10:2067 - 14:06:2069	मंगळ	01:04:2084 - 07:08:2084
चंद्र	17:05:2058 - 16:12:2058	मंगळ	14:06:2069 - 14:08:2070	राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
मंगळ	16:12:2058 - 14:05:2059	राहु	14:08:2070 - 14:08:2073	गुरु	02:07:2085 - 20:04:2086
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060	गुरु	14:08:2073 - 13:04:2076	शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
गुरु	01:06:2060 - 08:05:2061	शनि	13:04:2076 - 14:06:2079	बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062	बुध	14:06:2079 - 14:04:2082	केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063	केतु	14:04:2082 - 14:06:2083	शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

विंशोत्तरी दशा

चंद्र दशा (१८:१२:१९७३ -- १४:०६:१९७९)

प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---

		शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
				बुध	14:04:1975
		बुध	18:12:1973	केतु	26:06:1975
		केतु	05:03:1974	शुक्र	26:07:1975
		शुक्र	08:04:1974	रवि	20:10:1975
		रवि	13:07:1974	चंद्र	15:11:1975
		चंद्र	11:08:1974	मंगळ	28:12:1975
		मंगळ	28:09:1974	राहु	28:01:1976
		राहु	01:11:1974	गुरू	14:04:1976
		गुरू	27:01:1975	शनि	23:06:1976

केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
केतु	13:09:1976	शुक्र	14:04:1977	रवि	13:12:1978
शुक्र	25:09:1976	रवि	24:07:1977	चंद्र	22:12:1978
रवि	31:10:1976	चंद्र	24:08:1977	मंगळ	07:01:1979
चंद्र	10:11:1976	मंगळ	13:10:1977	राहु	17:01:1979
मंगळ	28:11:1976	राहु	18:11:1977	गुरू	14:02:1979
राहु	11:12:1976	गुरू	17:02:1978	शनि	10:03:1979
गुरू	12:01:1977	शनि	09:05:1978	बुध	08:04:1979
शनि	09:02:1977	बुध	14:08:1978	केतु	04:05:1979
बुध	15:03:1977	केतु	08:11:1978	शुक्र	14:05:1979

विंशोत्तरी दशा

मंगल दशा (१४:०६:१९७९ -- १४:०६:१९८६)

मंगल अंतरदशा		राहु अंतरदशा		गुरु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
मंगल	14:06:1979	राहु	10:11:1979	गुरु	28:11:1980
राहु	22:06:1979	गुरु	06:01:1980	शनि	12:01:1981
गुरु	15:07:1979	शनि	27:02:1980	बुध	07:03:1981
शनि	04:08:1979	बुध	27:04:1980	केतु	25:04:1981
बुध	27:08:1979	केतु	21:06:1980	शुक्र	15:05:1981
केतु	17:09:1979	शुक्र	13:07:1980	रवि	10:07:1981
शुक्र	26:09:1979	रवि	15:09:1980	चंद्र	27:07:1981
रवि	21:10:1979	चंद्र	04:10:1980	मंगल	25:08:1981
चंद्र	28:10:1979	मंगल	06:11:1980	राहु	14:09:1981

शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शनि	04:11:1981	बुध	13:12:1982	केतु	10:12:1983
बुध	07:01:1982	केतु	03:02:1983	शुक्र	19:12:1983
केतु	05:03:1982	शुक्र	24:02:1983	रवि	13:01:1984
शुक्र	29:03:1982	रवि	25:04:1983	चंद्र	20:01:1984
रवि	04:06:1982	चंद्र	13:05:1983	मंगल	02:02:1984
चंद्र	24:06:1982	मंगल	12:06:1983	राहु	10:02:1984
मंगल	28:07:1982	राहु	03:07:1983	गुरु	04:03:1984
राहु	21:08:1982	गुरु	27:08:1983	शनि	24:03:1984
गुरु	20:10:1982	शनि	14:10:1983	बुध	16:04:1984

शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शुक्र	08:05:1984	रवि	08:07:1985	चंद्र	13:11:1985
रवि	18:07:1984	चंद्र	14:07:1985	मंगल	01:12:1985
चंद्र	08:08:1984	मंगल	25:07:1985	राहु	13:12:1985
मंगल	13:09:1984	राहु	02:08:1985	गुरु	14:01:1986
राहु	08:10:1984	गुरु	21:08:1985	शनि	11:02:1986
गुरु	11:12:1984	शनि	07:09:1985	बुध	17:03:1986
शनि	05:02:1985	बुध	27:09:1985	केतु	16:04:1986
बुध	14:04:1985	केतु	15:10:1985	शुक्र	29:04:1986
केतु	13:06:1985	शुक्र	23:10:1985	रवि	03:06:1986

विंशोत्तरी दशा

राहु दशा (१४:०६:१९८६ -- १३:०६:२००४)

राहु अंतरदशा		गुरु अंतरदशा		शनि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
राहु	14:06:1986	गुरु	24:02:1989	शनि	20:07:1991
गुरु	09:11:1986	शनि	21:06:1989	बुध	01:01:1992
शनि	20:03:1987	बुध	07:11:1989	केतु	28:05:1992
बुध	23:08:1987	केतु	11:03:1990	शुक्र	28:07:1992
केतु	10:01:1988	शुक्र	01:05:1990	रवि	17:01:1993
शुक्र	07:03:1988	रवि	24:09:1990	चंद्र	10:03:1993
रवि	19:08:1988	चंद्र	07:11:1990	मंगळ	05:06:1993
चंद्र	07:10:1988	मंगळ	19:01:1991	राहु	05:08:1993
मंगळ	29:12:1988	राहु	11:03:1991	गुरु	08:01:1994

बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
बुध	26:05:1994	केतु	13:12:1996	शुक्र	31:12:1997
केतु	05:10:1994	शुक्र	05:01:1997	रवि	02:07:1998
शुक्र	29:11:1994	रवि	09:03:1997	चंद्र	26:08:1998
रवि	03:05:1995	चंद्र	29:03:1997	मंगळ	25:11:1998
चंद्र	18:06:1995	मंगळ	30:04:1997	राहु	28:01:1999
मंगळ	04:09:1995	राहु	22:05:1997	गुरु	11:07:1999
राहु	28:10:1995	गुरु	18:07:1997	शनि	04:12:1999
गुरु	16:03:1996	शनि	08:09:1997	बुध	26:05:2000
शनि	18:07:1996	बुध	07:11:1997	केतु	28:10:2000

रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा		मंगळ अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
रवि	31:12:2000	चंद्र	25:11:2001	मंगळ	26:05:2003
चंद्र	17:01:2001	मंगळ	10:01:2002	राहु	18:06:2003
मंगळ	13:02:2001	राहु	11:02:2002	गुरु	14:08:2003
राहु	04:03:2001	गुरु	04:05:2002	शनि	04:10:2003
गुरु	23:04:2001	शनि	16:07:2002	बुध	04:12:2003
शनि	06:06:2001	बुध	10:10:2002	केतु	27:01:2004
बुध	28:07:2001	केतु	27:12:2002	शुक्र	19:02:2004
केतु	12:09:2001	शुक्र	28:01:2003	रवि	23:04:2004
शुक्र	01:10:2001	रवि	29:04:2003	चंद्र	12:05:2004

विंशोत्तरी दशा

गुरु दशा (१३:०६:२००४ -- १३:०६:२०२०)

गुरु अंतरदशा		शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
गुरु	13:06:2004	शनि	01:08:2006	बुध	12:02:2009
शनि	25:09:2004	बुध	26:12:2006	केतु	09:06:2009
बुध	27:01:2005	केतु	06:05:2007	शुक्र	28:07:2009
केतु	17:05:2005	शुक्र	29:06:2007	रवि	12:12:2009
शुक्र	02:07:2005	रवि	30:11:2007	चंद्र	23:01:2010
रवि	08:11:2005	चंद्र	15:01:2008	मंगळ	02:04:2010
चंद्र	17:12:2005	मंगळ	01:04:2008	राहु	20:05:2010
मंगळ	20:02:2006	राहु	25:05:2008	गुरु	21:09:2010
राहु	07:04:2006	गुरु	12:10:2008	शनि	09:01:2011

केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
केतु	20:05:2011	शुक्र	25:04:2012	रवि	25:12:2014
शुक्र	09:06:2011	रवि	05:10:2012	चंद्र	09:01:2015
रवि	05:08:2011	चंद्र	23:11:2012	मंगळ	02:02:2015
चंद्र	22:08:2011	मंगळ	12:02:2013	राहु	19:02:2015
मंगळ	19:09:2011	राहु	10:04:2013	गुरु	04:04:2015
राहु	09:10:2011	गुरु	03:09:2013	शनि	13:05:2015
गुरु	29:11:2011	शनि	11:01:2014	बुध	28:06:2015
शनि	14:01:2012	बुध	14:06:2014	केतु	09:08:2015
बुध	08:03:2012	केतु	30:10:2014	शुक्र	26:08:2015

चंद्र अंतरदशा		मंगळ अंतरदशा		राहु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
चंद्र	13:10:2015	मंगळ	12:02:2017	राहु	19:01:2018
मंगळ	23:11:2015	राहु	04:03:2017	गुरु	30:05:2018
राहु	21:12:2015	गुरु	24:04:2017	शनि	24:09:2018
गुरु	04:03:2016	शनि	08:06:2017	बुध	10:02:2019
शनि	08:05:2016	बुध	01:08:2017	केतु	14:06:2019
बुध	24:07:2016	केतु	19:09:2017	शुक्र	04:08:2019
केतु	01:10:2016	शुक्र	09:10:2017	रवि	28:12:2019
शुक्र	29:10:2016	रवि	04:12:2017	चंद्र	10:02:2020
रवि	19:01:2017	चंद्र	21:12:2017	मंगळ	23:04:2020

विंशोत्तरी दशा

शनि दशा (१३:०६:२०२० -- १४:०६:२०३९)

शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शनि	13:06:2020	बुध	17:06:2023	केतु	24:02:2026
बुध	05:12:2020	केतु	03:11:2023	शुक्र	20:03:2026
केतु	09:05:2021	शुक्र	30:12:2023	रवि	26:05:2026
शुक्र	12:07:2021	रवि	11:06:2024	चंद्र	15:06:2026
रवि	11:01:2022	चंद्र	31:07:2024	मंगळ	19:07:2026
चंद्र	07:03:2022	मंगळ	21:10:2024	राहु	12:08:2026
मंगळ	07:06:2022	राहु	17:12:2024	गुरू	11:10:2026
राहु	10:08:2022	गुरू	14:05:2025	शनि	04:12:2026
गुरू	21:01:2023	शनि	22:09:2025	बुध	06:02:2027

शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शुक्र	05:04:2027	रवि	05:06:2030	चंद्र	17:05:2031
रवि	14:10:2027	चंद्र	22:06:2030	मंगळ	05:07:2031
चंद्र	11:12:2027	मंगळ	21:07:2030	राहु	07:08:2031
मंगळ	17:03:2028	राहु	10:08:2030	गुरू	02:11:2031
राहु	23:05:2028	गुरू	01:10:2030	शनि	18:01:2032
गुरू	13:11:2028	शनि	16:11:2030	बुध	19:04:2032
शनि	16:04:2029	बुध	10:01:2031	केतु	10:07:2032
बुध	16:10:2029	केतु	28:02:2031	शुक्र	13:08:2032
केतु	29:03:2030	शुक्र	21:03:2031	रवि	17:11:2032

मंगळ अंतरदशा		राहु अंतरदशा		गुरू अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
मंगळ	16:12:2032	राहु	25:01:2034	गुरू	01:12:2036
राहु	09:01:2033	गुरू	30:06:2034	शनि	03:04:2037
गुरू	11:03:2033	शनि	16:11:2034	बुध	28:08:2037
शनि	03:05:2033	बुध	29:04:2035	केतु	06:01:2038
बुध	07:07:2033	केतु	24:09:2035	शुक्र	01:03:2038
केतु	02:09:2033	शुक्र	23:11:2035	रवि	02:08:2038
शुक्र	25:09:2033	रवि	15:05:2036	चंद्र	17:09:2038
रवि	02:12:2033	चंद्र	06:07:2036	मंगळ	03:12:2038
चंद्र	22:12:2033	मंगळ	01:10:2036	राहु	26:01:2039

विंशोत्तरी दशा

बुध दशा (१४:०६:२०३९ -- १३:०६:२०५६)

बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
बुध	14:06:2039	केतु	10:11:2041	शुक्र	07:11:2042
केतु	16:10:2039	शुक्र	01:12:2041	रवि	28:04:2043
शुक्र	07:12:2039	रवि	30:01:2042	चंद्र	19:06:2043
रवि	01:05:2040	चंद्र	17:02:2042	मंगळ	13:09:2043
चंद्र	14:06:2040	मंगळ	19:03:2042	राहु	12:11:2043
मंगळ	27:08:2040	राहु	10:04:2042	गुरू	16:04:2044
राहु	17:10:2040	गुरू	03:06:2042	शनि	01:09:2044
गुरू	26:02:2041	शनि	21:07:2042	बुध	12:02:2045
शनि	24:06:2041	बुध	16:09:2042	केतु	09:07:2045

रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा		मंगळ अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
रवि	07:09:2045	चंद्र	14:07:2046	मंगळ	13:12:2047
चंद्र	22:09:2045	मंगळ	26:08:2046	राहु	03:01:2048
मंगळ	18:10:2045	राहु	25:09:2046	गुरू	27:02:2048
राहु	05:11:2045	गुरू	12:12:2046	शनि	15:04:2048
गुरू	22:12:2045	शनि	19:02:2047	बुध	12:06:2048
शनि	01:02:2046	बुध	12:05:2047	केतु	02:08:2048
बुध	22:03:2046	केतु	24:07:2047	शुक्र	23:08:2048
केतु	05:05:2046	शुक्र	23:08:2047	रवि	23:10:2048
शुक्र	23:05:2046	रवि	17:11:2047	चंद्र	10:11:2048

राहु अंतरदशा		गुरू अंतरदशा		शनि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
राहु	10:12:2048	गुरू	29:06:2051	शनि	04:10:2053
गुरू	29:04:2049	शनि	17:10:2051	बुध	09:03:2054
शनि	31:08:2049	बुध	25:02:2052	केतु	26:07:2054
बुध	25:01:2050	केतु	22:06:2052	शुक्र	21:09:2054
केतु	06:06:2050	शुक्र	09:08:2052	रवि	04:03:2055
शुक्र	30:07:2050	रवि	26:12:2052	चंद्र	22:04:2055
रवि	02:01:2051	चंद्र	05:02:2053	मंगळ	13:07:2055
चंद्र	17:02:2051	मंगळ	15:04:2053	राहु	08:09:2055
मंगळ	06:05:2051	राहु	02:06:2053	गुरू	03:02:2056

विंशोत्तरी दशा

केतु दशा (१३:०६:२०५६ -- १४:०६:२०६३)

केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
केतु	13:06:2056	शुक्र	10:11:2056	रवि	10:01:2058
शुक्र	22:06:2056	रवि	20:01:2057	चंद्र	16:01:2058
रवि	17:07:2056	चंद्र	10:02:2057	मंगळ	27:01:2058
चंद्र	24:07:2056	मंगळ	18:03:2057	राहु	03:02:2058
मंगळ	06:08:2056	राहु	11:04:2057	गुरू	22:02:2058
राहु	14:08:2056	गुरू	14:06:2057	शनि	11:03:2058
गुरू	06:09:2056	शनि	10:08:2057	बुध	01:04:2058
शनि	26:09:2056	बुध	16:10:2057	केतु	19:04:2058
बुध	19:10:2056	केतु	16:12:2057	शुक्र	26:04:2058

चंद्र अंतरदशा		मंगळ अंतरदशा		राहु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
चंद्र	17:05:2058	मंगळ	16:12:2058	राहु	14:05:2059
मंगळ	04:06:2058	राहु	25:12:2058	गुरू	11:07:2059
राहु	17:06:2058	गुरू	16:01:2059	शनि	31:08:2059
गुरू	18:07:2058	शनि	05:02:2059	बुध	31:10:2059
शनि	16:08:2058	बुध	01:03:2059	केतु	24:12:2059
बुध	19:09:2058	केतु	22:03:2059	शुक्र	15:01:2060
केतु	19:10:2058	शुक्र	31:03:2059	रवि	19:03:2060
शुक्र	31:10:2058	रवि	24:04:2059	चंद्र	08:04:2060
रवि	06:12:2058	चंद्र	02:05:2059	मंगळ	10:05:2060

गुरू अंतरदशा		शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
गुरू	01:06:2060	शनि	08:05:2061	बुध	17:06:2062
शनि	17:07:2060	बुध	11:07:2061	केतु	07:08:2062
बुध	09:09:2060	केतु	07:09:2061	शुक्र	28:08:2062
केतु	27:10:2060	शुक्र	30:09:2061	रवि	27:10:2062
शुक्र	16:11:2060	रवि	07:12:2061	चंद्र	15:11:2062
रवि	12:01:2061	चंद्र	27:12:2061	मंगळ	15:12:2062
चंद्र	29:01:2061	मंगळ	30:01:2062	राहु	05:01:2063
मंगळ	26:02:2061	राहु	22:02:2062	गुरू	28:02:2063
राहु	18:03:2061	गुरू	24:04:2062	शनि	17:04:2063

विंशोत्तरी दशा

शुक्र दशा (१४:०६:२०६३ -- १४:०६:२०८३)

शुक्र अंतरदशा		रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शुक्र	14:06:2063	रवि	13:10:2066	चंद्र	13:10:2067
रवि	03:01:2064	चंद्र	01:11:2066	मंगळ	03:12:2067
चंद्र	04:03:2064	मंगळ	01:12:2066	राहु	08:01:2068
मंगळ	13:06:2064	राहु	22:12:2066	गुरू	08:04:2068
राहु	23:08:2064	गुरू	15:02:2067	शनि	28:06:2068
गुरू	22:02:2065	शनि	05:04:2067	बुध	03:10:2068
शनि	03:08:2065	बुध	02:06:2067	केतु	28:12:2068
बुध	12:02:2066	केतु	23:07:2067	शुक्र	02:02:2069
केतु	03:08:2066	शुक्र	14:08:2067	रवि	14:05:2069

मंगळ अंतरदशा		राहु अंतरदशा		गुरू अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
मंगळ	14:06:2069	राहु	14:08:2070	गुरू	14:08:2073
राहु	09:07:2069	गुरू	25:01:2071	शनि	21:12:2073
गुरू	10:09:2069	शनि	20:06:2071	बुध	24:05:2074
शनि	06:11:2069	बुध	10:12:2071	केतु	09:10:2074
बुध	13:01:2070	केतु	14:05:2072	शुक्र	05:12:2074
केतु	14:03:2070	शुक्र	17:07:2072	रवि	16:05:2075
शुक्र	08:04:2070	रवि	16:01:2073	चंद्र	04:07:2075
रवि	18:06:2070	चंद्र	11:03:2073	मंगळ	23:09:2075
चंद्र	09:07:2070	मंगळ	11:06:2073	राहु	19:11:2075

शनि अंतरदशा		बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
शनि	13:04:2076	बुध	14:06:2079	केतु	14:04:2082
बुध	14:10:2076	केतु	07:11:2079	शुक्र	09:05:2082
केतु	27:03:2077	शुक्र	07:01:2080	रवि	19:07:2082
शुक्र	02:06:2077	रवि	27:06:2080	चंद्र	09:08:2082
रवि	12:12:2077	चंद्र	18:08:2080	मंगळ	13:09:2082
चंद्र	08:02:2078	मंगळ	13:11:2080	राहु	08:10:2082
मंगळ	15:05:2078	राहु	12:01:2081	गुरू	11:12:2082
राहु	21:07:2078	गुरू	16:06:2081	शनि	06:02:2083
गुरू	11:01:2079	शनि	01:11:2081	बुध	14:04:2083

विंशोत्तरी दशा

रवि दशा (१४:०६:२०८३ -- १४:०६:२०८९)

रवि अंतरदशा		चंद्र अंतरदशा		मंगल अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
रवि	14:06:2083	चंद्र	01:10:2083	मंगल	01:04:2084
चंद्र	19:06:2083	मंगल	16:10:2083	राहु	08:04:2084
मंगल	28:06:2083	राहु	27:10:2083	गुरू	28:04:2084
राहु	05:07:2083	गुरू	23:11:2083	शनि	15:05:2084
गुरू	21:07:2083	शनि	18:12:2083	बुध	04:06:2084
शनि	05:08:2083	बुध	16:01:2084	केतु	22:06:2084
बुध	22:08:2083	केतु	11:02:2084	शुक्र	30:06:2084
केतु	07:09:2083	शुक्र	21:02:2084	रवि	21:07:2084
शुक्र	13:09:2083	रवि	23:03:2084	चंद्र	27:07:2084

राहु अंतरदशा		गुरू अंतरदशा		शनि अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
राहु	07:08:2084	गुरू	02:07:2085	शनि	20:04:2086
गुरू	25:09:2084	शनि	10:08:2085	बुध	14:06:2086
शनि	08:11:2084	बुध	25:09:2085	केतु	02:08:2086
बुध	31:12:2084	केतु	06:11:2085	शुक्र	22:08:2086
केतु	15:02:2085	शुक्र	23:11:2085	रवि	19:10:2086
शुक्र	06:03:2085	रवि	10:01:2086	चंद्र	05:11:2086
रवि	30:04:2085	चंद्र	25:01:2086	मंगल	04:12:2086
चंद्र	16:05:2085	मंगल	18:02:2086	राहु	24:12:2086
मंगल	13:06:2085	राहु	07:03:2086	गुरू	15:02:2087

बुध अंतरदशा		केतु अंतरदशा		शुक्र अंतरदशा	
प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---	प्रत्यंतर	पासून ---
बुध	02:04:2087	केतु	06:02:2088	शुक्र	13:06:2088
केतु	16:05:2087	शुक्र	14:02:2088	रवि	13:08:2088
शुक्र	03:06:2087	रवि	06:03:2088	चंद्र	31:08:2088
रवि	24:07:2087	चंद्र	12:03:2088	मंगल	01:10:2088
चंद्र	09:08:2087	मंगल	23:03:2088	राहु	22:10:2088
मंगल	04:09:2087	राहु	30:03:2088	गुरू	16:12:2088
राहु	22:09:2087	गुरू	19:04:2088	शनि	03:02:2089
गुरू	07:11:2087	शनि	06:05:2088	बुध	02:04:2089
शनि	19:12:2087	बुध	26:05:2088	केतु	23:05:2089

अष्टोत्तरी दशा

आपल्या कुंडलीत अष्टोत्तरी दशेचा अरिद्धादी सिद्धांत प्रभावी होत आहे.









क.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा काल	पासून-----पर्यंत	काळ बिंदू
1	मंगळ(हस्त)	1 y.1 m.5 d.	18:12:1973 -- 22:01:1975	170:43:15
2	मंगळ(चित्रा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1975 -- 22:01:1977	009:24:35
3	मंगळ(स्वाती)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1977 -- 22:01:1979	249:49:11
4	मंगळ(विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1979 -- 22:01:1981	292:38:57
5	बुध(अनुराधा)	5 y.8 m.0 d.	22:01:1981 -- 23:09:1986	298:03:58
6	बुध(ज्येष्ठा)	5 y.8 m.0 d.	23:09:1986 -- 23:05:1992	099:42:48
7	बुध(मूल)	5 y.8 m.0 d.	23:05:1992 -- 22:01:1998	294:58:17
8	शनि(पूर्वाषाढा)	2 y.6 m.0 d.	22:01:1998 -- 23:07:2000	351:12:50
9	शनि(उत्तराषाढा)	2 y.6 m.0 d.	23:07:2000 -- 22:01:2003	310:28:23
10	शनि(अभिजीत)	2 y.6 m.0 d.	22:01:2003 -- 24:07:2005	310:28:23
11	शनि(श्रवण)	2 y.6 m.0 d.	24:07:2005 -- 22:01:2008	234:13:31
12	गुरू(धनिष्ठा)	6 y.4 m.0 d.	22:01:2008 -- 24:05:2014	292:38:57
13	गुरू(शततारका)	6 y.4 m.0 d.	24:05:2014 -- 22:09:2020	173:03:32
14	गुरू(पूर्वाभाद्रपदा)	6 y.4 m.0 d.	22:09:2020 -- 22:01:2027	215:53:18
15	राहु(उत्तराभाद्रपदा)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2027 -- 22:01:2030	313:19:27
16	राहु(रेवती)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2030 -- 22:01:2033	114:58:17
17	राहु(अश्विनी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2033 -- 22:01:2036	310:13:47
18	राहु(भरणी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2036 -- 22:01:2039	168:07:10
19	शुक्र(कृत्तिका)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2039 -- 22:01:2046	165:16:05
20	शुक्र(रोहिणी)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2046 -- 22:01:2053	089:01:14
21	शुक्र(मृग)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2053 -- 22:01:2060	287:42:34
22	रवि(आर्द्रा)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2060 -- 24:07:2061	127:22:42
23	रवि(पुनर्वसु)	1 y.6 m.0 d.	24:07:2061 -- 22:01:2063	170:12:28
24	रवि(पुष्य)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2063 -- 23:07:2064	310:28:23
25	रवि(आश्लेषा)	1 y.6 m.0 d.	23:07:2064 -- 22:01:2066	112:07:13
26	चंद्र(मघा)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2066 -- 22:01:2071	231:07:51
27	चंद्र(पूर्व फाल्गुनी)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2071 -- 22:01:2076	089:01:14

(विशेष घडामोडींच्या वेळी अचूक माहिती आणि स्पष्ट परिणामांसाठी आपण फक्त 'एन. सी. लाहिरी' अयनांशाचा वापर करायला हवा.)

योगिनी दशा

क.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा काल	पासून-----पर्यंत	काळ बिंदू
1	संकटा (राहु)(हस्त)	4 y.4 m.21 d.	18:12:1973 -- 09:05:197	051:07:51
2	मंगला (चंद्र)(चित्रा)	1 y.0 m.0 d.	09:05:1978 -- 09:05:197	170:43:15
3	पिंगला (सूर्य)(स्वाती)	2 y.0 m.0 d.	09:05:1979 -- 09:05:198	127:22:42
4	धन्या (गुरु)(विशाखा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:1981 -- 08:05:198	215:53:18
5	भ्रामरी (मंगळ)(अनुराधा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:1984 -- 08:05:198	072:54:51
6	भद्रीका (बुध)(ज्येष्ठा)	5 y.0 m.0 d.	08:05:1988 -- 09:05:199	099:42:48
7	उल्का (शनि)(मूळ)	6 y.0 m.0 d.	09:05:1993 -- 09:05:199	133:19:27
8	सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाषाढा)	7 y.0 m.0 d.	09:05:1999 -- 09:05:200	206:00:33
9	संकटा (राहु)(उत्तराषाढा)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2006 -- 09:05:201	127:22:42
10	मंगला (चंद्र)(श्रवण)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2014 -- 09:05:201	332:01:55
11	पिंगला (सूर्य)(धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2015 -- 09:05:201	246:58:06
12	धन्या (गुरु)(शततारका)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2017 -- 08:05:202	173:03:32
13	भ्रामरी (मंगळ)(पूर्वाभाद्रपदा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2020 -- 08:05:202	292:38:57
14	भद्रीका (बुध)(उत्तराभाद्रपदा)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2024 -- 09:05:202	298:03:58
15	उल्का (शनि)(रेवती)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2029 -- 09:05:203	298:03:58
16	सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2035 -- 09:05:204	348:07:10
17	संकटा (राहु)(भरणी)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2042 -- 09:05:205	168:07:10
18	मंगला (चंद्र)(कृत्तिका)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2050 -- 09:05:205	048:16:46
19	पिंगला (सूर्य)(रोहिणी)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2051 -- 09:05:205	048:16:46
20	धन्या (गुरु)(मृग)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2053 -- 08:05:205	292:38:57
21	भ्रामरी (मंगळ)(आर्द्रा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2056 -- 08:05:206	249:49:11
22	भद्रीका (बुध)(पुनर्वसु)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2060 -- 09:05:206	157:48:03
23	उल्का (शनि)(पुष्य)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2065 -- 09:05:207	136:25:07
24	सिद्धा (शुक्र)(आश्लेषा)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2071 -- 09:05:207	152:51:40

जेमिनी चर दशा (नीलकांत सिद्धांत)

क.स.	दशेचे नाव	अवधी	पासून-----पर्यंत
१	 कन्या दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1983
२	 तुळा दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1986
३	 वृश्चिक दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:1986 --- 18:12:1991
४	 धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:1991 --- 18:12:1992
५	 मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1992 --- 18:12:1999
६	 कुंभ दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1999 --- 18:12:2003
७	 मीन दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2003 --- 18:12:2005
८	 मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:2005 --- 18:12:2017
९	 वृषभ दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2017 --- 18:12:2021
१०	 मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2021 --- 18:12:2026
११	 कर्क दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2026 --- 18:12:2036
१२	 सिंह दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2036 --- 18:12:2040

जेमिनी चर दशेची भुक्ति

कन्या दशा		तुळा दशा		वृश्चिक दशा		धनु दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
तळा	18:12:1973	वृश्चिक	18:12:1983	तळा	18:12:1986	वृश्चिक	18:12:1991
वृश्चिक	18:10:1974	धनु	18:03:1984	कन्या	19:05:1987	तळा	17:01:1992
धनु	18:08:1975	मकर	18:06:1984	सिंह	18:10:1987	कन्या	17:02:1992
मकर	18:06:1976	कुंभ	17:09:1984	कर्क	18:03:1988	सिंह	18:03:1992
कुंभ	18:04:1977	मीन	18:12:1984	मिथुन	18:08:1988	कर्क	18:04:1992
मीन	16:02:1978	मेष	19:03:1985	वृषभ	17:01:1989	मिथुन	18:05:1992
मेष	18:12:1978	वृषभ	18:06:1985	मेष	18:06:1989	वृषभ	18:06:1992
वृषभ	18:10:1979	मिथुन	17:09:1985	मीन	17:11:1989	मेष	18:07:1992
मिथुन	18:08:1980	कर्क	18:12:1985	कुंभ	18:04:1990	मीन	18:08:1992
कर्क	18:06:1981	सिंह	19:03:1986	मकर	17:09:1990	कुंभ	17:09:1992
सिंह	18:04:1982	कन्या	18:06:1986	धनु	16:02:1991	मकर	18:10:1992
कन्या	16:02:1983	तळा	17:09:1986	वृश्चिक	19:07:1991	धनु	17:11:1992
मकर दशा		कुंभ दशा		मीन दशा		मेष दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
धनु	18:12:1992	मीन	18:12:1999	मेष	18:12:2003	वृषभ	18:12:2005
वृश्चिक	19:07:1993	मेष	18:04:2000	वृषभ	17:02:2004	मिथुन	18:12:2006
तळा	16:02:1994	वृषभ	18:08:2000	मिथुन	18:04:2004	कर्क	18:12:2007
कन्या	17:09:1994	मिथुन	18:12:2000	कर्क	18:06:2004	सिंह	18:12:2008
सिंह	18:04:1995	कर्क	18:04:2001	सिंह	18:08:2004	कन्या	18:12:2009
कर्क	17:11:1995	सिंह	18:08:2001	कन्या	18:10:2004	तळा	18:12:2010
मिथुन	18:06:1996	कन्या	18:12:2001	तळा	18:12:2004	वृश्चिक	18:12:2011
वृषभ	17:01:1997	तळा	18:04:2002	वृश्चिक	16:02:2005	धनु	18:12:2012
मेष	18:08:1997	वृश्चिक	18:08:2002	धनु	18:04:2005	मकर	18:12:2013
मीन	19:03:1998	धनु	18:12:2002	मकर	18:06:2005	कुंभ	18:12:2014
कुंभ	18:10:1998	मकर	18:04:2003	कुंभ	18:08:2005	मीन	18:12:2015
मकर	19:05:1999	कुंभ	18:08:2003	मीन	18:10:2005	मेष	18:12:2016
वृषभ दशा		मिथुन दशा		कर्क दशा		सिंह दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
मेष	18:12:2017	वृषभ	18:12:2021	मिथुन	18:12:2026	कन्या	18:12:2036
मीन	18:04:2018	मेष	19:05:2022	वृषभ	18:10:2027	तळा	18:04:2037
कुंभ	18:08:2018	मीन	18:10:2022	मेष	18:08:2028	वृश्चिक	18:08:2037
मकर	18:12:2018	कुंभ	19:03:2023	मीन	18:06:2029	धनु	18:12:2037
धनु	18:04:2019	मकर	18:08:2023	कुंभ	18:04:2030	मकर	18:04:2038
वृश्चिक	18:08:2019	धनु	17:01:2024	मकर	16:02:2031	कुंभ	18:08:2038
तळा	18:12:2019	वृश्चिक	18:06:2024	धनु	18:12:2031	मीन	18:12:2038
कन्या	18:04:2020	वृश्चिक	17:11:2024	वृश्चिक	18:10:2032	मेष	18:04:2039
सिंह	18:08:2020	तळा	18:04:2025	तळा	18:08:2033	वृषभ	18:08:2039
कर्क	18:12:2020	सिंह	17:09:2025	कन्या	18:06:2034	मिथुन	18:12:2039
मिथुन	18:04:2021	कर्क	16:02:2026	सिंह	18:04:2035	कर्क	18:04:2040
वृषभ	18:08:2021	मिथुन	19:07:2026	कर्क	17:02:2036	सिंह	18:08:2040

जेमिनी चर दशा

(राघवभट्ट आणि नरसिंह यांचा सिद्धांत)

क.स.	दशेचे नाव	अवधी	पासून-----पर्यंत
१	कन्या दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1975
२	वृषभ दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1975 --- 18:12:1983
३	मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1990
४	सिंह दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1990 --- 18:12:1998
५	मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:1998 --- 18:12:2010
६	धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:2010 --- 18:12:2011
७	कर्क दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2011 --- 18:12:2013
८	मीन दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2013 --- 18:12:2023
९	वृश्चिक दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:2023 --- 18:12:2030
१०	मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2030 --- 18:12:2035
११	कुंभ दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:2035 --- 18:12:2043
१२	तुळा दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:2043 --- 18:12:2046

जेमिनी चर दशेची भुक्ति

कन्या दशा		वृषभ दशा		मकर दशा		सिंह दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
वृश्चिक	18:12:1973	मकर	18:12:1975	मिथुन	18:12:1983	धनु	18:12:1990
तुळा	18:12:1974	धनु	18:12:1976	कर्क	18:12:1984	मकर	18:12:1991
		वृश्चिक	18:12:1977	सिंह	18:12:1985	कुंभ	18:12:1992
		तुळा	18:12:1978	कन्या	18:12:1986	मीन	18:12:1993
		कन्या	18:12:1979	तुळा	18:12:1987	मेष	18:12:1994
		सिंह	18:12:1980	वृश्चिक	18:12:1988	वृषभ	18:12:1995
		कर्क	18:12:1981	धनु	18:12:1989	मिथुन	18:12:1996
		मिथुन	18:12:1982			कर्क	18:12:1997
मेष दशा		धनु दशा		कर्क दशा		मीन दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
मेष	18:12:1998	मकर	18:12:2010	कन्या	18:12:2011	मकर	18:12:2013
वृषभ	18:12:1999			सिंह	18:12:2012	धनु	18:12:2014
मिथुन	18:12:2000					वृश्चिक	18:12:2015
कर्क	18:12:2001					तुळा	18:12:2016
सिंह	18:12:2002					कन्या	18:12:2017
कन्या	18:12:2003					सिंह	18:12:2018
तुळा	18:12:2004					कर्क	18:12:2019
वृश्चिक	18:12:2005					मिथुन	18:12:2020
धनु	18:12:2006					वृषभ	18:12:2021
मकर	18:12:2007					मेष	18:12:2022
कुंभ	18:12:2008						
मीन	18:12:2009						
वृश्चिक दशा		मिथुन दशा		कुंभ दशा		तुळा दशा	
भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--	भुक्ति	पासून--
मेष	18:12:2023	वृश्चिक	18:12:2030	मिथुन	18:12:2035	मकर	18:12:2043
वृषभ	18:12:2024	तुळा	18:12:2031	कर्क	18:12:2036	धनु	18:12:2044
मिथुन	18:12:2025	कन्या	18:12:2032	सिंह	18:12:2037	वृश्चिक	18:12:2045
कर्क	18:12:2026	सिंह	18:12:2033	कन्या	18:12:2038		
सिंह	18:12:2027	कर्क	18:12:2034	तुळा	18:12:2039		
कन्या	18:12:2028			वृश्चिक	18:12:2040		
तुळा	18:12:2029			धनु	18:12:2041		
				मकर	18:12:2042		

जातका संबंधी सामान्य भविष्यवाणी (लव्हराशीफल)

सामान्य माहिती :

आपली लव्हराशी कन्या आहे, जिचा स्वामी बुध आहे. ही एक भौतिक, साधारण तसेच लवचिक आणि वायु तत्त्वाची राशी आहे. ही एक नीरस आणि मानवीय राशी आहे.

कन्या लग्नात जन्म झालेला असल्यामुळे आपण मेधावान, अध्ययन परायण तसेच समजदार असाल. आपण सिद्धांतवादी तसेल पद्धतशीर कार्य संपन्न करणारे असाल. तसेच सतत ज्ञानाच्या शोधात असाल. आपण शांत आणि स्थिर बुद्धीचे असाल, आणि दिर्घ काळापर्यंत अगदी एकाग्रचित्त होऊन कोणतेही कार्य करू शकता. भौतिक आणि रासायनिक विज्ञानात आपला प्रचंड व्यासंग असेल. अनौपचारिक अभ्यास, संशोधन याची देखील आपल्याला आवड असेल. आपले ज्ञान अगाध असेल. आपण उत्तम वाक्पटु असाल. आपले हे गुण इतरांना प्रभावित करतील. आणि लोक आपली प्रशंसा करतील. आपले व्यक्तिमत्त्व आकर्षक असेल. आपण सतत प्रयत्न आणि धैर्यासाठी ओळखले जाताल. आपल्या भाव-भावनांवर आपले नियंत्रण असेल. आपण एक कूटनितिज्ञ आणि चतुर व्यक्ति असाल. आपल्या बोलण्यात मार्दव आणि नम्रता असेल.

कला साहित्यात देखील आपल्याला आवड असेल. आपण त्या कलागुणांमध्ये प्राविण्य मिळवाल. आपण महत्त्वाकांक्षी असाल. आपण खूप उदार आणि सुशील असाल. आपण 'साधी राहणी उच्च विचारसणी' याचे पुरस्कर्ते असाल. आपण काटकसरी असाल. आपण धार्मिक असाल, आणि धर्म तसेच परंपरांविषयी आपल्या हृदयात नितांत आदर असेल. यात्रा आणि पर्यटनासाठी जाणे आपणाला मनापासून आवडेल. आपणाला विविध प्रकारच्या वस्तू गोळा करण्याची उत्सुकता असेल. ही सवय आपल्या कल्पनाशक्तीला जागृत ठेवेल. आपल्याकडून गोळा झालेल्या वस्तूंचे आपण जतन कराल, त्या वस्तू नष्ट करणाऱ्यांपैकी आपण नसाल.

शारीरिक जडणघडण :

आपला रंग गोरा आणि व्यक्तिमत्त्व आकर्षक असेल. आपले डोळे सुंदर आणि चेहरा रुंद असेल. आपल्या चेहऱ्यावर सतत एक स्मितहास्य असेल. आपण मध्यम उंचीचे, उत्तम बांधा असलेले, सडपातळ तसेल गोल चेहऱ्याचे असू शकता. आपले शरीर जरी सडपातळ दिसत असले तरी आपली छाती रुंद असेल. आपण दिसण्यात रुबाबदार असाल. आपले नाक सरळ आणि टोकदार असेल तसेच आवाज तीक्ष्ण असू शकतो. आपला स्वभाव चंचल असेल.

मानसीक स्थिती :

आपल्या कुंडलीत चंद्र कन्या राशीत स्थित आहे, जो बुधाच्या अधिपत्याखाली आहे. ही साधारण, नकारात्मक आणि भौतिक राशी आहे. आपण शांत स्वभावाचे परंतु चंचल प्रवृत्तीचे असू शकाल. आपण अति महत्त्वाकांक्षी असणार नाहीत. आपण अहंकार रहित तसेच निराधार वायदे करणारांची घृणा कराल. आपला बौद्धिक दर्जा उत्तम असेल तसेच आपण बौद्धिक कार्यात व्यस्त रहाल. आपण असे कार्य करणे आवडेल ज्यात जीम्मेदारी तसेच अधिकार असेल. आपण शांतीमय तसेच तणावमुक्त जीवनाची आवड असेल.

आपल्या परिवाराशी आपले जिव्हाळ्याचे संबंध असतील तसेच आले आपले जीवन आनंदमय तसेच सुखद करून टाकतील. कृषी, कृषी उत्पन्न, औषधी, आयुर्वेद खाद्यपदार्थ, मिष्टान्न तसेच घरघुती वापराचे इतर उपकरण आपल्याला आकर्षित करतील. आपण आपल्या सहयोगी, वरिष्ठ अधिकारी तसेच आपल्या हाताखालील अधिकाऱ्यांशी मधुर संबंध स्थापन कराल. जर आपला कोणी घरघुती नोकर असेल तर त्याचेही आचरण चांगले असेल आणि तो आपला आदर करेल.

आपला स्वभाव जात्याच जागरूक आणि चौकस असेल, तरीही आपण काहीसे अबोल सुद्धा असू शकता, ज्यामुळे आपण असामान्यपणे धैर्यवान असाल. बालवयातच आपले कौटुंबिक भाग्य क्षीण झाल्यामुळे घरघुती कटकटी,

कोणत्याही प्रकारचा प्रतिबंध, अभाव आपल्या जीवनाला मागे खेचू शकतो. म्हणायला आपण विप्लेषणात्मक विज्ञान वाचाल परंतु हस्तकलेतही अतीव रस घ्याल. आपल्याला केवळ सैद्धांतिक विषयांच्या वाचनाची केवळ आवड नसून प्रयोग करणे सुद्धा आवडेल. आपण काही नवीन गोष्टी तसेच नवनवीन माहिती यांचा शोध लावाल. दैनंदिन जीवनात उपयोगी पडणारे काही उपकरणांचा आविष्कारही करू शकता. दिवसेंदिवस आपल्या परिपक्वतेत आणि भागीदारीच्या क्षमतेत वृद्धी होईल, स्वभाव मनमिळावू असेल, संवादही उत्तम असेल. शिक्षण किंवा सांस्कृतिक कार्यक्रमाच्या निमित्ताने दूरच्या ठिकाणी किंवा विदेशात जाण्याचीही शक्यता आहे.

गुणवैशिष्ट्ये :

आपली तर्कशक्ती विलक्षण असेल, आणि आपण खूप बुद्धीमान आणि विवेकी असाल. आपली स्मरणशक्ति अगदी उत्तम असेल. आपल्याला विविध विषयांचे ज्ञान असेल. आपल्याला ललित कला जसे संगीत, साहित्य इत्यादीं विषयी प्रेम असेल, आपण भांडणतंट्यांपासून दूर रहाल आणि सौहार्दप्रिय असाल. आपण आपले बोलणे हळु आणि नम्रतापूर्वक असेल. तसेच आपल्या वाणीत मृदुता असेल. आपणास कोणत्याही गोष्टींना व्यवस्थितपणे करणे आणि ठेवणे मनापासून आवडेल. आपण काटकसरी असाल आणि वायफळ खर्चापासून दूर रहाल.

अवगुण :

आपल्यात आत्मविश्वास कमी असू शकतो. कधी कधी आपण भ्रमित होऊ शकता, ज्यामुळे आपल्याला आपल्या निर्णयापर्यंत पोहचायला विलंब होऊ शकतो. याच कारणामुळे आपण निरुत्साही होऊ शकता. आपला स्वभाव संतापी असू शकतो. आपण सर्वांवर संशय घेऊ शकता. आणि प्रत्येकाला स्वार्थी समजू शकता. आपण छद्मीरूप, ढोंगी असू शकता. आपण कायम आपल्याच तोऱ्यात असू शकता, आपल्याला प्रसन्न करणे कठिण असेल. आपण दुसऱ्याच्या धन आणि घराचा फायदा उचलू शकता. आपण बेफाम असू शकता. आपल्यात सूडाची भावना असू शकते. आपला वास्तविकतेशी काही संबंध असणार नाही, आणि आपण स्वप्नाच्या दुनियेत वावराल.

विशेष लक्षण :

- १) आपण कर्तव्यपरायण असाल, आणि आपली कामे आणि जबाबदाऱ्या पूर्णपणे समर्पित होऊन निभावाल.
- २) कोणत्याही गोष्टींचे सविस्तर विश्लेषण करून आपल्या तर्कशक्तिच्या आधारावर आपण त्यांचे समालोचन कराल.
- ३) आपली बुद्धी अतिशय तीक्ष्ण असेल, आणि आपल्या विलक्षण ग्रहणक्षमतेमुळे नवनवीन गोष्टींनादेखील आपण चटकन आत्मसात करून घ्याल.
- ४) आपण प्रत्येक काम विधीपूर्वक कराल. आणि त्याच्या प्रत्येक पैलू, बारीक-सारीक गोष्टींवर विशेष लक्ष ठेवाल.
- ५) आपण एक कुशल अण्वेषक असाल, आणि आपल्या भोवतालच्या परिस्थितींना समजण्याची, उमजण्याची अद्भुत क्षमता आपल्यात असेल.

उपजिविकेचे साधन :

आपला मेधावी असण्याचा गुणधर्म आपल्याला बौद्धिक कार्याकडे आकर्षित करेल. आपल्यासाठी कोणतेही असे काम जिथे बुद्धीची आवश्यकता आहे, उत्तम राहिल. आपण सल्लागार, वकील, अध्यापक, गणितज्ञ, चिकित्सक, प्रबंधक, सांख्यिकी, विद्वान, प्रोफेसर, काउंसिलर, लेखक होऊन आपले भविष्याला उजाळा देऊ शकता. आपण संगीतज्ञ, अभिनेता, संगणक प्रोग्रामर, टेलिफोन ऑपरेटर, सोनार, ट्रान्सपोर्ट किंवा ट्रार व्यवस्थापक या रूपातही उत्तम प्रगति करू शकता.

शुभ आणि अशुभ ग्रह :

- १) आपल्या लग्नाचा स्वामी बुध असल्यामुळे आपल्यासाठी अत्यंत शुभ असेल.
- २) द्वितियेश आणि नवमेश शुक्र एक लाभदायक ग्रह योग असेल.
- ३) तृतीयेश आणि अष्टमेश मंगळ अत्यंत अशुभ असेल. लाभेश चंद्रदेखील अशुभ असेल.
- ४) गुरू सप्तमेश असल्यामुळे मारकेश आहे.

कन्या लग्नाच्या काही प्रसिद्ध व्यक्ती :

Sample DOB: 18:12:1973 ; TOB: 01:45:00AM ; POB: Hyderabad (INDIA)

अझरुद्दीन, सचिन तेंडुलकर, व्यंकटेश प्रसाद-क्रिकेटर, जॉन एफ केनेडी, बिल विलिंग्टन-माजी अमेरिकी राष्ट्रपति, प्रिंसेस डायना-वेल्सची राजकुमाली, मुजीबुर रहेमान-बांग्लादेशचे जनक, राजीव गांधी, पी वी नर्सिंहराव-माजी पंतप्रधान, लिअंडर पेस-टेनीस खेळाडू, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन-माजी राष्ट्रपति

जन्मपत्रिकेत असलेल्या विभिन्न ज्योतिषीय गणनाद्वारे भविष्यफळ

जन्मसमयीच्या संवत्सरानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म प्रमादी संवत्सरात झाला आहे. जर काही अनुकूल योग आपल्या कुंडलीत उपस्थित नसतील तर आणि शुभ प्रभाव नसतील तर आपणास प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होउ शकतात. आपण खूप बुद्धीमान आणि ज्ञानी असू शकत नाही, आपण एक उत्तम जीविका अर्जित करण्यात निपुण असणार नाही. आपण अत्यंत दांभिक स्वभावाचे, व्देषी, लालची व्यक्ती होउ शकता. आपण विचारहीन आणि षंडखोर होउ शकता, अनेक लोकांचा विरोध करु शकता आणि वाईट काम करण्यात आपणास विशेष सुख मिळू शकते.

जन्मसमयीच्या सौर अयनानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म सूर्याच्या दक्षिणायना (किंवा यमायन) मध्ये झाला आहे. जर काही प्रतीकारी प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसतील तर हा संकेत अनुकूल आहे. आपण काही प्रमाणात दांभिक आणि हट्टी प्रकृतीचे किंवा असहिष्णु स्वभावाचे व्यक्ती असाल. जर काही अनुकूल रवी योग कुंडली (शुभ कर्तरी, उभयाचरी, वेशी, वोशी इत्यादि.) उपस्थित असतील तर या स्थितीमध्ये चांगल्या कारणांकरीता सुधार होईल. परंतु जर सूर्य पाप कर्तरी योगात असेल तर पुढील अधिकृत राशीत नैसर्गिक अशुभ ग्रह आहेत तर आपण कठोर हृदयी किंवा कपटी होउ शकता. आपण आपला उदरनिर्वाह कृषी आणि गुरेढोरेपालनाने कराल व याबरोबरच आपण काही असे काम कराल जिथे केलेल्या परिश्रमांच्या प्रयासाच्या तुलनेत अजिबातच सांमजस्य पूर्ण होउ शकत नाही.

जन्मसमयीच्या ऋतुनुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म हेमंत ऋतु मध्ये झाला आहे. जर काही प्रतीकारी प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसतील तर हा संकेत अनुकूल आहे. आपण अत्यंत बुद्धीमान, विचारवंत, ज्ञानी आणि विवेकसंपन्न असाल. आपणमोकळ्या विचारांचे, उदार प्रवृत्तीचे व्यक्ती असाल आणि नेहमी उचीत काम करण्यात सलग्न असाल. आपला धार्मिक ओढा उत्कृष्ट असेल आणि आपले जीवन एक उत्तम सल्लागार बनून व्यतीत कराल. आपले आचरण सुंदर असेल व आपण स्वभावाने सुशील असाल ज्यामुळे लोक आपणास सन्मान देतील.

जन्मसमयीच्या महिन्यानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म पौष महिन्यात (डिसेंबर/जानेवारी) झाला आहे. जर काही अनिष्ट प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसतील तर हा संकेत अनुकूल आहे. आपले व्यक्तीमत्व जरी आकर्षक व रुप सुंदर असेल, आपली शरीर प्रकृती कमजोर असेल जर आपला जन्म कृष्ण पक्षात झाला असेल. आपणास आपल्या माता पित्याकडून आर्थिक सहाय्यता प्राप्त होणार नाही. तरीही आपण बेजबादारपणे खर्च कराल. याबरोबरच आपण रहस्यमयी वृत्तीचे असू शकता आणि आपले विचार व निर्णय स्वतःपुरतेच मर्यादीत ठेवता, ज्याने आपण आपल्या शत्रुवर आघात करु शकता. याची सुखद बाब ही आहे की आपण धार्मिक विचारांचे, पवित्र शास्त्राचे अध्ययन करण्यात रस असणारे असाल आणि विद्वान आणि धर्मपरायण लोकांचा सन्मान करणारे असाल.

जन्मसमयीच्या पक्षानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म कृष्ण पक्षात झालेला आहे. जर काही अनिष्ट प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसतील तर हा संकेत अनुकूल आहे. आपली शरीर प्रकृती काही प्रमाणात कमजोर होउ शकते आणि आपण रोग ग्रस्त होउ शकता. आपली प्रकृती अशांत आणि स्वभाव अस्थिर होउ शकतो. आपणावर षंडखोर म्हणून शिक्कामोर्तब होउ शकतो. आपण भावनाशील होउ शकता, कोणत्याही गोष्टीचे आकलन करुन न घेता राईचा पर्वत करु शकता. याशिवाय आपण कामुक होउ शकता आणि आपल्या जोडीदाराची

चापलूसी करु शकता.

जसेकी आपल्या कुंडलीत शुभ ग्रह गुरु चंद्राबरोबर स्थित आहे (किंवा यावर त्याची .ष्टी आहे), आपण मानसीक शांती आणि वर्तनात समतापूर्वक असाल. आपण मोकळ्या विचारांचे, आशावादी .ष्टीकोण आणि परोपकारी स्वभावाचे असाल. आर्थिक रुपाने आपण बरेच संपन्न असाल आणि आपले मित्र आणि परिचितांची संख्या प्रचंड असेल. आपली निर्णयक्षमता उत्तम असेल. आणि आपल्या लोक लोक काही महत्वाच्या बाबतीत आपला मोलाचा सल्ला घेतील.

जन्मसमयीच्या दिवसानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म मंगळवारी झालेला आहे. दिनपती मंगळाची स्थिती आपल्या कुंडलीत विशेष महत्वपूर्ण आहे. याचे फळ— स्थानात याच्या स्थितीनुसार अजुनही महत्वपूर्ण होईल. याशिवाय सर्व सामान्य स्थिती आपल्या बाजूने असेल. आपण अत्यंत गुणवान असाल. उत्तम चरित्र असलेले व्यक्ती असाल. आपण पूर्ण समर्पित होउन आपले कार्य कराल, आपणात अचानक नवीन शक्तीचा प्रवाह वाहील. आपण आपल्या बोलण्याने आणि वाकचातुर्याने सर्व अडचणींचा सामना कराल. आपण आपल्या उपजीवीकेचे साधन धातु, चल अचल संपत्ती किंवा पोलीसदल, सुरक्षादल इत्यादिमध्ये कराल.

दिवसा किंवा रात्रीच्या जन्मानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म रात्री झालेला आहे. जर आपल्या कुंडलीत जर प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नसतील तर आपण आळशी आणि दिवसा झोपणारे असू शकता. आपण गोपनीय स्वभावाचे असू शकता आणि आपल्या इच्छा गुप्त ठेवू शकता. याशिवाय आपण काही प्रमाणात कामुक स्वभावाचे असू शकता, ज्यामुळे आपण आपल्या जोडीदाराशी दबुन वागाल. जर आपल्या लग्नात एखादा ग्रह स्थित आहे किंवा आपली .ष्टी टाकत असेल तर आपण कर्मठ, उत्साही, मेहनती आणि प्रतिभावान असाल.

जन्मसमयीच्या सूर्य सिध्दांत योगानुसार भविष्यफळ :

सूर्य सिध्दान्त अनुसार आपला जन्म सौभाग्य या योगावर झालेला आहे. हा एक उत्तम योग आहे. यायोगावर जन्म घेतल्यामुळे आपण अनेक बाबतीत भाग्यवान असाल. आपण सुशिक्षित आणि बुध्दीमानव्यक्ती असाल आणि नेहमी उचीत मार्गावर जाल. सामान्य लोक आपल्यातील व्यवहार कौशल्य, विवेक, बुध्दीमत्ता आणि दूरदर्शीपणामुळे आपला सन्मान करतील आणि आपल्याकडून स्वतःविषयी महत्वपूर्ण विषयांवर सल्ला घेतील.

जन्मसमयीच्या तिथीनुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म नवमी तिथीस झालेला आहे. जर कोणताही शुभ ग्रह चंद्राबरोबर असेल किंवा यावर आपली .ष्टी टाकत असेल तर जास्त लाभदायक फळ मिळेल. आपण आपल्या पित्याच्या जास्त जवळअसाल आणि शिक्षक, गुरुंचा आदर कराल, परंतु आपला स्वभाव इतरांपेक्षा वेगळा असू शकतो, ज्यामुळे काही आपलेच लोक आपला विरोध करतील व आपला फायदा घेतील. आपण धार्मिक प्रवृत्तीचे असाल व आपला निर्णय प्रशंसनीय असेल. परंतु कोणताही अशुभ ग्रह चंद्राबरोबर असेल किंवा यावर .ष्टी टाकत असेल तर आपण भ्रष्ट होऊ शकता. आपले लोकही आपल्या वाईट आचरणासाठी आपली निंदा करू शकतात.

जन्मसमयीच्या करणानुसार भविष्यफळ :

आपला जन्म गरज करणावर झालेला आहे. हा चर स्वभावाचा पाचवा करण आहे. आपले स्वास्थ्य उत्तम, शरीर सु.ढ, आकर्षक व्यक्तीमत्व आणि सुखद आचरणाचे स्वामी असाल. आपण विद्वान, बुध्दीमान, उदार, सन्माननीय आणि इतरास लाभ देणारे व्यक्ती असाल. आपण बुध्दीमान आणि चतुर असाल. आपण आपल्या सर्व शत्रुंवर दबाव आणू शकता. परंतु आपण असे कोणताही गट, मंडळ

किंवा चलाखीयुक्त कामांचा आश्रय घेतल्याशिवाय करू शकता. आपल्या सफलताचे श्रेय आपले धैर्य, बुध्दीमत्ता, दृढता आणि वेळेवर काम करण्याची पध्दत याला आहे. आपण प्रगती करण्यात सक्षम असाल व आपल्या समकालीन व्यक्तींच्या पुढे जाल.

जन्मसमयीच्या नक्षत्रानुसार भविष्यफळ :

आपल्या कुंडलीत चंद्र उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रात आहे. या नक्षत्रावर जन्म घेतल्यामुळे आपण अनेक बाबतीत भाग्यवान असाल. आपण सक्रीय, संवेदनशील आणि विचारवंत व्यक्ती बनाल. आपण तीव्र बुध्दीमानी आणि सुशिक्षित व्यक्ती असाल. याशिवाय पवित्र आणि प्राचीन शास्त्रांचे अध्ययन करण्याची आवड असेल. याबरोबरच आपण ललित कलेमध्ये निपुण असाल. आपण रचनात्मक कल्पनाशीलता आणि विचारांनी युक्त असाल. आपण लेखक, संपादक, समालोचक इत्यादि रूपात प्रसिध्दी मिळवाल. आपल्या व्यवसायाचा संबंध महापालिका, जलासंबंधीचे कार्य, मर्चंट नेव्ही, आयात निर्यात इत्यादिशी असू शकतो. आपले उत्पन्न खूप चांगले असेल.

कुंडलीत होत असलेले योग (ग्रह युती)

कुंडलीत होत असलेले महत्वपूर्ण योग :

आपल्या कुंडलीत चतुर्थेश नीच किंवा शत्रु राशित स्थित आहे किंवा एका नैसर्गिक ग्रहा सोबत स्थित आहे, अथवा एका वाइट षष्ठीअंश मध्ये स्थित आहे. ही एक खुप प्रतिकूल युति आहे, ज्यास बंधुभीसत्यकता योग म्हणतात. जर काहि बलाढ्य संशोधनकारी प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसले तर या युतिमुळे, आपले नातेवाइक किंवा मित्र कधिहि आपला त्याग करु शकतात – आणि ते पण आपल्या छोट्याश्या चुकीमुळे किंवा चुक नसतांनाही.

आपल्या कुंडलीत पंचमेश बलाढ्य नाहि आहे – तुंगस्थ किंवा आपल्या राशित किंवा आपल्या नक्षत्रात मसल्यामुळे. याव्यतिरीक्त हा केंद्रिय भावमध्ये अथवा त्रिकोण भाव मध्ये आहे. युतिस एक पुत्रयोग असे म्हणतात. जर काहि बलाढ्य संशोधनकारी प्रभाव आपल्या कुंडलीत नसले तर आपणस केवळ एक अपत्य राहिल – जो जासतत: एक पुत्र असेल.

आपल्या कुंडलीत, द्वितीयेश चतुर्थेश सोबत आहे किंवा त्याची ष्टि यामध्ये आहे. हे दोन्ही ग्रह अस्त आणि ग्रासित नाहित. ही एक अनुकूल युति आहे, ज्याला मातृ मूलत धन योग म्हणतात. या योगाच्याउपस्थितीमुळे आपणास आपल्या आईपासून आर्थिक लाभ होईल.

आपण एका पुरुष आहात. आपल्या कुंडलीत बृहस्पति आणि शुक्र एकत्र 5 व्या भाव मध्ये स्थित आहेत. 5व्या भाव मध्ये कोणताहि नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नाहि, किवा त्याचि ष्टि या भाव वर नाहि आहे. हि एक खुपच अनुकूल युति आहे ज्यास अपत्य सुख योग असे म्हणतात. आपल्या कुंडलीत हा योग असल्यामुळे, आपण योग्य अपत्यांना प्राप्त करण्यात विशेषरित्या भाग्यषाली राहणार – जो आपल्या परिवाराच्या सुख आणि गर्वास कारणीभूत राहिल.

आपल्या कुंडलीत, विवाहाचा कारक उद्वक्त "S" किंवा अस्तंगत किंवा ग्रासीत नाही. याशिवाय हा नैसर्गिक शुभ ग्रह गुरुबरोबर आहे किंवा त्याची यावर दृस्वभटी आहे. ही एक शुभ युती आहे आहेजीला सतकलत्र यांग या नावाने संबोधले जाते. आपल्या कुंडलीत होत असलेल्या या योगामुळे जोडीदाराच्या बाबतीत आपण खूपच स्वभाग्यवान असाल, तुमचा जोडीदार एका कुलीन खानदानातील असून सदगुणी असेल.

आपल्या कुंडलीत, द्वितीयेश एका नैसर्गिक शुभ ग्रहाबरोबर आहे आणि हा केंद्रीय किंवा त्रिक स्थानात आहे. एकंदरीत ही एक शुभ युती आहे जीला युक्ति समन्विता वाग्मि योग या नावाने संबोधले जाते. आपल्याला स्वभास्वभाण कौशल्याची नैसर्गिक देणगी प्राप्त होईल. आपली अचाट तर्कशक्ती आणि संस्वभास्वभाणातील दक्षता आपल्याला सुविख्यात बनवेल. आपण सस्वभेमध्ये आपलीचमक दाखवाल आणि सम्मान प्राप्त कराल. आपण शैक्षणिक, परंपरागत किंवा धार्मिक कार्याकरीता परदेश यात्रा करु शकाल.

कुंडलीत होत असलेले धनयोग :

आपल्या कुंडलीत 8 व्या स्थानाचा (धन) स्वामी उत्तम स्थितीत आहे आणि आपण आर्थिक दृष्ट्या संपन्न असाल, आपल्याला एक आकर्षक पद प्राप्त होण्याची शक्यता आहे, आणि आपल्याला उत्तम नोकरी प्राप्त होईल, शक्यतो आपल्या पेशाचा संबंध वीमा, प्रॉवीडंट फंड,राजस्व इत्यादिशी होउ शकतो. या बरोबरच आपल्याला आपला विवाह किंवा व्यावसायीक भागीदार यापासून आर्थिक लाभ प्राप्त होईल आणि आपण काही प्रमुख वित्तीय संस्थामधून आपला नवीन उपक्रम सुरु

करण्याकरीता भारी कर्ज प्राप्त करु शकता.

आपल्या कुंडलीत एक अत्यंत शुभ युती बनली आहे. आपल्या स्वतःच्या अविरत प्रयत्नांनी आणि मनशक्ती व्दारा आपण आपल्या समकालीन व्हाक्तीपेक्षा खूप जास्त प्रमाणात प्रगती कराल. आपली महत्वाकांक्षा पूर्ण होईल आणि विलंबीत इच्छा आंकाक्षाचीही पूर्तता होईल. आपल्या सषेवतालचे लोकआपल्याला एक अनुकरणीय आणि प्रेरणादायी व्यक्ती मानतील. आपण आपला जीवनसाथी, संतान, नातेवाईक आणि मित्रांसोबत एक खुशहाल आणि समृद्धीपूर्ण जीवन व्यतीत कराल.

आपल्या कुंडलीत, लग्नेश आणि गुरु एकत्र आहेत, जो एक अनुकूल स्थितीमध्ये आहे ज्यामुळे एक शुभ धन योग बनतो. आपण धनाच्या बाबतीत भाग्यवान व्हाल, आपली प्राप्ती उत्तम असेल आणि अवश्य खूप धनवान बनेल.

आपल्या कुंडलीत, चतुर्थेश व्दितीयेस बरोबर (किंवा त्याची यावर दृष्टी आहे), जसेकी या दोन्ही पैकीएकही ग्रहकोणत्याही प्रकाराने पिडीत नाही. आपण आपल्या मातेच्या संदर्षत भाग्यवान असाल, आणि तिच्या कडून धन दौलत प्राप्त करु शकता. आपल्याला आपल्या संबंधीताकडून आणि शेती पासून लाभ प्राप्त होउ शकतो.

जसेकी आपल्या कुंडलीत, 11 वे स्थान जल तत्वाच्या राशीबरोबर आहे, आपण आपले जन्मस्थान किंवा निवासस्थानाच्या उत्तर दिशेच्या जागेपासून उत्तम लाभ मिळवू शकता.

कुंडलीत होत असलेले धनहानी योग :

आपल्या कुंडलीत, अति शुभ ग्रह 9 व्या स्थानात आहे, यावर कोणत्याही शुभ ग्रहाचा प्रभाव पडत नाही. तरीही आपण बरेच धनाढय व्हाल, तरीही आपल्याला खूप सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल,आणि अनावश्यक रितीने कोणताही धोका पत्करु नये. आपल्याला गंभीर प्रकारच्या अशुभ घटनांचा सामना करावा लागेल. बाबरोबरच आपण कोणाला तरी जखमी करण्याची शक्यता आहे ज्यामुळे आपल्याला दंड केला जाईल.

कुंडलीत होत असलेले नभष योग :

आपल्या कुंडलीत असलेल्या या नस्वभस योगाला दामिनी योग या नावाने संबोधले जाते. ही एक प्रशंसनीय ग्रह युती आहे. आपण खूपच समृद्ध व्हाल, आपण एक सज्जन आणि सहिस्वभणु वृत्तीचे विद्दान व्यक्ती व्हाल. आपण उदार असाल आणि दुस-यांकरीता आपल्या हृदयात करुण स्वभाव असेल. आपल्यात प्राण्यांच्या प्रति दया असेल आपण त्याची कोणत्यातरी प्रकाराने सेवा करु शकता. आपण पारंपारीक धार्मिक कार्य कराल आणि एक शांत, आणि खुशहाल वैवाहीक जीवनाचा आनंद उपस्वभोगु शकता, आपल्याला योग्य आणि कर्तव्यदक्ष संतान सुख प्राप्त होईल. आपले नाव आणि यशाचा डंका चारी दिशेला वाजेल.

कुंडलीत होत असलेले अरिष्ट योग :

आपल्या कुंडलीत,रवी आणि राहू 4 थ्या स्थानात आहे, जेव्हाकी त्यापैकी कोणताही ग्रह तुंगस्थ किंवाआपल्या स्थानात नाही. ही एक प्रतिकूल अरिष्ट योग युती आहे. आपल्या पित्याला आपल्या जन्माच्या वेळी मोठया कष्टाचा सामना करावा लागेल आणि त्यांचे स्वास्थ्य आणि सुख आपल्या परीवाराच्या सदस्यांकरीता गंभीर चिंतेचा विषय होउ शकतो. जर आपल्या कुंडलीत काही शुभ प्रभावनसतील तर आपल्या पित्याच्या जीवनात मानसिक दशेचा काही प्रमाणात -हास होउ शकतो.

कुंडलीत होत असलेले रवी योग :

आपल्या कुंडलीत रवी पासून दुस-या स्थानात चंद्राशिवाय एक ग्रह आहे, आणि असाही एक ग्रह रवीपासून 12 व्या स्थानात आहे. हा एक ग्रह युती बनवितो जीला उस्वभयचरी योग या नावाने संबोधले जाते. याशिवाय जसेकी हे दोन्ही ग्रह प्राकृतीक रूपाने शुभ आहेत, ही एक शुभ युती असेलकारण आपल्या कुंडलीत रवी शुभकरतारी योगात आहे. या संपूर्ण युतीस उस्वभयचरी शुभ करतरी योग असे म्हटले जाते. जसेकी हा योग ब-याच अनुकूल आणि शुभ घटना दर्शवितो आणि आपला जन्म धनवान परिवारात झाला आहे आणि आपण आपले जीवन प्रारंस्वभीक वयातच निश्चित रूपाने विशिस्वभट स्थानापर्यंत पोहचाल. आपल्याला सरकारी साधनांपासून लास्वभ प्राप्त होईल, जीवनातील सर्व सुखसोयीचा आनंद मिळेल आणि आपले नाव आणि यशाची पताका चारी दिशेला िडकेल.

ग्रहांकरीता रत्न आणि रुद्राक्ष

लग्नाधिपती साठी रत्न

लग्नेश बुध आहे. हा नीच किंवा त्रिक भावामध्ये विराजमान नाही तसेच कोणत्याही मारक भावात स्थित नाही, त्यामुळे आपण बुध करिता एखादे रत्न वापरू शकता.

सोन्याच्या अंगठीत पाच किंवा सात कॅरेटचा पाचू जडवून ती बुधवारी उजव्या हाताची अनामिका अथवा मधल्या बोटात धारण करावी. जर आपणांस पाचू घेणे शक्य नसेल तर त्याऐवजी ॲक्वामरीन, पॅरिडोट उपरत्नं, हरितमणी किंवा तुरमली सुद्धा वापरू शकता.

रत्न धारण करते वेळी खालीलपैकी एका मंत्राचा जप करावा :

व्यासवेद का वेदीक मंत्र :

प्रियगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधम् प्रणमाम्यहम् ।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ब्रम् ब्रीम् ब्रुम् सह बुधवे नमः ।

बीज मंत्र :

ओऽम् ब्रुम् ब्रीम् बुधवे नमः ।

नवव्या भावातील स्वामीसाठी रत्न

आपल्या कुंडलीतील नवव्या घराचा स्वामी मारक भावाचा स्वामी आहे, त्यामुळे नवव्या घराच्या स्वामीसाठी रत्न वापरणे आपल्यासाठी उपयुक्त आहे.

योगकारक ग्रहासाठी रत्न

आपल्या कुंडलीत कोणताही प्रकृतिक योग कारक ग्रह नाही.

तात्कालिक योगकारक ग्रहासाठी रत्न

शनि ग्रह आपल्या कुंडलीतील तात्कालिक योग कारक ग्रह आहे. आपला तात्कालिक योग कारक ग्रह नीच किंवा त्रिकभावामध्ये विराजमान नाही तसेच कोणत्याही मारक भावात स्थित नाही, त्यामुळे आपण शनि करिता एखादे रत्न वापरू

शकता.

सोन्याच्या अंगठीत पाच किंवा सात कॅरेटचा नीलम जडवून ती शनिवारी उजव्या हाताच्या मधल्या बोटात धारण करावी. जर आपणांस नीलम घेणे शक्य नसेल तर त्याऐवजी नीलमणी किंवा वैदुर्य सुद्धावापरू शकता.

रत्न धारण करते वेळी खालीलपैकी एका मंत्राचा जप करावा :

व्यासवेद का वेदीक मंत्र :

नीलांजनसंभूतम् रविमुत्रम् यमाग्रजम्
छायामार्तण्डसमूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् प्रम् प्रीम् प्रोम् सह शनिश्चराय नमः ।

बीज मंत्र :

सम् शनिश्चराय नमः ।

रुद्राक्षाकरीता सल्ला

आपला जन्म नवमीला झाला आहे, त्यामुळे नऊमुखी रुद्राक्ष वापरणे आपल्यासाठी उपयुक्त आहे.

या रुद्राक्षाचे आराध्य दैवत शक्तीदेव आहेत. नवरात्र उत्सवादरम्यान या रुद्राक्षाचा प्रभाव नाहीसा होतो. परंतु याच्या वापराने उर्जा व शक्ती प्राप्त होते ज्याच्या जोरावर आपण धन-दौलात तसेच यश मिळवू शकतो.

रुद्राक्ष धारण करते वेळी खालीलपैकी एका मंत्राचा जप करावा :
रुद्राक्षासाठी मंत्र :

ओऽम् द्विम् हम् नमः ।

रुद्राक्षासाठी पंचाक्षरी मंत्र :

ओऽम् द्विम् व्यम् रम् लम् ।

रुद्राक्षासाठी अन्य उपाय :

आपल्या चंद्राचा नक्षत्र स्वामी स्वतः चंद्र असल्यामुळे आपल्याला दोन मुखी रुद्राक्ष लाभ्यायक ठरेल.

रुद्राक्ष परिक्षणासाठी विविध चाचण्या :

(अ) तैरान चाचणी: पाण्याच्या पृष्ठभागावर ठेवला असता जर रुद्राक्ष पाण्यात बुडाला तर तो खरा समजावा पण रुद्राक्ष तरंगत राहिला तर तो बनावट समजावा.

(ब) ताम्र चाचणी: खरा रुद्राक्ष खूप उष्ण असतो आणि विद्युत चुंबकीय गुणामुळे तो तांब्याला स्वतःकडे खेचून घेतो. जर रुद्राक्षाच्या दाण्याला धाग्यात लटकवून ताम्रपत्राच्या तुकड्यावर धरले असता रुद्राक्ष गोल फिरू लागतो. जर रुद्राक्षाची फिरण्याची दिशा घड्याळाच्या काट्याप्रमाणे असेल तर तो अस्सल रुद्राक्ष समजावा.

(भद्राक्ष हा देखील रुद्राक्षासारखाच असतो, परंतु तो फिकट रंगाचा तसेच रुद्राक्षापेक्षा कमी उष्ण असतो.)

(स) दुध चाचणी: एक कप दुधात रुद्राक्ष टाकून ठेवला असता एक दिवसानंतर जर दुध नासले नाहीतर तो रुद्राक्ष खरा समजावा नाही तर तो बनावट समजावा.

खरा रुद्राक्ष अतिशय उष्ण असल्याने जर आपण वृद्ध किंवा शारिरीक ष्ट्या कमजोर असाल तर रुद्राक्षाच्या जागी ध्राक्ष वापरावा.

भद्राक्ष हा देखील रुद्राक्षासारखाच असतो, परंतु तो फिकट रंगाचा तसेच रुद्राक्षापेक्षा कमी उष्ण असतो. रुद्राक्षाचा वापर केल्यास परम गौरी-शंकराचा आशिर्वाद प्राप्त होतो. रुद्राक्ष हा उत्तम

स्वास्थ्य तसेच कुटुंब व मित्र परिवाराबरोबर चांगले संबध राखण्यास मदत करतो.

भद्राक्षासाठी मंत्र : ओऽम् गौरी शंकराय नमः ।

भद्राक्षासाठी मंत्र :

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

विंशोत्तरी दशा

चंद्र दशा

(18:12:1973--14:06:1979)

शनि अंतरदशा

(18:12:1973--14:04:1975)

यापैकी एक ग्रह जरी आपल्या कुंडलीत सुस्थितीत नसेल तर हा काळ आपणाकरीता चांगला राहणारआहे अन्यथा हा काळ आपणास चांगला नाही. आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल. आपणास शब्दांवर नियंत्रण ठेवावेलागेल आणि कोणतेही पाउल उचलण्यापूर्वी विचार करावा लागेल. अति आत्मविश्वासाने काम करू नये नाहीतर समस्या निर्माण होतील. आपणास आपले जीवनसाथी किंवा मित्र किंवा प्रिय व्यक्तीपासून दुरावण्याचा व त्यामुळे निर्माण होणा-या मानसिक शांतीचा सामनाकरावा लागेल. आपल्या कार्यस्थळीही समस्या निर्माण होतील. यातून आपण सुटण्याचा प्रयत्न कराल परंतु त्यातून सुटणार नाही. आपले नुकसानही होउ शकते व आपण केलेले वायदे पूर्ण करू शकणार नाही. आपले स्वास्थ्य बिघडू शकते व आपल्या मातेचे आरोग्य चिंतेचा विषय बनेल. झर आपल्या कुंडलीत चंद्र आणि शनी ग्रस्त असतील तर आपणास सामान्य लोकांकडून अपमानित व्हावे लागेल. झर आपले कर्क लग्न असेल तर हा लग्नपति आणि अष्टमवराच्या संयुक्त रुपाचा काळ आहे, ज्यामुळे आपणास गंभीर समस्यांचा सामना करावा लागेल, आणि काही दुर्घटनाही घडू शकतात.

बुध अंतरदशा

(14:04:1975--13:09:1976)

आपला हा काळ आनंददायक असेल. आपले डोके शांत, बुध्दी, विचार स्पष्ट आणि कल्पना सकारात्मक असेल. आपल्यात बौद्धिक क्षमता असेल ज्यायोगे आपल्या कल्पना कार्यान्वित होतील. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक क्षेत्रात कार्य करत असाल तर निश्चित रुपाने यशस्वी व्हाल. आपण सर्व विवादातून मुक्त होउन जोडीदार, संतान किंवा प्रेमी आणि मित्रांबरोबर खुशी वाटून घ्याल. आपले नाव आणि यश चारी दिशेला पसरेल आणि सामाजिक लोकप्रियता मिळेल. आपण जवळपासची यात्रा कराल आणि सहलीचे नियोजन कराल. जर आपण नोकरी करत असाल तर आपणास वरिष्ठ आधिकारीकडून लाभ व सहयोग मिळेल आणि आपली प्राप्ती वाढेल. जर आपण एखादा व्यवसाय करत असाल तर त्यात तेजीने प्रगती कराल व त्याचा विस्तार किंवा नवीन क्षेत्र निवडण्याकरिता प्रभावी उपाय कराल. आपले गृहस्थ जीवन शांतीमय आणि सुखमय होईल. जर बुध आपल्या कुंडलीत ग्रस्त असेल तर आपल्या मातेचे स्वास्थ्य आपल्याकरीता चिंतेचा विषय बनेल. जर दोन्ही ग्रह ग्रस्त असतील तर तात्कालीक स्वरुपात आपण बुध्दीहीन होउ शकता आणि निरर्थक आणि भ्रामक बोलण्याने लोकांना चकीत कराल.

केतु अंतरदशा

(13:09:1976--14:04:1977)

जर आपल्या कुंडलीत हे दोन ग्रह सुस्थितीत नसेल तर हा काळ आपणास भाग्यशाली असणार नाही. आपणास अनेक कष्टांचा सामना करावा लागेल. आपल्या डोक्यात भय आणि चिंता भरून राहील. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक क्षेत्रात असाल तर आपली निराशा होउ शकते. जर आपण नोकरी करत असाल तर वरिष्ठ आधिका-याच्या कोपाचे कारण बनावल. जर आपण व्यवसायात असाल तर आपल्या भ्रामक बोलण्याने लोक विरोधी बनतील आणि समस्यांना आमंत्रण द्याल. आपल्या मान सन्मानात आणि विश्वसनीयतेत घट होउ शकते. आपले स्वास्थ्य बिघडू शकते आणि

प्रखर ताप, फोड, ग्रंथीला सूज किंवा डोळ्यांच्या विकाराने त्रस्त व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत केतू एक किंवा अधिक ग्रहांनी ग्रस्त असेल तर आपणास विजेच्या संबंधीत कार्य व उपकरणांपासून दूर रहावे लागेल.जर केतू आपल्या कुंडलीत गुरु किंवा शुक्र ग्रहाच्या राशीत किंवा नक्षत्रात बसलेला असेल तर आपली परेशानी थोडी कमी होईल.

शुक्र अंतरदशा

(14:04:1977--13:12:1978)

हा काळ आपणास आनंददायी व भाग्यशाली होईल जर आपल्या कुंडलीत चंद्र आणि शुक्र एकत्र वृषभ राशीत बसलेले असतील. जर आपल्या कुंडलीत शुक्र चंद्रापासून मोजलयावर केद्रात स्थित असेल तर हा काळ अत्यंत सुखमय असेल. आपले स्वास्थ्य उत्तम राहिल व आपण भिन्न लिंगी व्यक्तीबरोबर सुखपूर्वक जीवनाचा आनंद घ्याल. जर आपण वयस्कर असाल तर आपण कोणाच्या प्रेमात पडू शकाल आणि आपला विवाहही होउ शकतो. काव्य आणि संगीतामध्ये आपली रुची वाढेल आणि आपण महाग मनोरंजनाची साधने खरेदी कराल. जर आपण कलात्मक कार्यक्षेत्रात असाल तर आपणास सुयश मिळेल. आपल्या परीवारात शुभ कार्याचे आयोजन होईल व सामाजिक मिलनाचा आपण केंद्रबिंदू बनाल. आपण रोजगाराकरीता दूरचा प्रवास कराल. आपणास यात्रे दरम्यान सावधान रहावे लागेल कारण आपले धन चोरीस जाण्याची शक्यता आहे. जर आपले तुळ लग्न असेल तर हा लग्नपति आणि दशमपतिचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे, निश्चित रुपाने सन्मान मिळेल.

रवि अंतरदशा

(13:12:1978--14:06:1979)

यापैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत सुस्थितीत नसेल तर हा काळ आपणास चांगला जाणार नाही. आपले आरोग्य व्यवस्थित राहणार नाही. आपणास स्वास्थ्याची काळजी घ्यावी लागेल. आपण ताप आणि डोळ्यांच्या विकाराने त्रस्त व्हाल आणि जर चंद्र कुंडलीत अस्तंगत असेल तर आपले आरोग्य चिंतेचा विषय बनेल. जर रवी सुस्थितीत असेल तर आपणास प्रत्येक कार्यात यश मिळेल व सरकारी स्रोतापासून लाभ मिळेल. जर चंद्र कुंडलीत सुस्थितीत असेल तर हा काळ आपणास चांगलाअसेल आणि आपण विभिन्न कार्यातील लोकांशी मधुर संबंध प्रस्थापीत कराल आणि त्यांच्यापासून प्रत्यक्ष लाभ मिळवाल. परंतु रवी जर आपल्या कुंडलीत एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपण निराश व्हाल आणि मान सन्मानात घट होईल. जर चंद्र एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपणास बरीच निराशा येईल. जर आपले लग्न कुंभ असेल तर आपलेशत्रु परेशानी निर्माण करतील. जर आपले लग्न मकर असेल तर आपला जोडीदार परेशानी निर्माण करेल. जर आपले लग्न सिंह असेल तर आपले धन चिकीत्सेत व निरर्थक वाया जाईल.

मंगळ दशा

(14:06:1979--14:06:1986)

मंगळ अंतरदशा

(14:06:1979--10:11:1979)

जर आपल्या कुंडलीत मंगळ तुंगस्थ आहे किंवा स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात आहे अथवा आपल्या लग्नापासून दशम स्थानात स्थित होउन दिक् बल बनवत असेल तर हा काळ आपणास अत्यंत भाग्यशाली असेल. आपण प्रभावशाली स्थितीतून जाल, उत्पन्न वाढेल बरेच धन मिळवाल आणि नवीनसंपत्ती खरेदी कराल. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ चंद्राबरोबर स्थित असेल तर हा काळ आपणास धनाच्या बाबतीत चांगला असेल. जर कुंडलीत मंगळ ग्रस्त असेल तर आपण आपल्या वरिष्ठांसोबत संकटात पडण्याची शक्यता आहे आणि काही कारणांनी चिंतीत व्हाल. काही ईषाळू व्यक्ती नवीन संकटे उभारतील, आपण मित्रांची सहानूभूती घालवाल, आणि अपरिचीत लोकही

आपणास संकटात टाकतील. जर मंगळ शुभ स्थितीत असेल तर या संकटांची तिब्रता कमी होईल. जर मंगळ आपल्या कुंडलीत सहाव्या घरात स्थित असेल तर आपण स्पर्धात्मक परिक्षेत यश मिळवाल.जर आपल्या कुंडलीत मंगळ एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपण दुर्घटनाचे शिकार व्हाल. आपण पोलिसांच्या तावडीत सापडाल आणि मंगळ जर 8 व्या घरात स्थित असेल तर आपली परेशानी अजूनच वाढेल. जर मंगळ कुंभ राशीत स्थित असेल तर आपणास उच्च रक्तदाबाचा त्रास हाईल.

राहु अंतरदशा

(10:11:1979--28:11:1980)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कमीत कमी एक ग्रह जरी सुस्थितीत असेल तर हा काळ आपणास अनुकूल असेल अन्यथा निश्चित रूपाने चांगला नसेल. आपणास नेहमी डोकेदुखीचा त्रास होउ शकतो आणि कधी कधी तापही येउ शकतो. आपणास घातक रसायनांमुळे त्वचा रोग होउ शकतात. आपणास नेहमी वाईट व चारिष्याहीन लोकांपासून दूर रहावे लागेल हे एक लक्षात घेणे आवश्यक आहे. नाहीतर आपण संकटात पडू शकता आणि समाजात आपली पत घसरेल. आपणास पैशाच्या व्यवहारात सावधानी बाळगावी लागेल. त्यामुळे धनहानीची संभावना आहे. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर ग्रंथीच्या सूजेचे शिकार व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत हे दोन्ही ग्रह ग्रस्त असतील तर त्याने परिणाम निघून जाईल.

गुरु अंतरदशा

(28:11:1980--04:11:1981)

जर आपल्या कुंडलीत गुरु तुंगस्थ आहे किंवा स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात स्थित असेल तर हा काळ आपणास बराच भाग्यशाली असेल. आपण अनेक बाबतीत तेजीने उन्नती कराल. आपल्या चल अचल संपत्तीमध्ये वृद्धी होईल आणि नविन संपत्ती मिळवाल. जर आपले लग्न वृश्चिक किंवा मीन असेल तर आपण अधिकच भाग्यशाली बनाल. अन्यथा या दशेचा उत्तरार्ध याच्या पूर्वार्धापेक्षा अधिक लाभदायक असेल. पूर्वार्धात आपण वरिष्ठांबरोबर संकटात पडू शकता आणि काही ईर्ष्यावान व्यक्ती आपणास त्रास देतील. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ आणि गुरु परस्परांवर विपरीत दृष्टीपात करत असतील तर हा काळ अधिकच खराब जाईल. उत्तरार्धात आपणास ब-याच सुसंधी प्राप्त होतील आणि आपण प्रभावशाली व्यक्तीचा सहयोग आणि धन प्राप्त कराल. जर आपल्या कुंडलीत गुरु कुंभ राशीत स्थित असेल तर आपण उच्च रक्तदाबाचे शिकार व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत गुरु एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर संपत्तीच्या बाबतीत आपणास घमालक किंवा भाडेक-याबरोबर जोरदार भांडण होउ शकते ज्याकरीता पोलीसांची मदत घ्यावी लागेल. आपणास पोलीसांचे ध्यान वेधावे लागेल आणि वकीलाच्या संपर्कात रहावे लागेल.

शनि अंतरदशा

(04:11:1981--13:12:1982)

जर आपल्या कुंडलीत यापैकी कोणताही एक ग्रह प्रभावशाली स्थितीत असेल तर हा काळ आपणास व्यस्त आणि रचनात्मक कार्यात जाईल. जर आपले लग्न मेष असेल जसेकी हा लग्नपति आणि दशमपतिचे सम्मिलीत काळ आहे, आपण निश्चित रूपाने काही किंती मिळवाल आपला मान मर्यादा यात वृद्धी होईल. अन्यथा हा काळ दोन परस्पर विरोधी अशुभ ग्रहांच्या सम्मिलीताचा आहे, त्यामुळे आपणास सावधान रहावे लागेल. जर आपल्या कुंडलीत जर कोणती प्रतिकारी ग्रह युती उपस्थित नसेल तर हा काळ आपणास समस्याने ग्रस्त असेल. आपण अनेक विवादात सापडू शकता व ज्यामुळे अनेक वर्ष चालणा-या खटल्यात अडकाल. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ आणि शनी विपरीतअथवा परस्परावर दृष्टी टाकत असतील तर आपली परेशानी वाढू शकते. कार्यस्थळावरही

परिणाम होउन आपले शत्रु कारवाया करतील. आपण चिंतीत होउ शकता आणि जर आपण नोकरी करत असाल तर आपले पद आणि मान यात घट होईल. आपले घरगुती जीवनही शांतीमय आणि सुखमय राहणार नाही. जर आपण व्यवसाय करत असाल तर आपणास अचानक हानी पोहचेल.

बुध अंतरदशा

(13:12:1982--10:12:1983)

हा काळ अनेक बाबतीत भाग्यशाली असेल. आपण जर स्पर्धात्मक परिक्षेमध्ये भाग घेत असाल किंवा नोकरीकरीता अर्ज दाखल करत असाल तर निश्चितच आपणास यश मिळेल. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक क्षेत्रात कार्यरत असाल तर हमखास यश लाभेल. झर आपण विज्ञान किंवा औद्योगिकक्षेत्रात असाल तर तेथेही नाव कमवू शकता. जर बुध आणि मंगळ परस्परांवर प्रतिकूल दृष्टी टाकत असतील तर आपली रुची कायद्याचा अभ्यास करण्याकडे असेल. जर आपण खेळाच्याक्षेत्रात असाल तर प्रगती कराल. आपले आय वाढेल व राहणीमान उंचावेल. आपण नवीन लोकांबरोबर मधुर संबंध प्रस्थापीत कराल आणि समाजात आपली किर्ता होईल. झर आपल्या कुंडलीतबुध अशुभ ग्रहाने ग्रसित असेल तर आपणात वादविवाद करण्याचा गुण असेल. याशिवाय आपण विभाारी प्राण्याच्या दंशामुळे प्रभावीत होउ शकता.

केतु अंतरदशा

(10:12:1983--08:05:1984)

ही दशा खूपच उग्र आणि आग्नेय ग्रहांची आहे. जेथे एक आगीचे संचालन करतो तर दूसरा धुराचे. त्यामुळे जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी एक जरी ग्रह सुस्थितीत असेल तर हा काळ परेशानी निर्माण करू शकतो. जसेकी हा काळ आपणास चांगला जाणार नाही, त्यामुळे या दशेदरम्यानसावधान रहावे लागेल. आपण पारीवारीक कलहात अडकाल आणि आपले शुभचिंतक शत्रुतापूर्ण व्यवहार करतील. आपली शत्रुंची संख्या वाढेल, विशेषकरून महिलांची सहानुभूती घालवाल. आपण मानसिक तणाव ग्रस्त होउन उग्र बनाल. जर मंगळ कुंडलीत एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपणास आग किंवा वीजेपासून धोका असू शकतो. जर कुंडलीत केतू एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर चुकीचे औषध किंवा विभाारी पदार्थांच्या सेवनाने आरोग्यावर दुष्परिणाम होतील.

शुक्र अंतरदशा

(08:05:1984--08:07:1985)

हा काळ आपणास सुखदायी असेल. आपण या दशेदरम्यान आनंदी रहाल. आपल्या मित्र आणि परिचितांमध्ये वृद्धी होईल. आपणास विरुद्ध लिंगी व्यक्तीचा सहवास आवडेल व जर आपण अविवाहित असाल तर आपण प्रेम प्रकरणात गुंताल. आपण सण, सामाजिक उत्सव,पर्यटन इत्यादिचाआनंद घ्याल. आपल्या खुशीत वाढ होईल जर कुंडलीत शुक्र तुंगस्थ किंवा स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात स्थित असेल. जेव्हाकी हा अस्तंगत नाही व शनीने ग्रस्तही नाही तर आपली खुशी कमी होउ शकते जर शुक्र अस्तंगत असेल किंवा शनीने ग्रस्त असेल. जर गुरु कोणत्याही प्रकाराने मंगळ किंवा शुक्राला प्रभावीत करत असेल तर सर्व बाजूने आपली प्रगती होईल. जर शुक्र आपल्या कुंडलीत एक किंवा अधिक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपण फोड आणि जखम किंवा त्वचा रोगाचे शिकार व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ आणि शुक्र एकत्रित असतील आणि दोन्ही ग्रह कोणत्यातरी अशुभ ग्रहाची राशी किंवा नक्षत्रात स्थित असेल तर आपणास सावध राहिले पाहीजे. कारण आपण कोणत्यातरी अनैतिक संबंधात अडकवू शकता आणि हा आपल्या परिवाराच्या मान मर्यादेत घट निर्माण करू शकतो.

रवि अंतरदशा

(08:07:1985--13:11:1985)

जरी ही दशा आग्नेय ग्रहांची असली तरी जास्त खराब असणार नाही. कारण हे दोन ग्रह परस्परांचे मित्र आहेत. सूर्य सत्ता सूचित करतो तर मंगळ अधिकार. या दोन्ही ग्रहांचा एकत्रित परिणाम अनेक बाबतीत लाभ देईल. आपण प्रभावशाली व्यक्तीच्या सानिध्यात याल व त्यांच्यापासून प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रितीने लाभ प्राप्त कराल. जर यापैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत असेल तर अजूनही जास्त लाभ मिळेल. स्वास्थ्याच्या बाबतीत आपण भाग्यशाली नसाल. शरीरात अंतर्गत तापामुळे आपणास बरे वाटणार नाही, प्रखर तापानेही पीडित होउ शकता. आपल्या जोडीदाराचे स्वास्थ्य चांगले राहणार नाही व ते रागीट स्वभावाचे असू शकतात. जर आपल्या कुंडलीतमंगळ ग्रस्त असेल तर शत्रुंच्या संख्येत वाढ होईल आणि प्रभावशाली व्यक्तीच्या कोपाचे कारण बनू शकता. तर आपल्या कुंडलीत रवी ग्रस्त असेल तर आपणावर वरिष्ठांची खपा मर्जी राहिलकिंवा आगीपासून नुकसान होउ शकते.

चंद्र अंतरदशा

(13:11:1985--14:06:1986)

हा काळ आपणास बराच लाभदायक व आनंददायक असेल. जर मंगळ आणि चंद्र आपल्या कुंडलीत एकत्र आहेत आणि यापैकी कोणीही अस्तंगत नसेल तर अधिक लाभदायक असेल. आपण महागड्या वस्तू किंवा संपत्तीचा व्यय कराल ज्यामुळे आपले राहणीमान सुधारेल. आपण घराच्या नूतनीकरीता किंवा आंतरिक सजावटीकरीता खर्च कराल. आपली सामाजिक आणि मानसिक शांती कायम राहिल. या दशेच्या शेवटी उत्पन्नात कमी येउ शकते विनाकारण नुकसान होउ शकते. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ एक किंवा अधिक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपण काही लोकांबरोबर संपत्तीच्या वादात अडकाल. काही लोक ज्यांचा प्रभावशाली लोकांबरोबर संपर्क असेल ते तुमच्या धनातील काही हिस्साघेण्याचा प्रयत्न करतील. जर आपल्या कुंडलीत चंद्र एक किंवा एकापेक्षा अधिक अशुभ ग्रहाने ग्रस्त असेल तर आपले निम्न सामाजिक आणि आर्थिक स्तरातील लोकांबरोबर भांडण होईल. जर दोन्ही ग्रह ग्रस्त असतील तर आपणास परेशानी होउ शकते आणि मान मर्यादा कमी होउ शकते.

राहु दशा

(14:06:1986--13:06:2004)

राहु अंतरदशा

(14:06:1986--24:02:1989)

जर राहु आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहु जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहु, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहुची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहु 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

जर राहु आपल्या कुंडलीत वृषभ अथवा कन्या किंवा कुंभ राशीत बसलेला आहे आणि हा स्वनक्षत्रातही नसेल तर काळ आपणास कष्टदायी जाऊ शकतो. आपल्या जोडीदाराचे आरोग्य चांगले राहणार नाही, आपले घर आणि कार्यालय दोन्ही जागी कलह होत राहतील. परिस्थितीच्या बदलावामुळे प्रिय व्यक्तीपासून दुरावाल आणि विपरीत परिस्थितीमुळे स्थान परिवर्तन करावे लागेल. आपले आरोग्य चांगले राहणार नाही, आणि आपण अशा प्रकारच्या व्याधीने ग्रस्त व्हाल ज्याचा

इलाज करणे अवघड जाईल. काही असामाजिक व्यक्ती आपणावा खोटा आरोप करुन आपली प्रतिमाखराब करतील. खोटी योजना आखून आपणास धोका देऊ शकतात. आपण भ्रमीष्ट होउन कायकरावे किंवा काय करु नये याच्या विचारात पडाल. जर राहू अशुभ ग्रहाच्या प्रभावाखाली असेल तर आपण चुकीचे औषध किंवा विभाारी पदार्थांचे सेवन केल्याने संकटात पडाल. आपली काही गोपनीयता लोकांच्या समोर येउन आपणास लाजीरवाने व्हावे लागेल.

गुरू अंतरदशा

(24:02:1989--20:07:1991)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

हा काळ आपणास सुखदायी जाईल. आपले आरोग्य चांगले राहिल व चिंतामुक्त व्हाल. आपण सर्व कार्यात यश संपादन कराल आणि वरिष्ठ अधिकारी आणि सरकारी कर्मचारी यांच्याकडून प्रत्यक्ष सहयोग आणि अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कराल. आपल्या काही महत्वाकांक्षा पूर्ण होतील. आपल्या उत्पन्नातवाढ होउन राहणीमान उंचावेल. आपला मित्र व परिचीतांचा परीवार वाढेल. जर आपण विवाहित असाल तर आपण प्रेम प्रकरणात पडाल आणि आपला विवाहही होउ शकतो. जर आपण विवाहित असाल व संतान प्राप्तीची आशा करत असाल तर आपणास संताप प्राप्ती होईल. विवाह किंवा संतानप्राप्ती नंतर आपल्या परीवारात वृद्धी होउ शकते. आपल्या परीवारात शुभ कार्यांचे आयोजन होईल. आपले पारीवारीक जीवन शांतीमय आणि सुखमय व्यतीत होईल.

शनि अंतरदशा

(20:07:1991--26:05:1994)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

हा दोन अशुभ ग्रहांच्या संयुक्त रूपाचा काळ आहे. जर यार्पकी एक जरी ग्रह कुंडलीत प्रभावी स्थितीत नसेल तर हा काळ खूप समस्यांनी भरलेला असेल. आपण वादविवाद किंवा कलहात अडकाल. आपले शत्रू वाढतील आणि आपणास त्रास देतील. आपले आरोग्य चांगले राहणार नाही, आपण पित्त, इत्यादि रोगांचे शिकार व्हाल. आपला खर्च मिळकतीपेक्षा अधिक होईल ज्यामुळे आपण दिलेला शब्द पाळण्यात समर्थ राहणार नाहीत. यामुळे दुविधामध्ये सापडाल आणि मानसीक तणाव निर्माण होईल. जर यापैकी एक ग्रह 8 व्या घरात बसलेला असेल तर जोडीदाराचे आरोग्य चांगले राहणार नाही. परंतु हे दोन ग्रह ण्कत्रित 7 व्या घरात बसलेले असतील तर आपल्या पेशापासून फायदा होउ शकतो. आपण दुस-या धर्माच्या किंवा देशाच्या व्यक्तीबरोबर भागीदारीत काम करुन

लाभ प्राप्त करु शकता.

बुध अंतरदशा

(26:05:1994--13:12:1996)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

या दशेच्या पहील्या 2/3 भागा दरम्यान आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक कार्यात व्यस्त रहाल. जर राहू आणि बुध दोन ग्रह परस्पर केंद्रात बसलेले असतील तर आपण शैक्षणिक क्षेत्रात पदक प्राप्त करु शकतात. आपले स्वास्थ्य चांगले राहिल आणि आपण चिंतामुक्त व्हाल. आपण आपल्या कार्यात गंभीर होउन अनेक मार्गाने धनप्राप्ती मिळवाल. तसेच इतर लोकांकडूनही संपत्ती मिळवाल. जर आपण कोणत्या वित्तीय संस्थेकडून कर्ज घेणार असाल तर ते मिळेल. जर यापैकी एक ग्रह 5 व्या स्थानात बसलेला असेल तर आपण प्रेमात पडू शकता परंतु नंतर निराश व्हाल. या दशेच्या शेवटचा 1/3 भाग आपणास भारी पडेल आणि आपण दुःखी व्हाल. आपण मित्राची सहानुभूती गमावू शकता आणि आपल्या घमेंडी व्यवहाराने आपले मित्र, परिचीत आणि सहकारी बरोबर शत्रुता पत्कराल.

केतु अंतरदशा

(13:12:1996--31:12:1997)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

जर केतू वृश्चिक राशीत किंवा स्वनक्षत्रात नसेल तर हा काळ आपल्याकरीता चांगला असणार नाही. आपल्या जोडीदारामुळे आपण समस्यांचा सामना कराल आणि आपले संततिचे स्वास्थ्य चांगले न राहिल्याने चिंतीत व्हाल. आपल्या वरिष्ठाची कोप दृष्टी राहिल किंवा आपण अपरिचीत व्यक्तींबरोबर वाद विवादात सापडाल. आपले आरोग्य व्यवस्थित राहणार नाही आणि शरीरावर सूज येउन वेदना होतील. आपणास घातक रसायने, चुकीची औषधे, साप इत्यादिपासून बचाव करावा लागेल. जर राहू व केतू नक्षत्र बदलावात सामील असतील तर आपणास अतिरिक्त सावधानी बाळगावी लागेल. नाहीतर आपण दुर्घटनाचे शिकार होउ शकता. आपल्या जोडीदाराबरोबर आपला वाद होउ शकतो आणि आपले सासरचे लोक विरोधी होउ शकतात किंवा आपण खटल्यात अडकू शकता. जर राहू आणि केतू दोन ग्रह शुभ ग्रहाच्या प्रभावाखाली असतील तर आपण आणि आपले भाग्य बाहेरच्या व्यक्तीपासून वाचवून अक्षरशः वाचाल.

शुक्र अंतरदशा

(31:12:1997--31:12:2000)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

हा समय आपणास अत्यंत आनंददायी जाईल. आपले भाग्य आपणावर मेहेरबान होईल. आपण वरिष्ठअधिका-यांकडून प्रत्यक्ष सहयोग किंवा अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कराल. आपण खानदानी पार्श्वभूमी असलेल्या व्यक्ती विशेषतः महिलांकडून सहयोग प्राप्त कराल. वेळ प्रसंगी इतर लोकांचाही आपणास सहयोग मिळेल. आपण व्यवसायात नवीन सहयोगी बनवाल त्यामुळे आपणास लाभ होईल. आपली धन संपत्ती वाढेल आणि आपले राहणीमान उंचावेल. तरीही आपणास सतर्क रहावे लागेल कारण काही ईर्ष्याळू व्यक्ती आपली प्रतिमा खराब करतील. आपला जोडीदार किंवा भिन्न लिंगी व्यक्ती आपणास विशेष खुशी देतील. जर आपण अविवाहित असाल आणि प्रेमात पडलेले असाल तर आपला विवाह धनवान परीवारातील व्यक्तीशी होईल.

रवि अंतरदशा

(31:12:2000--25:11:2001)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

या दोन्ही पैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर या परस्पर विरोधी ग्रहांचा हा काळ आपणास कष्टकारक जाऊ शकतो. जर दोन्ही ग्रह आपल्या कुंडलीत 10 व्या, 8 व्या किंवा 5 व्या घरात बसलेला असेल आपणास पेशामध्ये धक्का पोहचेल आणि अपयश किंवा बदनामीचे शिकार व्हाल व ज्यामुळे आपली प्रतिमा मलिन होईल. आपण उच्च वर्गीय लोकांकडून लाभ प्राप्त कराल परंतु ते आपल्याकडून काम करून घेण्याकरीता असे करत असतील तर सावधान रहावे, ते तसे जाहीर करणार नाहीत. याशिवाय पारीवारीक स्तरावर आपली परेशानी वाढेल आणि जोडीदार आणि संततिबरोबर संदेह उत्पन्न होऊ शकतो. या दशे दरम्यान आपली बदली होऊ शकते. आपल्याला घर देखील बदलावे लागू शकते.

चंद्र अंतरदशा

(25:11:2001--26:05:2003)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा

काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

जर या दोन्ही पैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर या दोन ग्रहांचा संयुक्त काळ आपणास कष्टकारक जाऊ शकतो. जर दोन्ही ग्रह एकत्र वृषभ राशीत बसलेले असतील, स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात नसेल तर आपण भ्रामिक स्थितीत जाऊ शकता आणि मानसिक तनावाने राहू शकता. आपले स्वास्थ्य व्यवस्थित राहू शकणार नाही आपणास शारीरिक वेदना होतील. काही जखमा होण्याची संभावना आहे. आपण जवळच्या व्यक्तीच्या वियोगाने दुःखी व्हाल. याशिवाय आपण जोडीदाराबरोबर किंवा भागीदाराबरोबर चुकीने भारी नुकसान सोसाल. याशिवाय आपणास मजबूरीने घर सोडावे लागेल किंवा अप्रत्याशित घटनेमुळे आपली मातृभूमी सोडावी लागू शकते. ज्यावर आपले काही चालणार नाही.

मंगळ अंतरदशा

(26:05:2003--13:06:2004)

जर राहू आपल्या कुंडलीत कोणत्यातरी राशीत एकटाच बसला आहे, त्याचा राशीपती शुभ ग्रह आहे आणि शुभ स्थितीत असेल तर (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून), तर या दशेदरम्यान आपणास शुभ फळ प्राप्त होणार नाही. परंतु जर राहू जर अशुभ ग्रहाबरोबर बसलेला किंवा त्याचा राशीपती अशुभ असेल आणि त्रिक स्थानात असेल (6 वे 8 वे किंवा 12 वे स्थान सोडून). जर राहू, रवी, किंवा चंद्र याशिवाय दुस-या ग्रहाजवळ असेल तर (3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत) तर राहूची दशा काही विपरीत आणि असामान्य परिणाम देऊ शकते. जर राहू 11 व्या स्थानात शुभ ग्रहाबरोबर स्थित असेल किंवा 11 व्या स्थानाच्या स्वामीबरोबर स्थित असेल तर हा बरेच धन देईल.

जर या दोन्ही पैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर या दोन अशुभ ग्रहांचा काळ आपणास कष्टकारक जाऊ शकतो. आपण अचानक संकटात पडाल आणि काय करावे किंवा करू नये या विवंचनेत पडाल. आपण काहीसे बेजबाबदार व्हाल, ज्याने आपणास छोट्या मोठ्या समस्या येऊ शकतात. मूर्खपणामुळे आपण गुंड किंवा बदमाश लोकाबरोबर वाद विवादात पडू शकता आणि शत्रूच्या मत्सरामुळे आपणास शारीरिक कष्टही सहन करावे लागू शकतात. आपणास चिंता किंवा मानसिक तणाव होऊ शकतो आणि आपण जखमी झाल्यामुळे किंवा जळाल्यामुळे आपणास कष्टाचा सामना करावा लागेल. जर यातील एक ग्रह गुरु किंवा शुक्राच्या प्रभावाखाली असेल तर परिस्थितीत सुधारणा होईल.

गुरु दशा

(13:06:2004--13:06:2020)

गुरु अंतरदशा

(13:06:2004--01:08:2006)

आपल्या उन्नतीचा प्रारंभ होईल आणि आपले भाग्य आपणावर खुश असेल. आपण ईश्वराच्या संरक्षणाखाली रहाल. आपल्या प्रती सर्वसामान्य लोकाची सहानुभूती वाढून बरीच मदत करतील. गुरु व्दारा शासित लोक जसे पुजारी, धर्मपरायाण, वकील, शिक्षक आणि वित्तिय संस्थेमध्ये कार्यरत असलेले लोक, जरूर पडल्यावर कोणतीही प्रकारची मदत करण्यास तयार असतील.जर कुंडलीत गुरुप्रभावशाली स्थितीत असेल तर आपली स्थिती चांगली राहिल. नोकरी किंवा व्यापारात अपार यश मिळेल, पत आणि पदामध्ये वृद्धी होईल आणि आपली प्राप्ती वाढेल. आपले पारीवारीक जीवन समृद्धीने भरलेले असेल. आपले आरोग्य उत्तम राहिल व संतान आपणास खुशी देतील. आपली

विश्वसनीयता आणि मान सन्मानात वाढ होईल. परंतु आपले लग्न वृषभ अथवा सिंह आहे तर गुरु आपल्या कुंडलीत अष्टमपति आहे ज्यामुळे आपणास परेशानीचा सामना करावा लागेल. आपले आरोग्य बिघडू शकते किंवा काही दुर्घटनांचे शिकार होउ शकता.

शनि अंतरदशा

(01:08:2006--12:02:2009)

जर यातील एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत आहे तो हा समय आपल्याकरीता चांगला असाल. आपल्या धन संपत्तीत वृद्धी होईल. जर आपण अंगदुखी किंवा गाटी अशा समस्यांचासामना करावा लागेल. कार्यस्थळीही परेशानीचा सामना करावा लागेल. आपले उत्पन्नही कमीहोईल आणि दिलेला शब्द पाळू शकणार नाही. आपला जोडीदार किंवा व्यवसायीक सहयोगीच्या कारणामुळे व्यर्थ खर्च होउन हानी होईल. किंवा यापैकी एक समस्यास कारणीभूत होउ शकतात व आपण चिंतीत होउ शकता. जर आपल्या कुंडलीत यातील एकही ग्रह ग्रस्त नाही तर आपणास चांगले फळ मिळेल आणि खराब वेळ लवकर संपून जाईल. झा आपले लग्न कर्क किंवा सिंह असेलकिंवा 6 व्या स्थानाचा स्वामी आणि 8 व्या स्थानाचा स्वामीचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे आणि आपणास खूप सावधान राहिले पाहीजे अन्यथा आपला निकटच्या व्यक्तीबरोबर वाद विवाद होउशकतो जो शेवटपर्यंत तसेच राहिल.

बुध अंतरदशा

(12:02:2009--20:05:2011)

हा काळ आपणास अत्यंत आनंददायक असेल. सामान्य लोक आला सन्मान करतील आणि सहयोग करुन एकापेक्षा अधिक मार्गाने धनाची प्राप्ती होईल. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक क्षेत्रात कार्यरत असाल ता आपणास यश मिळेल किंवा असाधारण कार्याकरीता पदक मिळेल. जर आपण नोकरीत असाल तर आपला पदोन्नती होउ शकते. जर आपण व्यवसायाच्या क्षेत्रात असतील तर तेजीने पुढे जाल. जर आपण विवाहित असाल आणि संततिची अपेक्षा करत असाल तर लवकरच संतान प्राप्ती होईल. अनौपचारिक शिक्षण आणि कला विषयात आपली रुची वाढेल. आपल्या जवळ तांत्रिक ज्ञानही असेल ज्याचा आपण रोजगारीकरीता उपयोग कराल. जर आपले लग्न चर राशी मेष, कर्क, तुळ किंवा मकर राशीत असेल तर जसेकी हा 6 व्या घराचा स्वामी आणि 12 व्या घराचा स्वामीचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे. या दशे दरम्यान आपणास काही लोक जे उघडपणे किंवा गुप्तरूपाने आपल्याबरोबर शत्रुतापूर्ण व्यवहार करतील. आपणास परेशान करतील. किंवा आपण एखाद्या रोगाचे शिकार व्हाल.

केतु अंतरदशा

(20:05:2011--25:04:2012)

जर यापैकी एक ही ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल. कारण दशे दरम्यान अप्रत्यक्षित कारणामुळे आपणास समस्यांचा सामना करावा लागेल. समस्या काही काळाकरीता असू शकतात आणि त्याचा प्रभाव अस्थिर होउ शकतो. शक्यतो आपण निम्न वर्गातील व विदेशी लोकांशी जास्त संबंध जुळवू नये नाहीतर आपणास अनेक परेशानीचा सामना करावा लागेल आणि धनहानी होउ शकते. आपले जीवनसाथीचे आरोग्य आपणास चिंतीत करेल अथवा आपल्या व्यावसायीक सहयोगी बरोबर वाद विवाद किंवा अलगाव होउ शकतो. आपणास पेशामध्ये धक्का लागू शकतो आणि आपणास परिस्थितीनुसार निवासस्थान बदलावे लागेल. आपले नातेवाईक आणि आपले मित्र मदतगार साबित होणार नाहीत, ते आपणास दोषी समजून सोडून जाऊ शकतात.

शुक्र अंतरदशा

(25:04:2012--25:12:2014)

हा दोन अत्यंत शुभ ग्रहांचा सम्मिलित काळ आहे. हा आपणास अत्यंत भाग्यशाली असेल आणि निश्चितपणे लाभदायक असेल. आपले आरोग्य चांगले राहिल व घरगुती जीवन सुखमय व आनंदमय जाईल. आपले मित्र आणि नातेवाईकांबरोबर आपले संबंध मधुर राहतील. आपल्या परिवारात शुभ कार्यांचे आयोजन होईल व आपण त्याचे आकर्षण बिंदू राहाल. रोजगाराच्या क्षेत्रात आपणास यश मिळेल व आपले उत्पन्न वाढेल. आपल्या राहणीमानाचा स्तर उच्च असेल. जर आपले लग्न मेष किंवा वृश्चिक असेल तर हा दुस-या स्थानाचा स्वामी व बाराव्या स्थानाचा स्वामी यांचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे. ज्यामुळे आपले उत्पन्न जास्त असेल परंतु खर्चातही तशीच वाढ होईल आणि एका झटक्यात आपली सारी संपत्ती संपून जाईल. परंतु आले लग्न जर सिंह अथवा मीन असेल तर हा तिस-या घराचा स्वामी आणि आठव्या घराचा स्वामी यांचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे आणि आपण काही गंभीर आजाराने त्रस्त व्हाल.

रवि अंतरदशा

(25:12:2014--13:10:2015)

जर आपल्या कुंडलीत गुरु अस्तंगत नसेल तर हा काळ आपणास आनंददायी असेल व अनेक बाबतीत आपण भाग्यशाली बनाव. जुन्या कार्यात सफलता मिळविण्याकरीता हा उत्कृष्ट काळ आहे. आपण काही प्रभावशाली व्यक्तीच्या संपर्कात याल त्यामुळे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष लाभ होईल. आपली विशेष योग्यता आणि कार्याकरीता आपला सन्मान होईल आणि गुरुच्या शुभ प्रभावामुळे इतर लोक मदत करतील. समाजात आपणास मान सन्मान आणि विश्वसनियता वाढेल. जर आपण विवाहित असाल व संतान प्राप्तीची आशा करत असाल तर पुत्र प्राप्ती होईल. तरीही आपणास आरोग्याविषयी समस्यांचा सामना करावा लागेल. शरीराचा काही हिस्सा रोगाने प्रभावीत होउ शकतो आणि त्यामुळे आपली शारीरिक शक्ती कमी होउ शकते. परंतु उपचाराने आपणास लवकर बरे वाटेल. परंतु कुंडलीत गुरु अस्तंगत असेल तर डोळ्यांसंबंधी किंवा इतर आरोग्यविषयक परेशानी होउ शकते. जर आपले सिंह लग्न आहे, जसेकी लग्नपति आणि अष्टमपतिचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे, आपण दुर्घटनांचे शिकार व्हाल किंवा स्वास्थ्य संबंधी समस्यांचा सामना करावा लागेल.

चंद्र अंतरदशा

(13:10:2015--12:02:2017)

हा काळ आपणास आनंददायी असेल. जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी एक जरी ग्रह जर प्रभावशाली स्थितीत असेल व चंद्र शुक्ल पक्षात असेल तर हा काळ आपणास अधिक आनंददायी असेल. आपण मागे केलेल्या शुभ कार्यामुळे आणि प्रयत्नांमुळे आपणास यश मिळेल. रोजगाराच्या क्षेत्रात उन्नती होईल व आपण नविन संपत्ती खरेदी कराल व आपले घरगुती जीवन सुखमय आणि शांतीमय होईल व काही महीला व आपले संतान आपणास खुशी देतील. धार्मिक कार्यांच्या प्रती आपली रुची वाढेल व निरंतर धार्मिक अनुष्ठान कराल. जर आपण उच्च व्यावसायिक शिक्षणास परदेशात जाऊ इच्छित असाल तर हा काळ अत्यंत शुभ आहे. जर आपले लग्न मिथुन असेल तर जसेकी हा काळ दोन मारक ग्रहांचा दुस-या स्थानाचा स्वामी आणि सातव्या स्थानाचा स्वामी यांचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे, आपण आरोग्यासंबंधी समस्या किंवा दुर्घटनांचे शिकार व्हाल.

मंगळ अंतरदशा

(12:02:2017--19:01:2018)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल कारण या दशे दरम्यान काही अप्रत्यक्षित मार्गाने उत्पन्न समस्यांचा सामना करावा लागेल. आपणास मोठे अनेक बाधा निर्माण होतील, चोरी, विश्वासघात यामुळे

धनाची हानी होईल आणि परिस्थितीवश आपले जवळचे नातेवाईक किंवा मित्रांबरोबर अलगाव होउ शकतो.याशिवाय आपणास आपले स्वास्थ्याच्या संबंधीत अनेक परेशानीचा सामना करावा लागेल. आपण संपत्तीच्या संबंधीत वादात अडकू शकता आणि आपला अधिकार कायम करण्याकरीता अनेक कष्टांचा सामना करावा लागेल. आपली चूक नसतानाही आपण लोकांचा सहयोग हरवू शकता आणि परिस्थितीमुळे घृणा निर्माण होउन आपले निवास स्थान बदलू शकता. जर आपले लग्न वृश्चिक किंवाधनु आहे तर लग्नपति आणि पाचव्या स्थानाचा स्वामी यांचे सम्मिलित रुपाचा काळ आहे आणि आपले जर मेष किंवा मीन लग्न असेल तर हा लग्नपती आणि नवव्या स्थानाचा स्वामी यांचा संयुक्तकाळ आहे. दोन्ही स्थितीत रोजगाराच्या क्षेत्रात आपणास आशादायी यश प्राप्त होईल.

राहु अंतरदशा

(19:01:2018--13:06:2020)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल कारण या दशे दरम्यान काही अप्रत्ययशित मार्गाने उत्पन्न बाधांचासामना करावा लागेल. या समस्या काही काळाकरीता असतील व यांचा प्रभाव अस्थिर होउ शकतो. आपणास असामाजिक आणि संदेहात्मक पार्श्वभूमी असणा—या लोकांपासून दूर रहावे लागेल आणि नवीन परिचीतांवर विश्वास केला नाही पाहीजे. नाही तर आपण अडचणीत पडाल आणि धन हानी होउ शकते. जसेकी हा काळ आपणास शुभ नाही, आपणास हे समजले पाहीजे की प्रत्येक चकाकणारी वस्तू सोन नसते. आपणास धन निवेश किंवा जुगार यापासून जपले पाहीजे. काही कपटीलोक चलाखीने आपले शोषण करण्याचा प्रयत्न करतील. जर आपल्या कुंडलीत यापैकी एखादाग्रह ग्रस्त असेल तर आपल्या नातेवाईकांसोबत छोटे मोटे वाद विवाद होउ शकतात आणि आपणास धन हानी होउ शकते.

शनि दशा

(13:06:2020--14:06:2039)

शनि अंतरदशा

(13:06:2020--17:06:2023)

जर आपल्या कुंडलीत शनी प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर हा काळ आपणास अत्यंत कष्टाचा जाईल. आपण एखाद्या रोगाचे शिकार व्हाल. आपले काही नातेवाईक ज्यांचा व्यवहार आपल्या प्रती शत्रुतापूर्ण असू शकतो आणि ते धन संपत्तीची हानी करण्याचा प्रयत्न करतील किंवा त्यांच्यामुळे संपत्तीच्या बाबतीत वाद विवादात अडकू शकता. आपल्या पेशातील क्षेत्रात आपणास अनेक अडचणीचा सामना करावा लागेल. जर आपण व्यावसायीक असाल तर त्यात मंदी येईल. जर आपण रोजगाराच्या क्षेत्रात असाल तर आपणास चुका शोधणारे कडक वरिष्ठ अधिका—यांच्या कोपास सामोरे जावे लागेल. अप्रत्याशित घटना आणि परिस्थितीत विपरीत बदलावामुळे आपल्या प्रगतीची सुसंधी गमवाल. याशिवाय आपल्या जवळच्या संबंधीताबरोबर आपले संबंध विघडून आपण दुःखी व्हाल. जर आपले मिथुन लग्न किंवा कर्क लग्न असेल तर हा काळ अधिकच खराब असेल कारण या स्थितीत शनी अष्टमपती असेल. परंतु जर आपले आपले तुळ किंवा कुंभ किंवा मकर असेल, आपल्या कुंडलीत शनी तुंगस्थ किंवा स्वनक्षत्र किंवा स्वराशीत असेल तर आपणास निश्चितपणे काही शुभ परिणाम प्राप्त होउ शकतात. जर आपल्या कुंडलीत लग्नाची रास तुळ आणि शनीची रास मकर असेल ता या दशे दरम्यान अवश्यही आपली प्रतिष्ठा वाढेल.

बुध अंतरदशा

(17:06:2023--24:02:2026)

हा काळ आपणास अतिउत्तम असेल. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक क्षेत्राशी संलग्न असाल

तर आपणास आशादायक यश प्राप्त होईल. आपणास आपल्या आवडीच्या विषयाची खोलवर माहिती असेल आणि आपण बरेच बुद्धीमान आणि विवेकशील व्हाल. आपल्या एखादा नातेवाईकास विशेष यशप्राप्त होईल ज्यामुळे आपणास अप्रत्यक्ष रूपाने फायदा होईल. आपल्या पेशाच्या क्षेत्रात आपण बरीच प्रगती कराल. आपणास वरिष्ठ अधिका-यांकडून सहयोग आणि लाभ प्राप्त होईल आणि आपली प्राप्ती वाढेल. जर आपण व्यापाराच्या क्षेत्रात असाल तर नवीन क्षेत्रात परिवर्तनाची संधी मिळेल, आपण बरीच धन संपत्ती जमवाल. आपल्या संततिची शैक्षणिक क्षेत्रातील प्रगती गर्व आणि खुशीचे कारण बनेल. जर आपले लग्न मिथुन असेल तर आपणास काही अप्रत्याशित अडचणींचा सामना करावा लागेल. कारण हा 1 ल्या व 8 व्या स्थानाचा संयुक्त स्वामी आहे. जर आपले लग्न सिंह असेल तर जसेकी हा दोन मारक ग्रह दुस-या घराचा स्वामी आणि सातव्या घराचा स्वामी यांचेसंयुक्त रुपाचा काळ आहे, आपण आरोग्य संबंधाने त्रस्त असाल.

केतु अंतरदशा

(24:02:2026--05:04:2027)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल कारण या दशे दरम्यान काही अप्रत्ययशित मार्गाने उत्पन्न बाधांचासामना करावा लागेल. या समस्या काही काळाकरीता असतील व यांचा प्रभाव अस्थिर होउ शकतो. आपणास कलहांचा सामना करावा लागेल आणि भांडण आपले परिवार तोडू शकतो. आपली संतान विशेषकरून आपले पुत्र आपणाबरोबर विद्रोह करू शकतात आणि शांत करणे अवघड होईल. अचानक आपले उत्पन्न कमी होउ शकते. आपली काही हानी होण्याची संभावना असेल किंवा यामुळे पैशाच्या कमतरतेमुळे आपला शब्द पाळू शकणार नाही. आपल्या शरीराच्या एखाद्या हिश्यात विष पसरू शकते व पित्त संबंधी तक्रार उत्पन्न शकते. आपणास डाव्या पायावर किंवा टाचेवर गाट किंवा सूज येउ शकते.

शुक्र अंतरदशा

(05:04:2027--05:06:2030)

हा काळ बराच बाबतीत बरेच भाग्यशाली असेल. आपण अनेक बाधा पार कराल आपले शत्रु पूर्ण दबावाखाली राहतील. आपण अनेक लोकांचे ध्यान आपणाकडे खेचून घ्याल व आणि वरिष्ठ अधिका-यांचा सहयोग व लाभ प्राप्त कराल. जर आपण नोकरी शोधत असाल तर आपणास अनेक सुसंधी लाभतील. आपले उत्पन्न वाढेल व आपले राहणीमान उंचावेल. आपण भिन्न लिंगी व्यक्तीच्या संपर्कात याल व प्रेम बंधनात अडकाल आणि आपला विवाह ही होउ शकतो. किंवा आपल्या परीवारात शिशुचा जन्म किंवा विवाह संख्येत वृद्धी होईल. आपणास नातेवाईकांकडून महागड्या भेट वस्तू प्राप्त होतील. आपण खुशीकरीता किंवा लाभाकरीता काही यात्रा कराल, सहलीचे आयोजन कराल किंवा सिनेमा किंवा सांस्कृतीक कार्यक्रम पाहू शकता.

रवि अंतरदशा

(05:06:2030--17:05:2031)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल हा काळ आपणास अडचणीचा जाईल. तरीही आपणास प्रभावशाली व्यक्तींचा सहवास आणि लाभ प्राप्त होईल परंतु आपण वरिष्ठांना आपले विरोधक बनविण्याचीही संभावना आहे, जे आपले घोर शत्रु बनू शकतात व आपणास समस्या निर्माण करू शकतात. आपले पद बदलेल किंवा असुविधाजनक जागी स्थलांतर करावे लागेल व आपणास आपलेनिवासस्थान बदलावे लागेल. आपणास पारीवारीक कलहांचा सामना करावा लागेल आणि आपला जोडीदार किंवा संततिविषयी मनात संदेह उत्पन्न होईल. आपला जोडीदाराबरोबर संबंध

तणावपूर्वक असेल आणि त्यांच्याविषयी चिंता असेल. जर आपले सिंह किंवा कुंभ असेल जर आपण अविवाहित असाल तर आपला विवाह होउ शकतो किंवा इतर धर्माच्या किंवा समुदायाच्या किंवा देशातील व्यक्तीबरोबर व्यापारीक संबंध प्रस्थापित करु शकता. जर आपले मकर लग्न असेल तर जसेकी लग्नपती आणि अष्टमपतीच्या सम्मिलित रुपाचा काळ असल्याने आपणास अप्रत्याशित अडचणींचा सामना करावा लागेल.

चंद्र अंतरदशा

(17:05:2031--16:12:2032)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल हा काळ आपणास अडचणीचा जाईल. आपले आरोग्य बिघडेल वपडण्यामुळे किंवा टक्कर लागल्यामुळे आपणास शारीरिक इजा होउ शकते. आपणास अंगदुखीचा त्रासजाणवेल व आपण उदास व्हाल. वाहन चालवताना विशेषकरून दुचाकी वाहन किंवा तेज चालणारी मशिन पासून आपणास खबरदारी घ्यावी लागेल. नाहीतर एखाद्या दुर्घटनेचे शिकार व्हाल. आपणास पारीवारीक कलहांचा सामना करावा लागेल, ज्यामुळे आपण दुःखी व्हाल आणि आपली मानसीक शांती भंग होउ शकते. परिस्थितीच्या बदलावामुळे आपणास आपले निवास स्थान सोडावे लागेल. आपला जोडीदार किंवा व्यावसायीक भागीदार आपली धनहानी करु शकतात. जर आपले लग्न कर्क किंवा मकर असेल आणि आपण अविवाहित वयस्कर असाल तर आपला विवाह होउ शकतो. किंवा आपण इतर समुदाय किंवा धर्म किंवा देशाच्या व्यक्तीबरोबर संबंध प्रस्थापीत करु शकता.

मंगळ अंतरदशा

(16:12:2032--25:01:2034)

हा दोन परस्पर संबंधीत अशुभ ग्रहांचा सम्मिलित काळ आहे. जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकीकोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल हा काळ आपणास अडचणीचा जाईल. आपण वाद विवादात अडकू शकता. आपल्या शत्रुंच्या संखेत वशक्तीत वृद्धी होउन अडचणी निर्माण करु शकतात. आपणास आपल्या पारीवारीक सदस्यांच्या कार्यात अपमानीत व्हावे लागेल. आपले आरोग्य बिघडू शकते व गाट इत्यादिपासून त्रस्त होउ शकता. जर आपल्या कुंडलीत या दोन्ही ग्रहांपैकी एक ग्रह जरी ग्रस्त असेल तर चोरी किंवा जाळयात अडकण्याची शक्यता असून त्यापासून हानी होईल. झसेकी आपण दिलेला शब्द पाळू शकणार नाही व त्यामुळे आपला मित्र शत्रु बनू शकतो. परिस्थितीच्या बदलावामुळे आपणास निवासस्थान किंवा नातेवाईक यांना सोडून जावे लागेल आणि विनाकारण सफलता प्राप्त न होता एका स्थानापासून दुस-या स्थानाकडे जावे लागेल.

राहु अंतरदशा

(25:01:2034--01:12:2036)

हा दोन परस्पर संबंधीत अशुभ ग्रहांचा सम्मिलित काळ आहे. जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकीकोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल हा काळ आपणास अडचणीचा जाईल परंतु त्यांचा प्रभाव अस्थिर असेल. आपणास आपल्या बोलण्यामुळे किंवा वादामुळे कोणी शत्रु होणार नाहीत याची खबरदारी घ्यावी लागेल. या दोन ग्रहांच्या संयुक्त प्रभावामुळे आपले शत्रु अनेक अडचणी निर्माण करतील. तसेच अपरिचीत किंवा परदेशी आपणाबरोबर शत्रुतापूर्ण व्यवहार करतील. पैशाच्या व्यवहारातही काळजी घेणे आवश्यक आहे आणि जुगार आणि निवेशापासून दूर रहावे लागेल. धनहानी किंवा किंवा दंडामुळे कलहाची संभावना आहे. आपणास शारीरिक कष्ट किंवा जखम होउ शकते. आपणास अवांछनीय किंवा असामाजीक

व्यक्तीपासून दूर रहावे लागेल नाहीतर आपण अडचणीत याल.

गुरु अंतरदशा

(01:12:2036--14:06:2039)

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत असेल तर आपणास हा काळ सामान्य रुपाने लाभदायक असेल. आपल्या वरिष्ठ अधिका-यांच्या सहयोगाने आपण आपले कार्य सिध्द कराल. आपल्या धन संपत्तीमध्ये वृद्धी होईल व राहणीमान उंचावेल. आपले आरोग्य सर्वसाधारण चांगले राहिल व आपल्या कार्यस्थळावरील सर्व बाधा पार पाडण्यात समर्थ व्हाल आणि आपल्या उत्पन्नात वाढ होईल. आपण दिलेला शब्द पाळाल व आपणावरील विश्वास व मान सन्मानातवाढ होईल. आपला जोडीदार व व्यावसायिक भागीदार आपणास सहयोग करतील ज्यामुळे आपण खूप खुश असाल. झर आपले कर्क किंवा सिंह लग्न असेल तर जसेकी हा सहाय्या स्थानाचा स्वामी आणि आटव्या स्वामी यांच्या सम्मिलित रुपाचा काळ आहे आपणास अतिरीक्त सावधानी बाळगावी लागेल अन्यथा आपल्या प्रिय व्यक्तीपासून धडा शिकावा लागेल. जो आपणास जीवनाच्या अंतापर्यंत लक्षात राहिल.

बुध दशा

(14:06:2039--13:06:2056)

बुध अंतरदशा

(14:06:2039--10:11:2041)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत बुध प्रभावशाली स्थितीत असेल व ग्रस्त नसेल तर हा काळ आपणास अत्यंत प्रगतीचा जाईल. शैक्षणिक क्षेत्र आणि उपयुक्त ज्ञान आणि सूचना आपणास आकर्षित करतील. जर आपण शैक्षणिक व बौद्धिक क्षेत्राशी संलग्न असाल किंवा कला क्षेत्रात असाल तर आपले कार्य स्तुतीलायक असेल. आपणास प्रतिष्ठा मिळू शकते व आपले बरेच अनुयायी होऊ शकतात. जर आपणव्यवसायाच्या क्षेत्रात असाल तर आपली तेजीने प्रगती होऊन उत्पन्नात वृद्धी होईल आणि कोणत्याही नवीन क्षेत्रात आपले नशीब अजमावून पाहू शकता व त्यामुळे आपणास बरेच धन प्राप्त होईल. आपले मित्र व परिचीत वाढतील, आपल्या शुभ चिंतकाकडून जरुरी सूचना प्राप्त करुन लाभ घ्याल. आपण आनंद व लाभाकरीता दूरची यात्रा कराल व तिथे प्रभावशाली व्यक्तीबरोबर मधुर संबंध प्रस्थापीत कराल. जा आपले मिथुन लग्न असेल तर हा काळ जीवनातील सर्वात आनंदी काळ असेल. याशिवाय आपले कन्या किंवा धनु लग्न असेल तरीही हा काळ आपणास सुखमयी जाईल.

परंतु जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रस्त असेल तर आपणास अनेक चिंता असतील आणि आपले मातेचे आरोग्य आपणास चिंतीत करेल.

केतु अंतरदशा

(10:11:2041--07:11:2042)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत केतू ना ही वृश्चिक राशीत, ना ही स्वनक्षत्रात स्थित असेल तर हा काळ आपणास बराच लाभदायक असू शकत नाही. आपणास अंतरिक दुर्बलता जाणवेल. जर आपल्या कुंडलीत केतू ग्रस्त असेल तर आपण एखाद्या रोगाने त्रस्त व्हाल आणि त्याचा इलाज सोपा नसेल. आपणास चुकीचा इलाज किंवा चुकीचे औषध प्राशन केल्याने अनेक अडचणाचा सामना करावा लागेल. आपणास नेहमी खाण्यापिण्यात सावधानी बाळगावी लागेल कारण चुकून विषारी पदार्थ सेवन करण्याची संभावना आहे. आपणास निम्न वर्गातील लोकांपासून दूर रहावे लागेल नाहीतर ते आपली प्रतिमा मलिन करू शकतात. आपले घरमालक, भाडेकरी किंवा शेजारी यांच्याबरोबर पटणार नाही आणि आपण मानसीक तणावाखाली जाऊ शकता. आपले निवासस्थान बदलावे लागेल किंवा इतरास जबरदस्तीने घर सोडण्यास प्रवृत्त करू शकता ज्यामुळे आपणास निंदा सहन करावी लागेल आणि आपली लोकप्रियता कमी होईल.

शुक्र अंतरदशा

(07:11:2042--07:09:2045)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ

शकते.

हा काळ आपणास अत्यंत आनंददायी जाईल. जर आपण परीवारापासून दूर रहात असाल तर परत जवळ याल आणि त्यामुळे परीवारातील सदस्य आणि मित्र खुश होतील. आपले मित्र आणि परीचीतांची संख्या वाढेल आणि समाजात लोकप्रियता वाढेल. आपण प्रभावी व्यक्तीबरोबर मधुर संबंध प्रस्थापीत कराल व आणि त्यामुळे आपणास लाभ होईल . जर आपण वयस्कर आणि अविवाहित असाल तर आपण प्रेमात पडू शकता आणि आपला विवाह होउ शकतो. जर आपण शैक्षणिक किंवा बौद्धिक कार्यात संलग्न असाल तर तर निश्चितपणे आपणास पदक मिळेल. जर आपण कलेच्या क्षेत्रात सक्रिय असाल तर आपणास मदत मिळेल. जर आपण नोकरी करत असाल तर आपणास प्रतिष्ठीत पद मिळेल. जर आपण व्यवसायात असाल तर आपला व्यवसायाची भरभराट होउन नवीन कार्यालय किंवा शाखा चालू करायची आहे त्याकरीता हा काळ उत्तम आहे. आपण खुशी आणि लाभ याकरीता यात्राचे आयोजन कराल व सहलीमध्ये सहभागी व्हाल.

रवि अंतरदशा

(07:09:2045--14:07:2046)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येउ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होउ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास या दशे दरम्यान काही समस्यांचा सामना करावा लागेल. आपण आणि आपला जोडीदार एखाद्या रोगानेग्रस्त व्हाल. जर आपले कुंभ लग्न असेल तर त्याचा प्रभाव अधिक असेल. कारण अशा स्थितीतसातव्या स्थानाचा स्वामी आणि आठव्या स्थानाचा स्वामी यांचा संयुक्त काळ असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध किंवा रवी ग्रस्त असेल तर आपण खटल्यात अडकू शकता आणि आपल्या विरुध्द विषगीय पडताळणी होउ शकते. आपणास बरेच साधान आणि सतर्क रहावे लागेल आणि आपले वरिष्ठ अधिकारी किंवा दंडात्मक अधिकारी यांचा विरोध यांचे विरोधी बनू नये. आपल्या संपर्कातील काही मत्सरी लोक आपणास शत्रु बनवून अडचणीत टाकू शकतात. आपणास बडबड्च वमागे निंदा करणा-या व्यक्तींपासून सावध राहीले पाहीजे. आपणास काही बाधांचाही सामना करावा लागेल. ज्यामुळे आपण चिंतीत व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत रवी आणि बुध ग्रस्त असतील तर आपणास जखमी होण्याचे किंवा आगीपासून नुकसान होण्याची शक्यता आहे.

चंद्र अंतरदशा

(14:07:2046--13:12:2047)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा

स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी कोणताही ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास या दशे दरम्यान काही समस्यांचा सामना करावा लागेल. आपला एखाद्या स्त्री बरोबर वाद होईल. ज्यामुळे ती आपली प्रतिमा मलिन करण्याचा प्रयत्न करेल. या बाबतीत आपणास अधिक सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध किंवा चंद्र एखाद्या नीचेच्या ग्रहाबरोबर किंवा तरुच्या प्रभावाखाली असेल तर आपले आरोग्य चांगले राहणार नाही आणि आपल्या ग्रंथीना सूज किंवा शरीरास जखम होऊन पीडित होऊ शकता. याशिवाय आपल्या मातेचे स्वास्थ्य आपणास चिंतीत करेल. जर आपले धनु लग्न असेल तर आपल्या समस्यात वृद्धी होईल कारण या स्थितीत हा सातव्या आणि आठव्या स्थानाचा स्वामीचे संयुक्त काळ आहे. जर आपले मकर लग्न असेल तर आपले काही नातेवाईक आपले विरोधी बनतील परंतु इतर काही बाबतीत आपण भाग्यशाली असाल. आपण खाजगी संस्थेमध्ये नोकरी प्राप्त करू शकता व आपला नवीन व्यवसाय सुरु करू शकता. आपल्या डोक्यात काही भ्रम निर्माण होतील परंतु आपण योग्य वेळी योग्य निर्णय घेण्यास सक्षम असाल.

मंगळ अंतरदशा

(13:12:2047--10:12:2048)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी एक ग्रह जरी प्रभावशाली नसेल तर हा काळ आपणास शुभजाणार नाही. आपणास या दशे दरम्यान अनेक समस्या आणि विवादांचा सामना करावा लागेल. समस्या वाढल्यामुळे आपले आरोग्य चांगले राहणार नाही आणि आपण अनेक प्रकारच्या रोगाने जसे

गंभीर दुखणे, रक्ता संबंधी रोग, कावीळ इत्यादिमुळे त्रस्त व्हाल. आपणास आपल्या स्वास्थ्याच्या प्रती आणि खाण्यापिण्याच्या बाबतीत अतिरिक्त सावधानी बाळगावी लागेल. आपणास आपल्या बोलण्यावर विशेष लक्ष द्यावे लागेल ज्यामुळे कोणाच्या भावना दुखावणार नाहीत विशेषकरून प्रभावी व्यक्ती ज्यांना काही हानी होणार नाही. नाही तर आपण संकटात सापडाल. जर आपले लग्न मेष असेल तर आपल्यावर नियंत्रण ठेवावेलागेल. आपणास वाहन चालविताना सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल नाहीतर एखाद्या दुर्घटनेचे शिकार होण्याची शक्यता आहे.

राहु अंतरदशा

(10:12:2048--29:06:2051)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहु पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी एक ग्रह जरी प्रभावशाली नसेल तर हा काळ आपणास शुभजाणार नाही. आपणास या दशे दरम्यान अनेक समस्या आणि विवादांचा सामना करावा लागेल. आपणास अनेक व्याधी जडतील, वाईट स्वप्ने पडतील, आपल्या इच्छा संपतील आणि आपले विचार कुमकवत होतील. प्रतिभाशाली व्यक्तीबरोबर आपला वाद होईल त्यामुळे आपले भारी नुकसान होईल. ते आपले जीवन दुःखी बनविण्याचा प्रयत्न करतील तात्कालीक स्वरूपात आपणास पदावरून काढले जाईल व असुविधाजनक जागेवर आपली बदली होईल. आपल्या कार्यस्थळीही वाईट परिणाम होऊन निम्न स्तरातील लोक आपणास हानी पोहचवतील. आपण बरेच हताश व्हाल जर राहु , गुरु किंवा शुक्राच्या बरोबर किंवा त्याची दृष्टी यावर पडत असेल, किंवा बुधापासून केंद्राच्या स्थितीत असेल तरआपण या समस्यांपासून वाचू शकता.

गुरु अंतरदशा

(29:06:2051--04:10:2053)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येऊ शकतात. जर बुध राहु पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास

अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होउ शकते.

हा काळ आपणास खूप शुभ आणि आनंददायक असेल. आपणास अत्यंत बुध्दीमानी लोकांची संगत लाभेल,मानसिक शांती मिळेल, महत्वपूर्ण कार्यात सहभागी व्हाल. जर आपण शैक्षणिक कार्याशी संलग्नअसाल तर आपणास यश मिळून लोकप्रिय व्हाल. आपण सन्माननीय पदावर कार्यरत असाल वआपले उत्पन्न वाढून राहणीमान उंचावेल आणि इतर लोक आपला आदर करतील. समाजात आपलीलोकप्रियता वाढेल, आपल्या मताला मान मिळेल आणि गंभीर प्रकरणात लोक आपला सल्ला घेतील. परंतु ईमानदारी व शालीनतेचा मार्ग न सोडता उतावळेपणाने निर्णय घेउ नये. अन्यथा या दशेच्या समाप्तिनंतर स्वतःस या कार्यामुळे अंधारात हरवून जाल.

शनि अंतरदशा

(04:10:2053--13:06:2056)

जर बुध कन्या राशीत (तुंगस्थ) एकटाच बसलेला असेल किंवा मिथुन राशीत (स्वराशी)असेल किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर आपणास ही दशा अत्यंत भाग्यशाली असेल. जर आपल्या कुंडलीत बुध ग्रह गुरु किंवा शुक्र किंवा शनीबरोबर बसलेला असेल अथवा यावर गुरु किंवा शनीची दृष्टी पडत असेलतर परिणाम शुभ असेल. जर बुध रवीपासून बराच जवळ असेल (3 डिग्री 20 मिनिटांच्या आत) तरीही परिणाम शुभ असतील तरीही काही आरोग्यविषयक समस्या येउ शकतात. जर बुध राहू पासून परस्पर केंद्र स्थितीत असेल तर शैक्षणिक आणि बौद्धिक क्षेत्रातील प्रगतीकरीता हा उत्तम काळ आहे.रोजगारीत बदल करण्यासही हा काळ लाभदायक सिध्द होईल. जर बुध केतूच्या जवळ असेल तर रहस्यमय विषयाच्या अध्ययनात सफलता मिळेल. परंतु जर मंगळ बुधाबरोबर असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी हे दोन्ही कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल व नेहमी चिंताग्रस्त रहाल. जर चंद्र बुधाबरोबर स्थित असेल तर किंवा यावर दृष्टी टाकत असेल तर जेव्हाकी दोन्ही पैकी कोणीही प्रभावशाली स्थितीत नसेल तरव्यक्तीची बुध्दी अस्थिर होउ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत यापैकी एक ग्रह जरी प्रभावशाली नसेल ता हा काळ आपणास शुभ होणार नाही. या दशे दरम्यान आपणास अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल, ज्या आपल्या चुंकामुळे निर्माण होतील. जर आपण दृढ निश्चयी असाल तर योग्य मार्ग अवलंबाल, कारण ईश्वर नेहमी योग्यमार्गावर चालणारांना साथ करतो आणि उनालाही सावलीत रुपांतरीत करतो. जर आपल्या कुंडलीत हे दोन्ही ग्रह ग्रस्त असतील तर आपण अयशस्वी होउन दुःखी व्हाल. आपले शत्रु समस्या निर्माण करतील व आपले भाग्य साथ देणार नाही. आपले निकटवर्तीय अपमानित होतील व त्याचा आपणावर वाईट परिणाम होईल. आपले डोके विशाद आणि उदासीने भरुन जाईल ज्यामुळे तुम्ही कष्टी व्हाल. जर आपले मिथुन लग्न असेल तर जसेकी हा लग्नपती आणि अष्टमवराच्या संम्मिलित रुपाचा काळ आहे, आपल्या आरोग्यसंबंधी गंभीर समस्या येतील किंवा आपण दुर्घटनाचे शिकार व्हाल.जर आपले सिंह लग्न असेल तर जसेकी हा दोन मारक ग्रह दुस-या स्थानाचा व सातव्या स्थानाचा स्वामीचे संम्मिलित रुपाचा काळ आहे तर आपण आरोग्याच्या समस्याने ग्रस्त होउ शकता.

केतु दशा

(13:06:2056--14:06:2063)

केतु अंतरदशा

(13:06:2056--10:11:2056)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होऊ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होऊ शकते.

जर केतु ना ही वृश्चिक राशी मध्ये बसलेला असून स्वनक्षत्रात बसलेला आहे, तर हा समय आपल्याला भारी पडू शकतो. आपली प्राप्ती कमी होऊ शकते आणि आपल्याला थोड्या काळाकरीता घरी बसावे लागेल. पैसा आणि इतर साधनांच्या कमतरतेमुळे आपण बरेच प्रभावीत होऊ शकता आणि आपल्या वचनांची पूर्तता करण्याच्या स्थितीमध्ये नसाल. आपल्याला या स्थितीपासून बचाव करण्याकरीता व्यक्तीगत सुखांचा त्याग करावा लागेल. आपल्या परीवारातील सदस्य ही आपल्याशी चांगला व्यवहार करणार नाहीत आणि त्यांच्या तुमच्याकडून अपेक्षाही वाढतील. पारीवारीक भांडणामुळे आपण बरेच अशांत होऊ शकता आणि तुमची स्थिती दिवसेदिवस खराब होऊ शकते. यातून बाहेर पडण्याकरीता दूसरा कोणता मार्ग न मिळाल्यामुळे तुम्ही तुमच्या निकटवर्तीयांनाही सोडू शकता त्यातील काही खूपच घमंडी किंवा समजूतदार नसू शकतात.

शुक्र अंतरदशा

(10:11:2056--10:01:2058)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होऊ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होऊ शकते.

हा काळ आपणास बराच लाभदायक व आनंददायक जाईल. जर आपण विवाहित असाल व संततिची अपेक्षा करत असाल तर आपणास ते सुख प्राप्त होईल. आपण आपल्या सर्व कार्यात याशस्वीव्हाल आणि आपली प्राप्ती वाढेल. आपण आपल्या जीवनाचा पुरेपुर आनंद उपभोगाल. परंतु आपणास खर्चावर नियंत्रण ठेवावेलागेल आणि पैशाच्या व्यवहारात सावध रहावे लागेल आणि कोणत्याही गोष्टीची सवय होऊ देऊ नये. आपणास जुगारापासून दूर राहिले पाहिजे कारण त्यामुळे आपले बरेच धन वाया जाईल. आपली लोकप्रियता वाढेल व आपण लोकांना पसंत याल. आपल्या निवासस्थानी बरेच मित्र आणि नातेवाईक येतील आणि आपण सामाजिक कार्यांचे आकर्षण बिंदू बनेल. या दशेच्या समाप्ती दरम्यान आपल्या आरोग्याकडे लक्ष देणे गरजेचे आहे कारण आपणास आजार येण्याची शक्यता आहे. असेच आपल्या जोडीदाराबरोबरही होऊ शकते.

रवि अंतरदशा

(10:01:2058--17:05:2058)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होऊ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होऊ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत केतू आणि रवी यापैकी कमीत कमी एक जरी ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर हा काळ आपणास अडचणीचा जाईल. आपण एखादया रोगाने त्रास्त व्हाल व जोडीदारामुळे चिंतीत असाल. पारीवारीक स्थिती आपणास चिंतेत टाकेल आणि कार्यस्थळी परिस्थिती विपरीत होईल. सामाजीक दर्जा कमी असलेले व आर्थिक दुबळे लोक अडचणी निर्माण करतील. आपल्या परिस्थितीत सुधारणा सुधारणा करण्यास आपणास बराच काळ प्रयत्न करावे लागतील. तरीही आपण उच्च पदाधिकारी आणि सरकारी स्रोतापासून प्रत्यक्ष सहयोग व अप्रत्यक्ष लाभ मिळवाल. आपणास काही कारणामुळे दूरचे स्थान किंवा परदेशात जाण्याचे योग येतील. आणि यशस्वीरित्या कार्य संपवून आनंदाने परत याल. जर केतू वृश्चिक राशीत बसलेला, किंवा स्वनक्षत्रात असेल तर हा काळ आपणास निश्चितच लाभदायक जाईल. आपणास अनेक मार्गाने धन प्राप्त होईल. आपले धन आणि स्वामित्व वाढेल व आपण उच्च राहणीमाना करीता काही वस्तूंची खरेदी कराल.

चंद्र अंतरदशा

(17:05:2058--16:12:2058)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होऊ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होऊ शकते.

या दशे दरम्यान आपण भिन्न लिंगी व्यक्तीमुळे बरेच दुःखी व्हाल आणि संततिच्या वागणुकीमुळे काहीसमस्यांचा सामना कराल. कारण ते उपद्रवी असू शकतात. इतर बाबतीत आपणास चिंता करण्याची आवश्यकता नाही. आपणास अनेक मार्गाने लाभ होतील, आपली प्राप्ती वाढेल आणि धनातवृद्धी होईल व सार्वजनिक सौदयामध्ये जास्त लाभ होईल. जर आपण नवीन व्यवसाय सुरु करणार असाल तर हा काळ त्याकरीता उपयुक्त आहे काही अप्रत्याशीत सुसंधीमुळे आपण लाभ

घ्याल व परिस्थिती आपल्या बाजूने असेल. जर आपला पेशा घरगुती सामान, चिकित्सा, सजावटीचे सामान इत्यादीशी निगडीत असेल तर हा काळ जास्त भाग्यशाली असेल. जर केतू वृश्चिक राशीत बसलेला किंवा स्वनक्षत्रात स्थित असेल तर हा काळ अधिक लाभदायक असेल. आपण घराकरीता किंवा अंतर्गत सजावटीकरीता बरेच धन खर्च कराल.

मंगळ अंतरदशा

(16:12:2058--14:05:2059)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होउ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होउ शकते.

हा काळ दोन आग्नेय अशुभ ग्रहांचा संयुक्त काळ आहे यामुळे हा काळ आपणास जास्त लाभदायक असणार नाही. आपणास अनेक समस्या, बाधा, आणि भांडणांचा सामना करावा लागेल. जे लोक आपल्याबरोबर शत्रूसारखा व्यवहार करत असतील विशेषकरून भिन्न लिंगी व्यक्ती अडचणी निर्माण करतील. आपण ताप किंवा तत्सम आजाराने त्रस्त व्हाल. आपण काही दुर्घटनांचे शिकार व्हाल किंवा आपल्या घरी किंवा कार्यस्थळी आग लागेल व हानी होईल. त्याकरीता आपणास सावधान व सतर्क रहावे लागेल व उपाययोजना करावी लागेल. तरीही केतू आणि मंगळ दोन ग्रहांचा आपल्या कुंडलीत स्थिती मजबूत असेल तर हा काळ आपणास आनंददायक असेल. आपणाकरता नवीन घर बनवाल किंवा स्थावर मालमत्ता खरेदी कराल. जर आपल्या कुंडलीत मंगळ व केतू पीडित असतील तर आपल्या शरीराच्या निम्न भागात शस्त्रकिया करावी लागेल.

राहु अंतरदशा

(14:05:2059--01:06:2060)

जर केतु राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतु कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाव्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होउ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होउ शकते.

जर राहु आणि केतू दोन ग्रह आपल्या तुंगस्थ राशीत स्थित नसतील, ना ही स्वनक्षत्रात असतील तरहा काळ आपणास समस्याग्रस्त जाऊ शकेल. आपणास सावधान आणि सतर्क रहावे लागेल कारण

आपली तब्येत अचानक खराब होईल. आपण रोगाने त्रस्त व्हाल व याची तीव्रता अस्थिर होउ शकते. आपणास चुकीचे औषध किंवा विषारी पदार्थांच्या सेवनाने अनेक समस्यांचा सामना करावा लागेल. आपली परिस्थिती आपल्या हातात राहणार नाही. आपणास परिस्थिती व वातावरणातील बदलावामुळे आपणास बरेच नुकसान सोसावे लागेल. जर राहू व केतू परस्परांच्या नक्षत्रात बसले असतील तर आपणास अधिक सतर्क रहावे लागेल. आपण दुर्घटनांचे शिकार व्हाल व आपण गंभीर वादात पडाल व खटल्यातही सापडाल. जर आपल्या कुंडलीत राहू व केतूवर अशुभ ग्रहाची दृष्टी असेल तर मान सन्मानात कमी होईल. आपणास कोणाला लाच देणे किंवा घेणे यापासून दूर राहिले पाहिजे नाहीतर आपण लवकर अडकाल.

गुरू अंतरदशा

(01:06:2060--08:05:2061)

जर केतू राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतू कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होउ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळे गंभीर समस्या निर्माण होउ शकते.

हा समय निश्चितच असपलयाकरीता सुखदायक असेल. आपण वरिष्ठ आधिकारी आणि प्रभावशाली व्यक्तीबरोबर सलोख्याचे संबंध बनवाल आणि त्यांच्याकडून प्रत्यक्ष सहयोग आणि अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्तकराल. जर आपण नोकरी करत असाल तर आपली बढती होईल किंवा महत्त्वाच्या पदावर नियुक्ती होईल. जर आपण व्यवसाय करत असाल तर आपल्याला बराच फायदा मिळेल आणि परिवर्तन म्हणून आपण एखादे नवे क्षेत्र निवडाल किंवा नवीन कार्यालय किंवा कंपनीची नवीन शाखा मोक्याच्या जागी काढाल. आपल्याला देवाण घेवाणाच्या व्यवहारातून बरेच धन प्राप्त होईल व आपल्यासंपत्तीमध्ये वृद्धी होईल. काही विरुद्ध लिंगी व्यक्ती आपल्याकरीता विशेष खुशीचा स्रोत होउशकतात आणि आपण जर अविवाहित असाल तर आपले कोणाबरोबर तरी प्रेमाचे संबंध निर्माण होउ शकतात. जर आपण विवाहित असाल व संतान प्राप्तीची आशा करत असाल तर आपल्याला एका भाग्यशाली संततिची प्राप्ती होईल जी आपल्या परीवाराकरीता खुशी आणि गर्वाचे कारण बनेल.

शनि अंतरदशा

(08:05:2061--17:06:2062)

जर केतू राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतू कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होउ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे.

केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होउ शकते.

हा समय दोन परस्पर विरोधी ग्रहाच्या संयुक्त प्रभावात आहे. जर दोन ग्रहांपैकी कोणताही एक ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली स्थितीत असेल तर हा कालावधी आपल्याकरीता कष्टदायी ठरू शकतो.रोजगार किंवा अन्य मार्गाने मिळणा-या आपल्या उत्पन्नात घट होउ शकते आणि देण्याघेण्याच्याव्यवहारात बरेच नुकसान सोसावे लागेल आणि धनाच्या कमतरतेमुळे इतर समस्यांचा सामना करावा लागेल. आपण दिलेला शब्द वेळेवर पाळू शकणार नाही ज्यामुळे आपल्याला चिंता होउशकते. आपले नातेवाईक व मित्र आपल्याला मदत करणार नाहीत उलट ते आपल्याबरोबर दुरावानिर्माण करतील. आपल्याला निम्न स्तरातील लोकांकडून नुकसान होण्याची शक्यता आहे. आपल्या विश्वसनियता आणि प्रतिष्टेवर डाग लागू शकतो. या सर्व कारणामुळे आपल्या आरोग्यावर परिणाम होईल. याबरोबरच आपला जोडीदार व संततिचे स्वास्थ्य आपल्याकरीता चिंतेचा विषय बनेल.यादरम्यान आपण धूळ, प्रदूषण आणि सूर्य किरणांपासून विशेषकरून बचाव केला पाहीजे.

बुध अंतरदशा

(17:06:2062--14:06:2063)

जर केतू राशी मध्ये एकटा बसलेला आहे, त्याचा राशीपती कोणताच शुभ ग्रह नाही आणि ज्या राशीतहा बसलेला आहे त्याचा स्वामी अनुकूल भावात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला खूप सा-या शुभ फळांच्या प्राप्तीची आशा करू शकता. परंतु जर केतू कोणत्या अशुभ ग्रहाबरोबर असलेला असेल, त्याचा राशीपती कोणता अशुभ ग्रह आहे आणि ज्या राशीत बसलेला आहे त्याचा स्वामी प्रतिकूल त्रिक स्थानात सहाय्या किंवा बाराव्या स्थानात नाही स्थित आहे, तर तर याच्या दशा काल दरम्यान आपल्याला अशुभ फळांची प्राप्ती होउ शकते. जर केतू रवी आणि चंद्रा शिवाय दुस-याग्रहाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत स्थित आहे त्यावेळेस केतूची दशा काही प्रतिकूल आणि अशुभ घटना उत्पन्न करण्यास सक्षम आहे. केतू मंगळाबरोबर 3 डिग्री 20 मिनीटांच्या आत असेल तर करंट लागण्याचा किंवा आगीने जळण्यामुळेगंभीर समस्या निर्माण होउ शकते.

जर आपल्या कुंडलीत बुध व्यवस्थित नसेल तर आपल्यात काही प्रतिकूल बदल घडून येतील. जर आपल्या कुंडलीत काही प्रतिकारी ग्रह युती उपस्थित नसतील तर आपल्याला कोणत्याही प्रकारच्या तात्कालीक धक्क्याचा सामना करावा लागेल किंवा परिस्थितीनुसार आपले निवासस्थानही बदलावे लागेल. आपली चूक नसतानाही मित्र व नातेवाईकांबरोबरचे संबंध खराब होतील आणि त्यांच्याकडून कोणत्याही प्रकारचा सहयोग मिळणार नाही. त्यामुळे आपण निराश होउन त्यांच्या बरोबरचा संबंध तोडून टाकाल. आपल्याला विनाकारण दूरचा प्रवास करावा लागेल आणि मेहनतीचे अपेक्षित लाभ मिळणार नाहीत आपला जोडीदार चुका काढण्यात पटाईत असेल व जास्त बोलणारा असेल त्यामुळे आपण दःखी व्हाल. आपल्या संततिचे आरोग्य आणि सुख याविषयी तुम्ही नेहमी चिंतीत असाल. जर केतू आणि बुधामध्ये कमीत कमी एक ग्रह आपल्या जन्मकुंडलीत सुस्थितीत नसेल तर आपण एका नवीन मित्राकडून जो भिन्न समुदाय किंवा धर्माचा असू शकतो, त्याची मदत प्राप्त करू शकाल आणि थोड्याच कालावधीमध्ये आपली स्थिती सामान्य होईल.

शुक्र दशा

(14:06:2063--14:06:2083)

शुक्र अंतरदशा

(14:06:2063--13:10:2066)

हा कालावधी आपल्याकरीता सुखमयी होईल. जर शुक्र आपल्या जन्मकुंडलीत ग्रस्त नसेल तर आपल्या यशात आणि सन्मानात वृद्धी होईल आणि आपण जीवनाचा भरपूर आनंद घ्याल. आपण वरिष्ठ अधिकारी आणि खानदानी व्यक्तींकडून सहयोग आणि लाभ प्राप्त करुन घ्याल विशेषकरुन प्रभावशाली स्त्रियांकडून. आपली पदोन्नती होईल आणि आर्थिक रुपाने स्थिती मजबूत होईल. आपण जर पहिल्यापासूनच नोकरी करीत असाल तर जबाबदारीत वाढ होउन आपले उत्पन्न वाढेल. जर आपण व्यवसाय करत असाल तर त्याचा चांगला विस्तार होउन उन्नती होईल. नवीन व्यवसायातही संधी उपलब्ध होईल. आपण आपल्या परिवारातील सदस्यांकरीता फॅशनेबल कपडे, आभूषण, चैनीच्या आणि घरगुती वस्तूवर बराच खर्च कराल. आपले पारिवारीक जीवन खुशहाल आणि सुखमय असेल. आपण पर्यटनानिमित्त जवळ आणि दूरची दोन्ही यात्रा कराल. आपणाला भिन्न लिंगी व्यक्तीकडून थोडेकष्ट होउ शकते ज्यामुळे आपण संवेदनशील व आधिक अपेक्षा करणारे बनाल.

रवि अंतरदशा

(13:10:2066--13:10:2067)

जर या दोन ग्रहांपैकी कोणताही एक ग्रह केंद्रात आणि दूसरा ग्रह त्रिकोणात असेल तर आपल्या जीवनातील या दशे दरम्यान बरेच महत्वपूर्ण बदल घडून येतील व आपल्या स्थितीत बरीच सुधारणा होईल. झर आपले सिंह लग्न असेल तर हा काळ लग्नपती आणि दशमवराच्या संयुक्त रुपात आहे. या वेळी आपल्या मान सन्मानात वृद्धी होईल. परंतु यापैकी एक जरी ग्रह प्रभावशाली स्थितीत नसेलतर आपण कष्टाचा सामना कराल. आपले आपल्या वरिष्ठ अधिकारी, मालक किंवा सरकारी कर्मचा—यांबरोबर वाद होतील आणि त्यामुळे आपण कोपिष्ट बनू शकता. त्याकरीता आपण सर्तक आणि सावध राहीले पाहीजे. आपणाला काही घरगुती समस्यांचा सामना करावा लागेल किंवा जवळच्यासंबंधीताबरोबर संपत्तीवरुन विवाद होउ शकतात. त्यामुळे बरेच चिंतीत व्हाल. आपण निरंतरतणावाखाली असाल व त्याचा परिणाम आपल्या स्वास्थ्यावर होईल. जर आपल्या जन्मकुंडलीत शुक्र अस्तंगत असेल तर आपण रोगग्रस्त होउ शकाल. ज्यामुळे आपले जननेद्रीय किंवा डोळे प्रभावीतहोउ शकतात.

चंद्र अंतरदशा

(13:10:2067--14:06:2069)

हा समय आपल्याकरीता शुभ आणि आनंददायी असेल. जर यातील एक ग्रह आपल्या कुंडलीत चौथ्या घरात किंवा हे दोन्ही ग्रह एकत्रित असतील तर अथवा दोन्ही परस्परांवर दृष्टी टाकत असतील तर अजुनही शुभ असेल. आपली जुनी इच्छा पूर्ण होईल आणि नविन उद्येश साध्य होतील. आपली आर्थिक स्थिती सुधारुन राहणीमान उंचावेल. त्याकरीता आपण आरामदायी वस्तू खरेदी कराल.तसेच घराच्या अंतर्गत सजावटीकरीता महाग सामान खरेदी कराल. आपण खुशीकरीता उत्तर किंवा पश्चिम किंवा उत्तर—पश्चिम दिशेला यात्रा करु शकता. आपल्या संततिचे आरोग्य उत्तम असेल व त्यांच्या कार्यातून तुम्ही खुश व्हाल. तरीही आपला जोडीदार लहान सहान स्वास्थ्य संबंधी गोष्टीचे शिकार होउ शकतो. त्यामुळे आपण चिंतीत व्हाल. परंतु हे काही कालावधीकरीताच असेल. आपले पारिवारीक जीवन सुखी असेल.

मंगळ अंतरदशा

(14:06:2069--14:08:2070)

जर दोन ग्रहांपैकी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत सुस्थितीत नसेल तर हा समय आपणाला सुखदायी असेल. आपल्या उत्पन्नात, आणि स्वामित्वात वृद्धी होईल. परंतु आपण थोडेसे आळशी बनू शकाल आणि आपले कार्य व्यवस्थीत करणार नाही. आपण आधिक प्रमाणात भौतिकवादी असाल मौजमजा करण्याचाकल राहील. आपण सुंदर दिसणा—या भिन्न लिंगी व्यक्तीबरोबर मधुर संबंध

प्रस्थापीत करु शकता. जर हे दोन्ही ग्रह एकत्रित असतील किंवा परस्परांवर त्यांची दृष्टी असेल तर हे अजुनही चांगले होउ शकते. आपण लहान सहान त्वचा आणि नेत्र विकाराने ग्रस्त होउ शकता. जर हे दोन ग्रह परस्पर आणि सहाव्या आणि आठव्या स्थानात असतील तर अधिक सर्तक रहावे लागेल. कारण आपण खोटेपणा आणि बदनामीचे शिकार होउ शकता. जर शुक्र आपल्या जन्मकुंडलीतसहाव्या स्थानात असेल आणि ना ही तो तुंगस्थ असून स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात आहे त्यावेळी आपणाला कलह किंवा अशा गोष्टीचा सामना करावा लागेल. परंतु ही स्थिती जर मंगळाची असेल तर आपण प्रतियोगिता मध्ये विजेता बनू शकता किंवा कोणत्यातरी स्पर्धात्मक परिक्षेत यश मिळवू शकता.

राहु अंतरदशा

(14:08:2070--14:08:2073)

जर दोन ग्रहांपैकी कमीत कमी एक जरी ग्रह आपल्या कुंडलीत सुस्थितीत नसेल तर हा समय आपणाला कष्टदायी जाऊ शकतो. परिस्थितीत भारी बदल आल्याने सभोवतलीही अचानक बदल येतो. आपले उत्पन्न कमी होउ शकते आणि पैशाच्या कमतरतेमुळे आपण दिलेला शब्द पाळू शकणार नाही. आपण विचार न करता केलेल्या कामामुळे नुकसान करुन घेउ शकता. किंवा आपले मित्र किंवा नातेवाईक आपले कर्ज परत करणार नाहीत. आपला जोडीदार किंवा पारीवारीक सदस्य आपणाबरोबर नित्यकमाप्रमाणे भांडण करतील. यामुळे तुमची शांती भंग होउन स्वतःला अभागी समजून घ्याल. परंतु एका दृष्टीने आपल्याकरीता चांगलेच आहे कारण त्यामुळे तुम्ही निष्पक्ष व्हाल आपली व्यक्तीमत्व विकसित होईल. आपला धार्मिकतेकडे ओढा जास्त असेल. तुम्ही एकांतवास अजिबात पसंत करणार नाहीत, परंतु दुस-या लोकांपासून स्वतःला दूर राखण्याचा प्रयास कराल. तरीही शुक्र व राहु दोन्ही ग्रह वृषभ राशीत असतील तर हा काळ आपणाला सुखदायक होईल कारण आपणाला अनेक मार्गाने धनप्राप्ती होईल आणि आपली संपत्ती व स्वामित्व वाढेल.

गुरु अंतरदशा

(14:08:2073--13:04:2076)

हा काळ आपणास सुखदायी जाईल. हे दोन्ही शुभ ग्रह आपल्या जीवनात प्रासन्नता आणतील. जर हे दोन ग्रह एकत्रित असतील तर अजुनही सुखदायी होईल आणि हे दोन ग्रह मीन राशीत एकत्र असतील त्यावेळेस तो काळ सर्वात्तम असेल. उत्पन्नाचे नविन मार्ग उघडतील आपल्या पेशाने प्राप्तीवाढेल. आपल्या वरिष्ठ आधिका-याकडून किंवा सरकारी कर्मचा-याकडून सहयोग किंवा लाभ प्राप्त होतील. आपली पदोन्नती होउन एखादया आकर्षक संस्थानामध्ये नोकरी मिळू शकते. आपले आणि परीवारातील सदस्यांचे आरोग्य उत्तम राहील. आपल्या परीवारात शुभ विधी होईल जो विवाह किंवा संतान जन्मानंतर वाढेल. जर हे दोन ग्रह परस्परविरोधी स्थितीत असतील तर एका बाजूने आपला कल कायद्याचा अभ्यास करण्याकडे असेल तर दुस-याबाजूने आपण कोणत्यातरी बराच काळ चालणा-या खटल्यात अडकाल.

शनि अंतरदशा

(13:04:2076--14:06:2079)

या दोन ग्रहांपैकी एक ग्रह आपल्या कुंडलीत प्रभावशाली नसेल तर हा काळ विशेष लाभदायक नसेल. आपण अचानक निराशेच्या गर्तेत जाल व त्यामुळे तुम्ही आश्चर्यचकित व्हाल. जर आपल्या कुंडलीत शनी प्रभावशाली स्थितीत नसेल किंवा शुक्र एक किंवा अनेक अशुभ ग्रहाने ग्रासीत असेल तर आपण उत्सर्जन प्रणाली जसे मूळव्याध अत्यादि रोगांचे शिकार व्हाल आणि आपले आरोग्य बिघडेल. आपण नेत्र विकारानेही त्रस्त होण्याची संभावना आहे. आपले आरोग्य चांगले नसल्याने भूकव्यव स्थत लागणार नाही आणि स्वादिष्ट जेवणही रुचकर लागणार नाही. आपली झोपही पुरेशी

होणार नाही. जर शुक्र शनी बरोबर असतील किंवा शनीची दृष्टी शुकावर पडत असेल तर आपण सर्तक राहिले पाहिजे. कारण आपल्या पेशात धक्के मिळू शकतात. जर आपले लग्न वृषभ किंवा मकर आहे, जसेकी लग्नपती आणि दशमपतीचे संयुक्त समय आहे, आपण भाग्यशाली असाल व पेशापासून उन्नती होईल.

बुध अंतरदशा

(14:06:2079--14:04:2082)

या दोन ग्रहांपैकी कमीत कमी एक ग्रह अथवा दोनही ग्रह अशुभ प्रभावाखाली नसतील तर हा काळ आपणास फलदायक आणि आनंददायी असेल. जर आपण शैक्षणिक किंवा कलेच्या क्षेत्रात असालतर आपली उन्नती होईल. आपण सर्व कार्यात यशस्वी होउन आपल्यातील गुणांमुळे विशेष कार्याकरीता सन्मान प्राप्त कराल. आपल्या रोजगारात वृद्धी होउन सामाजिक स्तर उंचावेल. जर आपण नोकरी करत असाल तर आपल्याला उच्च आणि आकर्षक प्रस्ताव मिळतील. झर आपण व्यवसायात असाल तर आपल्या राहणीमानात सुधार होईल. आपण सांस्कृतिक आणि शैक्षणिक कार्याकरीता दूरचा प्रवास कराल आणि आपले कार्य यशस्वीरित्या पार पाडून आनंदाने परत याल. आपला जोडीदार आणि संतति यांचे आरोग्य चांगले असेल आणि आपले गृहस्थ जीवन शांतीमय आणि सुखमय असेल.

केतु अंतरदशा

(14:04:2082--14:06:2083)

या दोन ग्रहांपैकी कमीत कमी एक ग्रह अथवा दोन ग्रह आपल्या कुंडलीत व्यवस्थित स्थित असतीलतर हा काळ चांगला नसेल. आपण सावध राहण गरजेचे आहे, कारण भटक्या जनावारापासून आपणास धोका आहे. याशिवाय आपल्या परीवारातील एखादा सदस्य दुर्घटनेचा शिकार होउ शकतो किंवा विषारी पदार्थ किंवा चुकीचे औषध प्राशन केल्याने आरोग्य बिघडू शकते. किंवा परिस्थितीनुसार आपला बराच खर्च होईल. जर आपला प्रेम संबंध असेल तर परिस्थितीच्या बदलावामुळे भारी समस्याचा सामना करावा लागेल. आपले काही गुपीत उघडे होउन शरमेने मान खाली घालावी लागेल. कोणी ईर्ष्यालू व्यक्ती आपली बदनामी करण्याचा प्रयत्न करेल. आपला जोडीदार बराच संवेदनशील असेल त्यामुळे अनेक प्रकारच्या समस्या निर्माण होउ शकतात.

रवि दशा

(14:06:2083--14:06:2089)

रवि अंतरदशा

(14:06:2083--01:10:2083)

जर रवी तुंगस्थ असेल किंवा स्वराशी किंवा स्वनक्षत्रात असेल किंवा आपल्या कुंडलीत दशम स्थानात बसून दिक् बलच्या स्थितीत असेल तर निश्चितच हा काळ आपणास भाग्यशाली सिध्द होईल. आपण आपले वरिष्ठ अधिकारी, प्राधिकारीगण, किंवा सरकारी कर्मचा—यांपासून बराच सहयोग आणि लाभ प्राप्त कराल. आपल्या मान सन्मानात नेहमी वृद्धी होईल. आपल्यावरील विश्वासात वाढ होईल. र रवी दुस—याउपचय स्थानात तिस—या, सहाव्या, बाराव्या बसला असेल तर आपली उत्तमप्रगती होईल आणि वेळेचा भरपूर आनंद घ्याल. परंतु जर रवी आपल्या जन्मकुंडलीम प्रभावशाली स्थितीत नसेल तर किंवा काही कारणाने ग्रस्त असेल तर हा काळ आपणास भारी समस्यापूर्ण असेल. किंवा आपण कोणत्या तरी सरकारी दंडात्मक आधिका—याबरोबर शत्रुत्व येउन प्रभावीत होउ शकता. याशिवाय जोरदार भांडण आपल्या परीवाराला तोडू शकते. त्यामुळे तुम्ही दःखी व्हाल. आपण डोकेदुखी, कानदुखी, मुत्र संबंधी विकारांनी किंवा गुरदेची शिकार होउ शकते.

चंद्र अंतरदशा

(01:10:2083--01:04:2084)

जर रवी आणि चंद्र आपल्या कुंडलीत कोणत्याच प्रकारे ग्रस्त नसेल तर हा काळ आपणास अत्यंत चांगला व आनंददायी जाईल. आपण आपले वरिष्ठ अधिकारी, नियुक्त आणि सरकारी कर्मचा-याकडून सहयोग आणि लाभ होईल. आपण नविन व्यवसाय सुरु करू शकाल व त्यात उन्नतीहोईल. आपल्या उत्पन्नात वाढ होईल. त्याप्रमाणे आपले राहणीमान असेल. सामाजिक स्तरावर आपली लोकप्रियता वाढेल. आपण सामाजिक कार्यात तत्परतापूर्वक सहभागी होऊ शकता. आपल्यालामैत्रिण किंवा नातेवाईकाकडून किंवा परिचीताकडून विरोध सहन करावा लागेल परंतु ते त्वरीत मागे होतील. आपल्याला हा काळ आरोग्याच्या दृष्टीने चांगला नाही. या दोन ग्रहांपैकी कमीत कमी एक ग्रह जरी आपल्या कुंडलीत ग्रस्त असेल तर हा काळ अजुनच खराब जाईल. आपण रक्त प्रवाहाच्या संदर्भात आजाराने ग्रस्त होऊ शकता किंवा आपले नेत्रही प्रभावीत होऊ शकतात. आपल्या कुंडलीत रवी शनीने ग्रस्त असेल तर आपल्या मान मर्यादेत कमतरता येऊ शकते आणि जर चंद्र शनीने ग्रस्त असेल तर लोकांचे कडवे बोल ऐकावे लागतील.

मंगळ अंतरदशा

(01:04:2084--07:08:2084)

जर आपल्या कुंडलीत हे दोन्ही ग्रह एकत्र मेष राशीत किंवा अथवा हे दोन्ही ग्रह दशम स्थानात स्थित आहेत व दिक् बल बनवत आहेत, जेव्हाकी मंगळ अस्तंगत नसेल ता ही स्थिती आपणास सुखद जाईल. आपण अचानक अत्यंत प्रभावशाली स्थितीत जाल. जर त्यातील एक ग्रह उपचय स्थानात तिस-या, सहाव्या, अकराव्या असेल तर हा समय आपणास अधिक भाग्यशाली जाईल. आपण आपल्या कार्यात यशस्वी व्हाल आणि सर्व इच्छा पूर्ण होतील. परंतु कुंडलीत मंगळ अस्तंगत असेल किंवा सुस्थितीत नसेल तर हा काळ आपणाला कष्टाने भरलेला जाईल. आपले स्वास्थ्य बिघडू शकते. लहान सहान कष्टकारक रोग होऊ शकतात. आपल्याला अनावश्यक खर्च करावा लागेल. अनावधाने तोटा सहन करावा लागेल. आपला छोटा भाऊ किंवा जवळचा नातेवाईक संकटात पडू शकतो. त्यामुळे आपण चिंतीत होऊ शकता. जर आपले वृश्चिक लग्न असेल तर जसेकी लग्नपति आणि दशमपति चे संयुक्त काळ आहे, रोजगाराच्या क्षेत्रात आपल्याला यश मिळेल.

राहु अंतरदशा

(07:08:2084--02:07:2085)

जसेकी हे दोन ग्रह परस्पर विरोधी आहेत, जर आपल्या कुंडलीत प्रतिकारी ग्रहांची युती नसेल तर आपणाला लाभदायक फळ प्राप्त होणार नाही. याशिवाय आपल्या कुंडलीत राहु ग्रस्त असेल तर हा काळ आपणास अधिक खराब जाईल. आपण काही प्रभावशाली व्यक्तीं बरोबर विवादात अडकाल, ज्यामुळे आपणाला निवास स्थान बदलावे लागेल. आपल्या परीवारात निरंतर कलह होत राहतील आणि परिवाराचे विभाजन होईल. आपणाला बरेच काळ घरापासून दूर रहावे लागेल. जर राहु आपल्याकुंडलीत केंद्र अथवा त्रिकोण भावात स्थित असेल तर आपले उत्पन्न वाढेल. परंतु त्यात चढ उतार होतील. परंतु हे दोन्ही ग्रह ग्रासीत असतील तर आपणाला वरिष्ठ आधिका-यासमोर आपल्या आचरणाबद्दल सफाई द्यावी लागेल. जर गुरु किंवा शुक्राचे नक्षत्र अथवा राशीत असेल तर आपली परेशानी थोडी कमी होईल.

गुरु अंतरदशा

(02:07:2085--20:04:2086)

जर आपल्या कुंडलीत गुरु अस्तंगत नसेल किंवा कोणत्याही प्रकाराने ग्रस्त नसेल तर हा काळ आपणाला आनंददायी असेल, ज्यात आपली उन्नती होऊन आपणाला परम संतोष होईल. आपणाला अनेक मार्गाने विशेषकरून सरकारी विषगापासून लाभ होईल. आपणाला वित्तीय संस्थामध्ये

निवेशाकरीता मोटी रक्कम मिळेल. निश्चित रुपाने आपण एका विशिष्ट पदापर्यंत पोहचाल. आपले शत्रुमागे सरकतील आणि सर्व अडथळे दूर होतील. जर आपण उच्च शिक्षित घेत असाल आपणाला ती प्रतिष्ठित पदवी प्राप्त होईल. जर आपण उच्च शिक्षणाकरीता परदेशात जाऊ इच्छित असाल तर काळ त्याकरीता उपयुक्त आहे. जर आपला कोणाबरोबर प्रेम संबंध असतील तर आपले लवकरच विवाह होउ शकतो. जर आपण विवाहित असाल आणि संततिची अपेक्षा असेल तर आपणास पुत्र प्राप्ती होईल. आपली खुशी अजुनही वाढेल आणि आपले सिंह लग्न आहे कारण हा लग्नपती आणि पाचव्या भावाच्या स्वामीची संयुक्त दशा आहे. परंतु आपले वृषभ लग्न आहे, जसेकी या वेळी चौथ्या आणि आठव्या भावाचा स्वामी आहे त्यावेळेस आपणास बरेच सावधान रहावे लागेल. कारण आपणास पाण्यापासून भिती आहे.

शनि अंतरदशा

(20:04:2086--02:04:2087)

बुध अंतरदशा

(02:04:2087--06:02:2088)

जर आपल्या कुंडलीत बुध अस्तंगत नसेल आणि दोन्ही ग्रह एक तर सिंह किंवा मिथुन किंवा कन्या राशीत बसलेले असतील तर हा काळ आपणास अत्यंत भाग्यशाली असेल. झर आपण शैक्षणिक किंवाबौद्धिक क्षेत्रामध्ये असाल आपणास असाधारण सफलता मिळेल. जर आपण व्यापारी क्षेत्रात असाल तर आपली प्रगती होईल. परंतु आपल्या कुंडलीत यापैकी एक जरी ग्रह ग्रस्त असेल तर तितकेसे भाग्यदायी होणार नाही. आपले वरिष्ठ आधिका-यासोबत पटणार नाही आपले मित्र किंवा नातेवाईक आपले विरोधक बनतील. आपण मान सन्मानाबाबत निरंतर चिंतीत रहाल, त्यामुळे आपणासव्यवस्थीत भूक व झोप लागणार नाही. आपली संतानही काही समस्या निर्माण करतील आणिदूरची यात्रा कराल परंतु ती लाभदायक होणार नाही. आपणास आपले आरोग्य जपले पाहीजे कारण आपण थोडे प्रभावीत व्हाल. जर बुध अस्तंगत असेल तर नेत्रासंबंधी परेशानी होउ शकेल. आपणास अपचन, भूक न लागणे, निद्रानाश यासारखे आजार होउ शकतात.

केतु अंतरदशा

(06:02:2088--13:06:2088)

जसेकी हे दोन्ही ग्रह परस्परांचे कट्टर विरोधी आहेत, जर आपल्या कुंडलीत कोणता प्रतिकारी ग्रह उपस्थित नसेल तर हा समय आपणास विशेष लाभदायक राहणार नाही. जर यापैकी एक सुस्थितीत असेल तर हा काळ अधिकच खराब जाईल. आपले डोके शांत राहणार नाही, त्यात संशय आणि वाईट विचार येत राहतील. आपण मित्र किंवा नातेवाईकाबरोबर संकटात सापडाल. आपले घर मालकाबरोबर गंभीर मतभेद होउन दुस-याघरात रहावे लागेल. किंवा परिस्थितीत बदलावामुळे आपणास आपले घर सोडावे लागेल. आपण खूप निराश व्हाल व परिस्थितीत बदल घडावा असे तुम्हाला वाटेले. जर केतू उपचय स्थानात, स्वनक्षत्रात बसला असेल तर आपण नवीन मित्राचे सहयोग मिळवाल, जो भिन्न समुदायाचा किंवा धर्माचा असू शकतो आणि नवीन सुरुवातीकरीता दूर जाऊ शकता. हा बदल आपणास लाभदायक असेल.

शुक्र अंतरदशा

(13:06:2088--14:06:2089)

जर आपल्या कुंडलीत शुक्र अस्तंगत नाही व त्यावर अन्य अशुभ प्रभाव नसेल तर हा काळ आपणासलाभदायक असेल. हा अधिकच लाभदायक बनेल जेव्हा यातील एक ग्रह केद्रात किंवा त्रिकोण भावात बसलेला आहे. जर आपले सिंह लग्न असेल तर हा लग्नपति आणि दशमपतिचा

संयुक्त काळ आहे. आपण आपल्या व्यवसायात उन्नतीची अपेक्षा करू शकता. जर आपल्या कुंडलीत या दोन ग्रहांपैकी एक ग्रह जरी सुस्थितीत असेल तर तो काळ आपल्या प्रगतीचा असेल. आपण सरकारी स्रोतापासून किंवा कुलीन पार्श्वभूमी असलेल्या लोकांकडून बराच लाभ प्राप्त करू शकाल. आपले संबंध उच्च स्तरीय लोकांशी येईल व आपल्या कार्यामुळे सन्मान प्राप्त होईल. जर आपला विवाह झालेला नसेल तर तो होण्याची संभावना आहे. जर आपल्या कुंडलीत शुक्र अस्तंगत असेल किंवा अशुभ प्रभावाखाली असेल तर आपण रोगग्रस्त होऊ शकाल. आपल्याला नेत्रासंबंधी आणि प्रजननासंबंधी काही समस्या निर्माण होऊ शकतात.

Sample



Date of Birth : 18 December 1973 (Tuesday)

Time of Birth : 01:45:00AM

Place of Birth : Hyderabad , INDIA

Longitude : 078:29:00E

Latitude : 017:23:00N

Mindsutra Software Technologies

www.mindsutra.com

New Delhi

Contact - 9818193410,9350247058

ज्योतिषीय विवरण

	Sample	sample Girl
जन्म वार :	18 December 1973 (Tuesday)	11 October 1978 (Wednesday)
जन्म वेळ :	01:45:00AM	01:45:00AM
जन्म स्थळ :	Hyderabad , INDIA	New Delhi , INDIA
रेखांश :	078:29:00E	077:13:00E
अक्षांश :	017:23:00N	028:39:00N
समयक्षेत्र :	-05:30:00 hrs	-05:30:00 hrs
वेळ संस्कार :	00:00:00 hrs	00:00:00 hrs
जी.एम.टी. वेळ :	20:15:00 hrs	20:15:00 hrs
स्थानिक वेळ संस्कार :	-00:16:04 hrs	-00:21:08 hrs
स्थानिक वेळ :	01:28:56 hrs	01:23:52 hrs

लब्ध :	कन्या	कर्क
लब्धस्वामी :	बुध	चंद्र
चंद्रराशी :	कन्या	मकर
राशीस्वामी :	बुध	शनि
नक्षत्र :	हस्त	श्रव
नक्षत्रस्वामी :	चंद्र	चंद्र
नक्षत्र चरण :	२	१
पाया :	सुवर्ण	तांबे
ऋतु :	हेमंत	शरद
मास :	पौष	आश्विन
मास :	कृष्ण	शुक्ल
तिथी :	नवमी	दशमी
तिथी प्रकार :	रिक्ता	पूर्णा
तिथी स्वामी :	रवि	चंद्र
करण :	गरज	तैतिल
करण प्रकार :	चर	चर
करण स्वामी :	वासुदेव	इंद्र
गण :	देव	देव
वर्ण :	वैश्य	वैश्य
योनि :	म्हैस(स्त्री)	वानर(स्त्री)
सूर्य सिद्धांत योग :	सौभाग्य	धृति
रज्जु :	कंट	कंट
वश्य :	द्विपाद	जलचर
तत्त्व :	अग्नी	वायु
तत्त्वस्वामी :	मंगळ	शनि
विहग :	वायस	कुक्कुट
नाडी :	आद्य	अंत्य
नाडी पाद :	मध्य	आद्य
वेध :	शततारका	आर्द्रा
नामाक्षर :	Shaa	Khi

ग्रह स्थिति

Sample						sample Girl					
ग्रह	राशी	अंश	न चरण	ग्रह	राशी	अंश	न चरण
लब्ध	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	--	--	लब्ध	कर्क	22:58:08	आश्ल (२)	--	--
रवि	धनु	02:15:49	मूल (१)	मिग	ग्र	रवि	कन्या	23:36:39	चित्रा (१)	मिग	पाग्रसी
चंद्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	स्न	--	चंद्र	मकर	12:41:58	श्रव (१)	स्न	--
मंगल	मेष	04:42:18	अश्वि (२)	मूत्रि	--	मंगल	तुला	20:45:33	विशा (१)	सग	शुग्रसी
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्ये (१)	स्न	--	बुध	तुला	00:57:43	चित्रा (३)	मिग	शुग्रसी
गुरु	मकर	17:56:39	श्रव (३)	सग	शुग्रसी	गुरु	कर्क	12:16:35	पुष्य (३)	सग	--
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रव (१)	मिग	शुग्रसी	शुक्र	तुला	28:14:18	विशा (३)	स्न	शुग्रसी
शनि व	मिथुन	08:12:34	आद्र (१)	सग	ग्र	शनि	सिंह	15:45:55	पू.फा. (१)	शग	--
राहु व	धनु	05:06:53	मूल (२)	मिग	पाग्रसी	राहु	कन्या	03:04:26	उ.फा. (२)	सग	पाग्रसी
केतु व	मिथुन	05:06:53	मृग (४)	सग	पाग्रसी	केतु	मीन	03:04:26	पू.भा. (४)	सग	--
इंद्र	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	--	--	इंद्र	तुला	21:21:53	विशा (१)	--	शुग्रसी
वरुण	वृश्चिक	14:20:41	अनु (४)	--	शुग्रसी	वरुण	वृश्चिक	22:29:55	ज्ये (२)	--	--
रुद्र	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	--	पाग्रसी	रुद्र	कन्या	23:03:42	हस्त (४)	--	ज्व

Sample				नवमांश कुंडली			
लब्ध (जन्म) कुंडली				चंद्र कुंडली			
	मंग 04:42		शनि 08:12		सूर्य शुक्र	चंद्र राहु मंग	गुरु
			केतु 05:06				
					बुध शनि	केतु	
गुरु 17:56							
शुक्र 13:00							
राहु 05:06		इंद्र 03:20	चंद्र 16:00				
सूर्य 02:15	वरु 14:20		रुद्र 13:11		गुरु शुक्र		शनि केतु
	बुध 19:51				सूर्य राहु	बुध	चंद्र

नवमांश कुंडली				sample Girl			
चंद्र कुंडली				लब्ध (जन्म) कुंडली			
केतु				केतु 03:04			
			गुरु				गुरु 12:15
चंद्र			शनि				
		बुध मंग शुक्र	सूर्य राहु				
	चंद्र मंग		शुक्र	चंद्र 12:41			शनि 15:45
			केतु				
राहु			शनि सूर्य		मंग 20:45	रुद्र 23:36	सूर्य 23:36
		गुरु बुध			बुध 00:57	शुक्र 28:14	राहु 03:04
				वरु 22:29	इंद्र 21:21		

गुणमिलन तक्ता
अष्टकूट सिद्धांतानुसार

क.स.	विवरण	Sample	sample	पूर्णांक	प्राप्तांक	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	वैश्य	वैश्य	1	1	दैवी विकास
2	वश्य कूट	द्विपाद	जलचर	2	0.5	प्राकृतिक सामंजस्य
3	तारा कूट	जन्म	जन्म	3	3	संबंधातील स्थैर्य
4	योनी कूट	म्हैस(स्त्री)	वानर(स्त्री)	4	2	प्रत्यक्ष गुण
5	ग्रह मैत्री कूट	बुध	शनि	5	4	मानसिक स्वास्थ्य
6	गण कूट	देव	देव	6	6	वैवाहिक अनुरूपता
7	राशी कूट	कन्या	उरालिलीप	7	0	आपसातील ताळमेळ
8	नाडी कूट	आद्य	अंत्य	8	8	मानसिक आपुलकी
योग				36	24.5	68.1%

दांपत्यविषयक इतर विचार

क.स.	विवरण	परिणाम
1	नाडी पाद कूट	भावी दांपत्याच्या कुंडलीत नाडी कुट योग उपस्थित असल्याने नाडी पद योगाकडे लक्ष देणे तितकेस महत्त्वाचे नाही.
2	महेंद्र कूट	भावी दांपत्याच्या कुंडलीत महेंद्र कुट योग उपस्थित आहे. हा एक वैवाहिक स्थैर्यता व चिरायुष्याचा संकेत देतो.
3	स्त्री दीर्घ कूट	भावी दांपत्याच्या कुंडलीत स्त्रीदीर्घ कुट योग उपस्थित आहे. हा एक उत्तम वैवाहिक एकरूपता व वैवाहिकरित्या अनुरूप असा संकेत आहे.
4	रज्जु कूट	भावी दांपत्याच्या कुंडलीत रज्जु कुट योग अनुपस्थित आहे. जर कुंडलीत कोणतीही भावी सुधारणा होण्याची संभावना नसल्यास भावी पत्नीच्या प्रकृतीवर वाईट परिणाम होईल.
5	वेध कूट	वधु-वराचे चंद्र नक्षत्र परस्पर वेध संबंध प्रस्थापित करत नसल्याने ते एकमेकांना समजून घेतील आणि कोणत्याही प्रकारच्या वैमनस्याची शक्यता कमी आहे.
6	समान जन्मराशी	वधु-वराचे चंद्र राशी भिन्न आहे. त्यामुळे समान राशीचा प्रश्नच उद्भवत नाही.
7	समान जन्मनक्षत्र	वधु-वराचे नक्षत्र भिन्न आहेत.
8	समान जन्म नक्षत्र चरण	वधु-वराचे चंद्र नक्षत्र भिन्न आहे. त्यामुळे नक्षत्र पद बघण्याची गरज भासत नाही व या विवाहाची संमं देता येईल.

सूक्ष्मग्राही बिंदु

Sample		sample Girl	
बीज स्फुट (१)	093:12:44	क्षेत्र स्फुट (१)	225:44:06
बीज स्फुट (२)	161:54:01	क्षेत्र स्फुट (२)	239:54:15
बीज स्फुट (३)	356:43:53	क्षेत्र स्फुट (३)	334:50:39
शुभ लक्षण	52 %	शुभ लक्षण	64 %

कुज दोषा (किंवा मंगळीक दोष) च्या उपस्थितीची पडताळणी

मुलीच्या कुंडलीत, मंगळ लग्नापासून 4 थ्या राशीत स्थित आहे. हा कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. पुढील भागामध्ये अशी पडताळणी केली जाईल की या कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही.

मुलाच्या कुंडलीत, मंगळ लग्नापासून 8 व्या राशीत स्थित आहे. हा कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. पुढील भागामध्ये अशी पडताळणी केली जाईल की या कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही.

मुलाच्या कुंडलीत, मंगळ चंद्र राशीपासून 8 व्या राशीत स्थित आहे. हा कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. पुढील भागामध्ये अशी पडताळणी केली जाईल की या कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही.

मुलीच्या कुंडलीत, मंगळ शुक राशीत स्थित आहे. उत्तर भारतीय पध्दतीनुसार हा कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. पुढील भागामध्ये अशी पडताळणी केली जाईल की या कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. दक्षिण भारतीय पध्दतीनुसार मंगळाची शुक राशीतील उपस्थितीमुळे कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करित नाही.

मुलाच्या कुंडलीत, मंगळ शुक राशीपासून 4 थ्या राशीत स्थित आहे. दक्षिण हा कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. पुढील भागामध्ये अशी पडताळणी केली जाईल की या कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही. कुंडलीत या दोष नाहीसा करण्याकरीता कोणती दशा आहे किंवा नाही.

कुज दोषा (किंवा मंगळीक दोष) चे निवारण

मुलाच्या कुंडलीत, मंगळ शुक राशीपासून 4 थ्या स्थानात स्थित आहे. हा आभासी रूपाने कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) निर्माण करतो. परंतु मंगळ आपल्याच राशीत स्थित असल्यामुळे हा एक अपवाद आहे. जसेकी हा दोष स्वतः समाप्त होतो. मुलाच्या कुंडलीत कुज दोष तांत्रिक रूपाने अनुपस्थित मानला जातो.

मुलीच्या कुंडलीत, गुरु लग्न राशीत स्थित आहे.. हा एक अपवाद आहे, जिथे कुज दोष पडताळण्याची आवश्यकता नाही. मुलगी मंगळीक दोषापासून मुक्त आहे. ती मंगळी नाही.

मुलाच्या कुंडलीत, मंगळ चर राशीत स्थित आहे.. काही लोकांच्या मतानुसार हा एक अपवाद आहे, जिथे कुज दोष पडताळण्याची आवश्यकता नाही. मुलगा मंगळीक दोषापासून मुक्त आहे. तो मंगळी नाही. (परंतु या मताला बहुमत प्राप्त झाले)

नाही.)

मुलीच्या कुंडलीत, मंगळ चर राशीत स्थित आहे.. काही लोकांच्या मतानुसार हा एक अपवाद आहे, जिथे कुज दोष पडताळण्याची आवश्यकता नाही. मुलगी मंगळीक दोषापासून मुक्त आहे. ती मंगळी नाही. (परंतु या मताला बहुमत प्राप्त झाले नाही.)

मुलगा आणि मुलगी दोघांच्या कुंडलीत कुज दोष (किंवा मंगळीक दोष) आभासी रूपाने उपस्थित आहे. (उत्तर भारतीय पध्दतीनुसार) परंतु प्रत्येक गोष्टीत, काही निश्चित परिस्थितीच्या उपस्थितीमुळे दोषाचे निवारण होते. शेवटी या दोषाच्या निवारणाचा प्रश्न येत नाही. तांत्रिक रूपाने मुलगा आणि मुलगी मंगळीक नाही. या आधारावर कोणत्याही प्रकारची आपत्ती होऊ शकत नाही जर इतर कारकअनुकूल असतील तर ते दोघे विवाह करू शकतात.

वर वधुच्या कुंडलीत वैवाहिक सामंजस्याची पडताळणी अष्ट कूट मिलनानुसार

वर्ण कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलगा आणि मुलगी दोघांचा वर्ण वैश्य आहे. हे खूप अनुकूल आहे, आणि यामुळे वैवाहिक अनुकूलता पूर्ण रुपाने योग्य आहे. या गुण मिलनामुळे कूटगुण प्राप्ती 1 (पूर्णांक -1) आहे.

वश्य कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाचा वश्य व्दिपाद आहे आणि मुलीचा वश्य जलचर समूहाचा आहे. हे खूप अनुकूल नाही आणि याकारणामुळे वैवाहिक अनुकूलता केवळ नाममात्र आहे. या गुण मिलनामुळे कूटगुण प्राप्ती 0.5 (पूर्णांक-2) आहे.

तारा कूट (दिन कूट) सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलीच्या जन्मनक्षत्रापासून मुलाच्या जन्मनक्षत्रापर्यंत गणना केल्यास 19 संख्या प्राप्त होते. 9 ने भागल्यानंतर यात 1 बाकी उरते, जे अनुकूल नाही मुलाच्या जन्मनक्षत्रापासून मुलीच्या जन्मनक्षत्रापर्यंतगणना केल्यास 10 संख्या प्राप्त होते. 9 ने भागल्यानंतर यात 1 बाकी उरते, जे अनुकूल नाही. त्यामुळे दिन (तारा) कूटानुसार या कुंडलीत वैवाहिक अनुकूलता आंशिक रुपाने उपस्थित आहे. या गणनेनुसार कूट मिलनाची संख्या 1.5 अंकात (पूर्णांक 3) आहे.

योनी कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाच्या नक्षत्र श्रेणी महिष (स्त्री) जेव्हाकी मुलगी नक्षत्र श्रेणी वानर (स्त्री) आहे, योनी कूटानुसार कूटमिलनाचा योग 2 आहे.

ग्रह मैत्री सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाचा जन्म राशीपती बुध आहे आणि मुलीचा जन्म राशीपतीही शनि आहे. जोडीच्या नैसर्गिक संबंधानुसार हे दोन्ही अधिपति ग्रह परस्पर सम आहेत. ही एक अत्यंत अनुकूल युती आहे, जसेकी हेविशेष कूट जोडीच्या मनोवैज्ञानिक स्वभावाचे दर्शन घडवतो. जोडीची मानसिक विशेषता खूप अनुकूल असेल आणि दोघांना परस्परांबद्दल ओढ, जी वैवाहिक जीवनातील खुशीकरीता महत्त्वपूर्ण कारक आहे. या कारणामुळे कूट मिलन संख्येत 4 अंकाचे (पूर्णांक 5) चे योगदान असेल.

गण कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाचा नक्षत्र देव गण श्रेणीतील आहे. जेव्हाकी मुलीचे नक्षत्रही देव गणी आहे. ही एक अत्यंत अनुकूल युती आहे. जसेकी गण व्यक्तीचे स्वभाव आणि कल व्यक्त करतो. संभावीत युगलांपैकी दोन्ही सदस्य परिपक्व दृष्टीकोन आणि धैर्यवान प्रकृतीचे असतील. ते काही अति वांछित गुणांनी परिपूर्ण असतील. या गणनेनुसार कूट मिलनाचा प्राप्तांक 6 (पूर्णांक 6) आहे.

राशी कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाची जन्मराशी कन्या जेव्हाकी मुलीची जन्मराशी मकर आहे. या दोन राशी एक दुस-याबरोबर परस्पर प्रतिकूल त्रिकोण (5-9) संबंधात आहे, वैवाहिक जीवनात संततिच्या खराब आरोग्यामुळे किंवा संततिमुळे जो नंतर अयोग्य हाईल, हा दुःखाचा संकेत आहे. या कारणामुळे कूट मिलन प्राप्तांक 0 आहे. परंतु एक ही ग्रह दोघांच्या कुंडलीत जन्म राशीचा स्वामी आहे, आणि जर अन्य बाबी अनुकूल नसतील तर विवाहास स्विकृती दिली जाऊ नये.

नाडी कूट सामंजस्याच्या उपस्थितीची पडताळणी –

मुलाची नाडी आदि श्रेणीची आहे, जेव्हाकी मुलीची नाडीही अन्तःपणा आहे, जसेकी मुलाची आणि मुलीची

समान श्रेणीची नाही, हा सकेंत लाभदायक आहे. आणि विवाहास संमती द्यावी. कूट मिलानाचा 18 पेक्षा कमी नाही, या कारणामुळे गुणमिलान 8 गुणाचे आहे।

वर्षपूर्ण -

47

वर्षफल काल -

18:12:2020--18:12:2021



ग्रह स्थिती



जन्म						वर्षफल					
ग्रह	राशी	अंश	न चरण	ग्रह	राशी	अंश	न चरण
लब्ध	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	--	--	लब्ध	तूळा	05:16:06	चित्रा (४)	--	--
रवि	धनु	02:15:49	मूळ (१)	मिग	ग्र	रवि	धनु	02:14:53	मूळ (१)	मिग	शुक्र सो
चंद्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	स्न	--	चंद्र	मकर	14:08:06	श्रव (२)	स्न	शुक्र सो
मंगळ	मेष	04:42:18	अश्वि (२)	मूत्रि	--	मंगळ	मीन	27:39:24	रेव (४)	मिग	--
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्ये (१)	स्न	--	बुध	धनु	00:58:41	मूळ (१)	शग	ज्व
गुरु	मकर	17:56:39	श्रव (३)	सग	शुक्र सो	गुरु	मकर	05:29:30	उ.षा. (३)	सग	शुक्र सो
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रव (१)	मिग	शुक्र सो	शुक्र	वृश्चिक	08:35:50	अनु (२)	सग	पाग्र सो
शनि व	मिथुन	08:12:34	आर्द्र (१)	सग	ग्र	शनि	मकर	05:55:30	उ.षा. (३)	स्न	शुक्र सो
राहु व	धनु	05:06:53	मूळ (२)	मिग	पाग्र सो	राहु व	वृषभ	25:46:34	मृग (१)	मिग	--
केतु व	मिथुन	05:06:53	मृग (४)	सग	पाग्र सो	केतु व	वृश्चिक	25:46:34	ज्ये (३)	मिग	शुक्र सो
इंद्र	तूळा	03:20:59	चित्रा (४)	--	--	इंद्र व	मेष	12:53:46	अश्वि (४)	--	--
वरुण	वृश्चिक	14:20:41	अनु (४)	--	शुक्र सो	वरुण	कुंभ	24:07:12	पू.भा. (२)	--	--
रुद्र	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	--	पाग्र सो	रुद्र	धनु	29:35:50	उ.षा. (१)	--	शुक्र सो

Varsha-Phala Section

लब्ध कुंडली (वर्षफल)

चंद्र कुंडली (वर्षफल)

मंग		राहु	
चंद्र			
गुरु			
शनि			
सूर्य	शुक्र		
बुध	केतु		

मुंथा राशी : सिंह
मुंथा भाव : ११

	इंद्र 12:53	राहु 25:46	
मंग 27:39			
	वरु 24:07		
चंद्र 14:08			
गुरु 05:29			
	शनि 05:55		
बुध 00:58			
सूर्य 02:15	रुद्र 29:35	केतु 25:46	
	शुक्र 08:35		

Natal Section

लब्ध कुंडली जन्म

	मंग 04:42		शनि 08:12
			केतु 05:06
गुरु 17:56			
शुक्र 13:00			
राहु 05:06		इंद्र 03:20	चंद्र 16:00
सूर्य 02:15			रुद्र 13:11
	वरु 14:20		
	बुध 19:51		

नवमांश कुंडली(जन्म)

	सूर्य	चंद्र	गुरु
	शुक्र	राहु	मंग
बुध	केतु		
शनि			

चंद्र कुंडली (जन्म)

	मंग		शनि
			केतु
गुरु			
शुक्र			
सूर्य	बुध		चंद्र
राहु			

Year Completed-47 (Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

वर्षफल कुंडलीत ग्रहांचे बल

पंचवर्गीय बल								
क.स.	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	क्षेत्र बल	15.00	07.50	15.00	07.50	07.50	07.50	30.00
2	उच्च बल	05.81	07.90	13.37	11.56	00.05	04.62	11.56
3	हृदा बल	07.50	03.75	15.00	03.75	03.75	15.00	07.50
4	द्रेष्कान बल	05.00	02.50	10.00	02.50	02.50	02.50	10.00
5	नवमांश बल	02.50	01.25	02.50	01.25	01.25	02.50	05.00
एकूण बल		35.81	22.9	55.87	26.56	15.05	32.12	64.06
तुलनात्मक बल		साधारण	साधारण	बलशाली	साधारण	दुर्बल	साधारण	पूर्णबली

द्वादशवर्गीय बल								
क.स.	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	राशी बल	+1	-1	+1	-1	-1	-1	+1
2	होरा बल	+1	+1	+1	-1	+1	-1	-1
3	द्रेष्कान बल	+1	-1	+1	-1	-1	-1	+1
4	चतुर्थांश बल	+1	+1	+1	-1	-1	+1	+1
5	पंचमांश बल	+1	+1	-1	-1	+1	+1	-1
6	षष्ठांश बल	+1	+1	+1	-1	+1	-1	-1
7	सप्तमांश बल	+1	-1	+1	-1	+1	-1	-1
8	अष्टमांश बल	+1	+1	+1	-1	-1	+1	+1
9	नवमांश बल	+1	-1	+1	-1	-1	+1	+1
10	दशांश बल	+1	-1	+1	-1	-1	+1	+1
11	एकादशांश बल	+1	-1	-1	-1	+1	+1	-1
12	द्वादशांश बल	+1	-1	-1	-1	+1	+1	-1
एकूण बल		+12	-2	+6	-12	0	+2	0
तुलनात्मक बल		असाधारण	सम	अति सुंदर	वाईट	साधारण	ऋद्धी.	साधारण

हर्ष बल								
क.स.	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	स्थान बल	0	0	5	0	0	0	0
2	क्षेत्र बल	0	0	0	0	0	0	5
3	ओज-युग्म बल	0	0	5	5	5	5	0
4	दिवा-रात्री बल	0	5	0	5	0	5	5
एकूण बल		0	5	10	10	5	10	10
तुलनात्मक बल		निर्बल	अल्पबली	मध्यबली	मध्यबली	अल्पबली	मध्यबली	मध्यबली

Year Completed-47 (Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

द्वादश वर्ग कुंडली

वर्ष लब्ध कुंडली

मंग		राहु	
चंद्र			
गुरु	शनि		
सूर्य		शुक्र	
बुध		केतु	

वर्ष होरा कुंडली

		चंद्र शनि	
		गुरु शुक्र	
		मंग बुध केतु	
		सूर्य राहु	

वर्ष द्रेष्कान कुंडली

		चंद्र	
			केतु
गुरु			
शनि	राहु		
सूर्य		मंग	
बुध		शुक्र	

वर्ष चतुर्थांश कुंडली

	चंद्र		
शुक्र			
राहु			
गुरु			केतु
शनि			
सूर्य			
मंग बुध			

वर्ष पंचमांश कुंडली

चंद्र	सूर्य	मंग	
	बुध	केतु	राहु
शुक्र			
	गुरु		
	शनि		

वर्ष षष्ठांश कुंडली

मंग	केतु	सूर्य	
राहु		बुध	
चंद्र		गुरु	शनि
		शुक्र	

वर्ष सप्तमांश कुंडली

मंग		राहु	
			शुक्र
			शनि
			गुरु
सूर्य	केतु		
बुध		चंद्र	

वर्ष अष्टमांश कुंडली

		गुरु	शनि
राहु			चंद्र
केतु			मंग
सूर्य			
बुध		शुक्र	

वर्ष नवमांश कुंडली

मंग	सूर्य	चंद्र	
	बुध		
गुरु	केतु		
शनि			
			राहु
			शुक्र

वर्ष दशमांश कुंडली

केतु			
चंद्र			मंग
सूर्य		शनि	शुक्र
बुध		गुरु	राहु

वर्ष एकादशांश कुंडली

गुरु			चंद्र
शनि			
शुक्र			
राहु			
मंग			केतु
सूर्य			
बुध			

वर्ष द्वादशांश कुंडली

गुरु	राहु		चंद्र
शनि			
मंग			
शुक्र			
सूर्य			केतु
बुध			

Year Completed-47 (Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

पत्यनी दशा

क.स.	दशेचे नाव	दशा काल	पासून-----पर्यंत
1	बुध	0 y.0 m.13 d.	18:12:2020 To 31:12:2020
2	रवि	0 y.0 m.17 d.	31:12:2020 To 16:01:2021
3	लब्ध	0 y.1 m.9 d.	16:01:2021 To 25:02:2021
4	गुरु	0 y.0 m.3 d.	25:02:2021 To 28:02:2021
5	शनि	0 y.0 m.6 d.	28:02:2021 To 06:03:2021
6	शुक्र	0 y.1 m.5 d.	06:03:2021 To 10:04:2021
7	चंद्र	0 y.2 m.12 d.	10:04:2021 To 22:06:2021
8	मंगळ	0 y.5 m.26 d.	22:06:2021 To 18:12:2021

मुद्दा विशोत्तरी दशा

क.स.	दशेचे नाव	दशा काल	पासून-----पर्यंत
1	राहु	0 y.1 m.24 d.	18:12:2020 -- 10:02:2021
2	गुरु	0 y.1 m.18 d.	10:02:2021 -- 31:03:2021
3	शनि	0 y.1 m.27 d.	31:03:2021 -- 28:05:2021
4	बुध	0 y.1 m.21 d.	28:05:2021 -- 19:07:2021
5	केतु	0 y.0 m.21 d.	19:07:2021 -- 09:08:2021
6	शुक्र	0 y.2 m.0 d.	09:08:2021 -- 09:10:2021
7	रवि	0 y.0 m.18 d.	09:10:2021 -- 27:10:2021
8	चंद्र	0 y.1 m.0 d.	27:10:2021 -- 26:11:2021
9	मंगळ	0 y.0 m.21 d.	26:11:2021 -- 18:12:2021

मुद्दा योगिनी दशा

क.स.	दशेचे नाव	दशा काल	पासून-----पर्यंत
1	मंगला (चंद्र) दशा	0 y.0 m.10 d.	18:12:2020 -- 28:12:2020
2	पिंगला (सूर्य) दशा	0 y.0 m.20 d.	28:12:2020 -- 17:01:2021
3	धन्या (गुरु) दशा	0 y.1 m.0 d.	17:01:2021 -- 16:02:2021
4	भ्रामरी (मंगळ) दशा	0 y.1 m.10 d.	16:02:2021 -- 29:03:2021
5	भद्रीका (बुध) दशा	0 y.1 m.20 d.	29:03:2021 -- 19:05:2021
6	उल्का (शनि) दशा	0 y.2 m.0 d.	19:05:2021 -- 19:07:2021
7	सिद्धा (शुक्र) दशा	0 y.2 m.10 d.	19:07:2021 -- 28:09:2021
8	संकटा (राहु) दशा	0 y.2 m.20 d.	28:09:2021 -- 18:12:2021

मुद्दा षोडशोत्तरी दशा

क.स.	दशेचे नाव	दशा काल	पासून-----पर्यंत
1	मंगळ	0 y.1 m.7 d.	18:12:2020 -- 24:01:2021
2	गुरु	0 y.1 m.10 d.	24:01:2021 -- 06:03:2021
3	रवि	0 y.1 m.4 d.	06:03:2021 -- 10:04:2021
4	मंगळ	0 y.1 m.7 d.	10:04:2021 -- 18:05:2021
5	गुरु	0 y.1 m.10 d.	18:05:2021 -- 28:06:2021
6	शनि	0 y.1 m.13 d.	28:06:2021 -- 11:08:2021
7	केतु	0 y.1 m.17 d.	11:08:2021 -- 27:09:2021
8	चंद्र	0 y.1 m.20 d.	27:09:2021 -- 16:11:2021

आपल्या कुंडलीत मुद्दा षोडशोत्तरी दशा लागू होत नाही.

जेमिनी चर दशा - वर्षफल

क.स.	दशेचे नाव	दशा काल	पासून-----पर्यंत
1	तूला दशा	0 y.0 m.4 d.	18:12:2020 -- 21:12:2020
2	वृश्चिक दशा	0 y.0 m.15 d.	21:12:2020 -- 05:01:2021
3	धनु दशा	0 y.0 m.4 d.	05:01:2021 -- 09:01:2021
4	मकर दशा	0 y.1 m.15 d.	09:01:2021 -- 23:02:2021
5	कुंभ दशा	0 y.1 m.11 d.	23:02:2021 -- 06:04:2021
6	मीन दशा	0 y.1 m.7 d.	06:04:2021 -- 13:05:2021
7	मेष दशा	0 y.1 m.11 d.	13:05:2021 -- 24:06:2021
8	वृषभ दशा	0 y.1 m.7 d.	24:06:2021 -- 31:07:2021
9	मिथुन दशा	0 y.1 m.7 d.	31:07:2021 -- 07:09:2021
10	कर्क दशा	0 y.1 m.7 d.	07:09:2021 -- 15:10:2021
11	सिंह दशा	0 y.1 m.7 d.	15:10:2021 -- 14:11:2021
12	कन्या दशा	0 y.1 m.3 d.	14:11:2021 -- 18:12:2021

पत्ययनी दशेनुसार वार्षिक भविष्यफळ

बुध दशा

(18:12:2020 To 31:12:2020)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत बुध नीचस्थ, ग्रासित किंवा अस्त असल्यामुळे कलंकीत आहे. ही एक प्रतिकूल युती आहे. बुधाची दशा आपल्यासाठी उत्तम राहणार नाही. आपल्याला सर्व बाबतीतसावधान राहिले पाहिजे व आपल्या तब्येतीची काळजी घ्यायला हवी. आपण कफ किंवा वात विकाराने ग्रस्त होताल. एखाद्या महत्त्वाच्या कामाची किंवा लांबच्या प्रवासाची सुरुवात करणे फलदायी ठरणार नाही. आपल्या कार्यालयातील स्थितीही काहीशी समस्यापूर्वक असेल व आपले आपल्या सहकार्यांबरोबर वाद-विवाद व गैरसमज होऊ शकतील.

रवि दशा

(31:12:2020 To 16:01:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत सूर्य तुंगस्थ, स्वतःच्या राशीत, ग्रासित किंवा नीच नसल्याने ही एक उदासिन युती निर्माण होईल. सूर्याची दशा साधारण राहिल व कोणतीही महत्त्वपूर्ण घटना घडणार नाही. आपल्या कार्यालयातील स्थिती काहीशी खराब असेल व आपल्या वरिष्ठ किंवा सहका-यांबरोबर झालेल्या गैरसमजांमुळे किचकट परिस्थिती निर्माण होईल.

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत सूर्य एका उपचय भावात (3-या/6व्या/10व्या/11व्या) स्थित आहे. हा नीच किंवा राहुच्या नजीक नसल्याने एक अनुकूल युती आहे. सूर्याची दशा आपल्यासाठी लाभदायक ठरेल. आपल्या सर्व प्रयत्नांना फळ मिळेल व यावर्षी एखादी विशेष प्राप्ती होईल. वरिष्ठ सरकारी अधिका-यांकडून आपल्याला लाभ व समर्थन प्राप्त होईल.

लब्ध दशा

(16:01:2021 To 25:02:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत लग्नेश तुंगस्थ किंवा स्वतःच्या राशीत नसून नीचही नाही तसेच हा वक्री, अस्त किंवा ग्रासितही नाही. ही एक उदासिन युती आहे त्यामुळे लग्न दशा साधारणअसेल व कोणतीही महत्त्वाची घटना घडणार नाहीत. आपल्या कार्यालयातील स्थिती खराब असेल. सामान्य लोकांकडून आपल्याला उचित सन्मान मिळेल परंतु काही वरिष्ठ अधिका-यांकडून आपल्याला दाबून टाकण्याचा प्रयत्न केला जाईल व आपल्याला मिळणारे श्रेय दुस-याचे होईल. तसेच आपल्या छोट्या चुकांसाठीही आपल्याला दोषी ठरविण्यात येईल.

गुरु दशा

(25:02:2021 To 28:02:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत गुरु नीचस्थ असून हा ग्रासित किंवा अस्त असल्याने कलंकीत आहे. ही एक प्रतिकूल युती आहे. आपल्याला अतिशय सावधान व सतर्क राहिले पाहिजे व आपल्या प्रकृतीची काळजी घ्यायला हवी. आपल्या परिवारातील काही व्यक्ती विशेषतः आपली मुले कफ विकाराने ग्रस्त असतील. काही अर्थिक अडचणींमुळे दिलेली वचने पूर्ण करण्यास आपल्याला समस्यांचा सामना करावा लागेल. नजीकच्या काळात एखाद्या महत्त्वाच्या कामाची सुरुवात किंवा

दुरच्या प्रवासाची सुरुवात करणे फलदायी ठरणार नाही.

शनि दशा

(28:02:2021 To 06:03:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत शनी तुंगस्थ किंवा स्वतःच्या राशीत आहे परंतु हा ग्रासित किंवा अस्त असल्यामुळे कलंकीत आहे. शनीच्या दशेदरम्यान आपण अनेक बाबतीत भाग्यशाली रहाताल. आपल्या काही विदेशी ठिकाणांहून लाभ व समर्थन प्राप्त करताल. आपण स्तरीय लोकांकडून मित्रता प्राप्त करताल व आपल्या शत्रुंना पूर्णपणे पराभूत करताल. आपल्या उत्पन्नात वाढ होईल. त्याबरोबरच आपण संतुष्ट असाल. त्याबरोबरच आपल्याला सावधान राहीले पाहिजे. काही छोट्या अपघातापासून किंवा काही वात विकारांपासून आपल्याला धोका संभवतो.

शुक्र दशा

(06:03:2021 To 10:04:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत शुक्र तुंगस्थ किंवा स्वतःच्या राशीत नीचस्थ नसून हा ग्रासित किंवा अस्त नाही. ही एक उदासिन युती आहे. शुक्राची दशा साधारण राहिल व कोणतीही महत्त्वपूर्ण घटना घडणार नाही. आपले दैनंदिन व्यवहार सुरळीत चालतील. आपल्या व्यवसायातील घटना सहजपार पडतील. आपण आपल्या मित्र व सहका-यांबरोबर काही मोकळा वेळ घालवताल. आपले कौटुंबिक जीवन शांत व सुखी असेल.

चंद्र दशा

(10:04:2021 To 22:06:2021)

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत चंद्र तुंगस्थ, स्वतःच्या राशीत, ग्रासित किंवा नीच नसल्याने ही एक उदासिन युती निर्माण होईल. चंद्राची दशा साधारण राहिल व कोणतीही महत्त्वपूर्ण घटना घडणार नाही. आपल्या घरात काही समस्या निर्माण होतील व आपल्या कुटुंबातील सदस्यांच्या विचित्रव्यवहारांमुळे आपण चिडचिडे व अप्रसन्न होताल.

मंगळ दशा

(22:06:2021 To 18:12:2021)

या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत मंगळ तुंगस्थ किंवा स्वतःच्या राशीत नीचस्थ आहे तसेच हा ग्रासित किंवा अस्त नाही. ही एक उदासिन युती असेल. मंगळदशा साधारण राहिल व कोणतीही महत्त्वपूर्ण घटना घडणार नाही. आपण आपल्या कार्यालयात काही समस्यांचा सामना करताल. तसेच आपल्या सख्ये-चुलत भावंड किंवा शेजा-यांबरोबर संपत्तीच्या वादात अडकू शकता.

न्या वर्षाच्या आपल्या वर्षफल कुंडलीत मंगळ एका उपचय भावात (3-या / 6व्या / 10व्या / 11व्या) स्थित आहे. हा नीच किंवा राहुच्या नजीक नसल्याने एक अनुकूल युती आहे. मंगळदशा आपल्यासाठी लाभदायक ठरेल. आपल्या सर्व प्रयत्नांना फळ मिळेल व यावर्षी एखादी विशेष प्राप्ती होईल. वरिष्ठ सरकारी अधिका-यांकडून आपल्याला लाभ व समर्थन प्राप्त होईल.

गोचरीची दिनांक- 03:08:2021 गोचरीची वेळ- 04:44:37PM गोचरीचे स्थळ- Hyderabad (INDIA)

ग्रह स्थिती

Sample						Transit					
ग्रह	राशी	अंश	छत्र(झ)	ग्रह	राशी	अंश	न चरण
लब्ध	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	--	--	लब्ध	धनु	16:39:09	पूर्वा. (१)	--	--
रवि	धनु	02:15:49	मूल (१)	मिग	ग्र	रवि	कर्क	17:11:12	आश्ल (१)	मिग	शुक्र सो
चंद्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	स्न	--	चंद्र	वृषभ	18:53:08	रोहि (३)	मूत्रि	पाग्र सो
मंगळ	मेष	04:42:18	अश्वि (२)	मूत्रि	--	मंगळ	सिंह	08:44:36	मघा (३)	मिग	शुक्र सो
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्ये (१)	स्न	--	बुध	कर्क	19:16:41	आश्ल (१)	स्न	ज्व
गुरू	मकर	17:56:39	श्रव (३)	सग	शुक्र सो	गुरू व	कुंभ	05:10:24	धनि (४)	सग	--
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रव (१)	मिग	शुक्र सो	शुक्र	सिंह	20:44:19	पू.फा. (३)	स्न	पाग्र सो
शनि व	मिथुन	08:12:34	आद्र (१)	सग	ग्र	शनि व	मकर	15:56:24	श्रव (२)	स्न	--
राहु व	धनु	05:06:53	मूल (२)	मिग	पाग्र सो	राहु व	वृषभ	14:45:07	रोहि (२)	मिग	पाग्र सो
केतू व	मिथुन	05:06:53	मृग (४)	सग	पाग्र सो	केतू व	वृश्चिक	14:45:07	अनु (४)	मिग	--
इंद्र	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	--	--	इंद्र	मेष	20:31:29	भर (३)	--	--
वरुण	वृश्चिक	14:20:41	अनु (४)	--	शुक्र सो	वरुण व	कुंभ	28:39:41	पू.भा. (३)	--	शुक्र सो
रुद्र	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	--	पाग्र सो	रुद्र व	मकर	01:00:53	उ.षा. (२)	--	पाग्र सो

Sample

लब्ध कुंडली

	मंग 04:42		शनि 08:12
			केतु 05:06
गुरू 17:56			
शुक्र 13:00			
राहु 05:06		इंद्र 03:20	चंद्र 16:00
सूर्य 02:15	वरु 14:20		रुद्र 13:11
	बुध 19:51		

नवमांश कुंडली

	सूर्य शुक्र	चंद्र राहु	गुरू मंग
बुध शनि	केतु		

चंद्र कुंडली

	मंग		शनि केतु
गुरू शुक्र			
सूर्य राहु	बुध		चंद्र

नवमांश कुंडली

		शनि राहु	चंद्र मंग
सूर्य बुध	गुरू केतु	शुक्र	

चंद्र कुंडली

		चंद्र राहु	
गुरू			सूर्य बुध
शनि			शुक्र मंग
	केतु		

Transit

लब्ध (जन्म) कुंडली

	इंद्र 20:31	चंद्र 18:53	
		राहु 14:45	
वरु 28:39			सूर्य 17:11
शनि रुद्र 01:00			बुध 19:16
			मंग 08:44
			शुक्र 20:44
	केतु 14:45		

गोचर शनि
(शनि साडेसाती)

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।

(गोचरीने जेव्हा शनि ग'ह जन्म चंद्रापासून बाराव्या, पहिल्या आणि दूसऱ्या भावावरून भ'मण करतो, त्या (सुमारे साडे सात वर्षांपर्यंतच्या) कालावधीलाच साडेसाती या नावाने ओळखले जाते.)

शनि साडेसातीचे प्रथम चक्र

साडेसाती चक्र	राशीमध्ये गोचर	आरंभ काळ	समाप्ति काळ	भ्रमण काळ (व-म-दि)	शनि मूर्ती
प्रथम अडिचकी (जन्म चंद्रापासून बारावे)	सिंह	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	तांबे
द्वितीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून पहिले)	सिंह	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
तृतीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून दूसरे)	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	सुवर्ण
	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
कंटक शनि (जन्म चंद्रापासून चवथे)	तुळा	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	चांदी
आठवा शनि (जन्म चंद्रापासून आठवे)	तुळा	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	तांबे
	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	तांबे

शनि साडेसातीचे द्वितीय चक्र

साडेसाती चक्र	राशीमध्ये गोचर	आरंभ काळ	समाप्ति काळ	भ्रमण काळ (व-म-दि)	शनि मूर्ती
प्रथम अडिचकी (जन्म चंद्रापासून बारावे)	सिंह	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	तांबे
द्वितीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून पहिले)	सिंह	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
तृतीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून दूसरे)	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	सुवर्ण
	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
कंटक शनि (जन्म चंद्रापासून चवथे)	तुळा	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	चांदी
आठवा शनि (जन्म चंद्रापासून आठवे)	तुळा	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	तांबे
	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	तांबे
	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	

शनि साडेसातीचे तृतीय चक्र

साडेसाती चक्र	राशीमध्ये गोचर	आरंभ काळ	समाप्ति काळ	भ्रमण काळ (व-म-दि)	शनि मूर्ती
प्रथम अडिचकी (जन्म चंद्रापासून बारावे)	सिंह	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	तांबे
द्वितीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून पहिले)	सिंह	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
तृतीय अडिचकी (जन्म चंद्रापासून दूसरे)	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	सुवर्ण
	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
कंटक शनि (जन्म चंद्रापासून चवथे)	तुळा	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	चांदी
आठवा शनि (जन्म चंद्रापासून आठवे)	तुळा	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	तांबे
	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	तांबे

ग्रहाच्या गोचरानुसार भविष्यफळ

गोचरमध्ये रवि चंद्र राशिच्या एकादश भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अतिशय शुभ असा गोचर मानला जातो. आपली आपल्या मित्र परिवारांत तसेच सहका-यांमध्ये प्रतिष्ठा उंचावेल. आपल्याला आपल्या उच्च पदस्थ मित्रांचा प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षरित्या सहकार्य लाभेल. आपल्यावर अधिक जिम्मीदारीची कामे सोपविली जातील. आपल्याला उत्तम व निरोगी स्वास्थ्य लाभेल. हा गोचर आपल्याआजोळच्या नातेवाईकांसाठी फलदायी ठरेल.

श्रावण महिन्या दरम्यान रवि या गोचरमध्ये असेल. (16-17 जुलै ते 16-17 ऑगस्ट)

गोचरमध्ये चंद्र आपल्या स्वतःच्या राशीच्या नवव्या भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अशुभ असा गोचर असल्यामुळे आपण अस्वस्थ रहाल. दूरच्या व्यक्तीकडून आलेल्या अशुभ बातमीमुळे आपण परेशान होताल. आपल्या वरिष्ठ अधिका-यांकडून आपल्यामधील उणीवा अधोरेखित केल्या जातील त्यामुळे आपण दुःखी होऊ शकता. आपले वडीलही आपले प्रस्ताव नाकारतील.

गोचरमध्ये मंगळ चंद्र राशीच्या दशम भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अशुभ असा गोचर असल्यामुळे आपल्याला आपल्या तब्येतीची काळजी घ्यायला हवी व खर्चही अटोक्यात ठेवलाला हवा. आपल्या मुलांच्या प्रकृतीच्या समस्यांमुळे आपण चिंतीत होऊ शकता. आपली अर्थिक स्थिती अटीतटीची राहिल. गोचरमधील अन्य ग्रह अनिष्ट असल्यास आपल्याला विनाकारण दूरचे प्रवास करावे लागतील ज्याच्यात आपल्याला काहीही लाभ नसेल.

गोचरमध्ये बुध चंद्र राशीच्या एकादश भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अतिशय शुभ असा गोचर आपल्यावर बुधाची कृपाःष्टी असेल. आपली उत्तरोत्तर प्रगती चालू राहिल. आपल्या उच्च पदस्थ मित्रांकडून आपल्याला सहकार्य व लाभ होईल तसेच आपल्याला आपल्या प्रगतीच्या नव्या दिशा मिळतील. आपण आपल्या संपत्तीची योग्यटीकाणी गुंतवणूक कराल. समाजात आपली प्रतिष्ठा व लोकप्रियता उंचावेल.

गोचरमध्ये गुरु चंद्र राशीच्या सहाव्या भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अशुभ असा गोचर आपल्याला या काळात अतिशय सावधानता बाळगायला हवी. आपल्याला आपल्या प्रकृतीची काळजी घ्यायला हवीकारण आपण आजारी पडू शकता. आपल्याला आपल्या शत्रुंपासून त्रास होईल तसेच आपल्या आजोळच्या नातलगांकडून आपल्याला वाईट वर्तवणुक मिळेल. आपला कर्मचारी वर्ग किंवा नोकर आपल्याकडील नोकरी सोडून जातील ज्यामुळे आपल्याला त्रास सहन करावा लागेल. तसेच याकाळात आपली नोकरी किंवा व्यापारातील उन्नती चालूच राहिल.

गोचरमध्ये शुक्र चंद्र राशीच्या बाराव्या भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा अतिशय शुभ असा गोचर असल्याने आपल्याला सगळी कडून आनंद मिळेल. आपण आपल्या उच्च राहणीमानासाठी खर्च करताल. आपण प्रक्षणीय स्थळांना भेटी देताल व समवयस्क लोकांबरोबर आनंदाचे काही क्षण घालवताल. आपल्या मुलांची प्रकृती उत्तम असेल व आपल्याला आपल्या जीवनसाथीकडून सुख मिळेल.

गोचरमध्ये शनी आपल्या चंद्र राशीच्या पंचम भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा एक अशुभ असा गोचर आहे आपल्याला अनेक गोष्टींमध्ये समस्या व अडथळ्यांना तोंड द्यावे लागेल. आपला जीवनसाथी काही वाईट व्यवहार करेल व आपल्या मुलांचे आरोग्य आपल्यासाठी चिंताजनक ठरेल. आपण

एखाद्या शैक्षणिक किंवा बौद्धिक कार्यात असाल तर आपली प्रगती खुंटेल. आपले उत्पन्न व अन्य स्रोतांतून होणारा लाभही कमी होईल. भविष्यातील मोठ्या हानीपासून वाचण्यासाठी सध्या गुंतवणूक करण्याचे टाळा.

गोचरमध्ये राहु चंद्र राशीच्या नवव्या भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा सर्वात अशुभ असा गोचर असल्यामुळे आपल्याला सावधानता बाळगायला हवी. काही दूरच्या व्यक्तींकडून आपल्यासाठी असलेल्या आपेक्षा नाहीश्या होतील. याबरोबरच आपण निराशेत सापडताल व काही अनिश्चिततेमुळे आपल्या आशा धुसर होतील. गोचरमधील अन्य ग्रह अनिष्ट असल्यास आपल्याला नुकसान उचलावे लागेल. तसेच आपण एखादी अनर्थ घटना, राजकीय किंवा सामाजिक अशांती व सरकारी डावपेचांचे बळे पडताल.

गोचरमध्ये केतू चंद्र राशीच्या तृतीय भावातून मार्गस्थ होत आहे. हा एक शुभ असा गोचर आहे. आपले जीवन सुखी व आनंददायी असेल. आपण अतिशय साहसी, सक्रीय आणि उत्साही असताल. आपण एखादे नवीन कार्य हाती घेताल व ते सफलतापूर्वक तडीस नेताल. आपल्या व्यवसायासंदर्भात आपल्याला छोटे-छोटे प्रवास करावे लागतील व आपल्या अनेक नव्या लोकांशी गाठीघटी होतील ज्यांचा भविष्यात आपल्याला लाभ होईल. जर आपण कंत्राटदार किंवा व्यवसायाने लवाद असाल तर आपल्याला अनेक नव्या संधी प्राप्त होतील.